ISSN 2349-6614

अगस्त 2022

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्वतंत्र भारत में जन्मी और पहली आदिवासी

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 4, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

THE SUCCESS GROUP OF INSTITUTIONS

"SUCCESS CAMPUS" Rudraksh Complex, University Road, Udaipur

SCHOOL'S	MIRANDA SR. SEC. SCHOOL	Hiran Magri Sec.5 Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2464056,9414546333
	THE PRAYAS PUBLIC SCHOOL	Tekri Udaipur (Rajasthan) Mob: 9462514121
	SWAMI VIVEKANAND Sr. Sec. School	Mali Colony, New Anand Vihar, Udaipur (Rajasthan), Mob: 9462514102
	ROYAL ACADEMY Secondary School	Opp North Sunderwas, Pratap Nagar, Udaipur, Mob: 9116091101
COACHING	THE SUCCESS POINT	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur, Mob: 9928522906
COLLEGE	THE SUCCESS COLLEGE	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88
VOCATIONAL	THE SUCCESS POINT Institue Of Vocational Studies	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88

स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व
गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं

अगस्त 2022 वर्ष: 20, अंक: 4

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डागी
कुलदीप इन्दौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

उलटफेर

महंगा पड़ा उद्धव को हिन्दुत्व से किनारा
08

परम्परा

पावन रिश्ते को समर्पित रक्षाबंधन
18

वंदन
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता
32

खेल-खिलाड़ी

महिला क्रिकेट में मिताली का योगदान
34

प्रकृति

कहीं विलुप्त न हो जाए देवपुष्प...
38

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोगाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर में मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

अरिहन्त वाटिका

45,000 वर्ग फीट का हरा-भरा लॉन, आकर्षक विद्युत सज्जा

पार्किंग की
पूरी व्यवस्था

मीठे पानी
की सुविधा

12 कमरे व
2 हॉल उपलब्ध

मो.: 9414902400, 9414166467

सेन्ट ग्रिगोरियस स्कूल के पीछे, शनि महाराज मन्दिर के सामने, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर

PRINCE PIPING SYSTEMS

Sintex SINCE 1975 WATER STORAGE TANKS

TATA PIPES FLOW OF LIFE

PRAKASH SURYA STEEL TUBES & PIPES

Parryware always in fashion

ZERO DEFECT

BUSINESS ENQUIRY SOLICITED

Distributor : BHARTI SANITATION

555/40, Bharti Bhawan, Near Samsung Service Centre, Police Line, Tekri Road, Udaipur (Raj.)

Phone: 0294-2483957, Mobile: +91-9414156831, +91-9829049948, E-mail: bhartisanitation@yahoo.in

आदिवासी आबादी की प्रतिनिधि आवाज़

द्रोपदी मुर्मू भले दूसरी महिला राष्ट्रपति हों, लेकिन वे पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति हैं। झोपड़ी में पैदा होकर राष्ट्रपति भवन पहुंचने तक का उनका सफ़र संघर्षों से भरा हुआ है। आर्थिक अभाव के कारण महज़ स्नातक तक शिक्षा हासिल करने वाली द्रौपदी मुर्मू ने शिक्षा को ही अपना कॅरियर बनाया ताकि वह गरीब परिवार के बच्चों और बच्चियों को शिक्षा की उस मंजिल तक ले जाएं, जहां तक वे जाना चाहते हैं। उन्होंने ओडिशा सरकार में क्लर्क के रूप में भी सेवाएं दी। राजनीति के लिए उन्होंने भाजपा के मंच को चुना और उसी की होकर रह गई। वर्ष 1997 में पार्षद का चुनाव लड़कर राजनीति में प्रवेश किया। साल 2000 में पहली बार विधायक और फिर भाजपा- बीजेडी सरकार में दो बार मंत्री रही। वर्ष 2015 में झारखंड की पहली महिला राज्यपाल बनीं। देश के चौथे राष्ट्रपति वी.वी.गिरी भी ओडिशा में पैदा हुए थे, लेकिन मूलत: वे आंध्रप्रदेश के थे। जवानी में ही विधवा होने के अलावा दो बेटों की मौत से भी मुर्मू नहीं टूटी, इस दौरान इकलौती बेटी इतिश्री सहित पूरे परिवार को हौसला देती रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इनके व्यक्तित्व- कर्तव्य से काफ़ी प्रभावित हैं। वे पिछले चुनाव में ही देश को पहली अनुसूचित जाति वर्ग से महिला राष्ट्रपति देना चाहते थे। लेकिन तब अनुसूचित जाति वर्ग से जुड़े निवर्तमान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के नाम पर मुहर लगी। दरअसल भाजपा का आदिवासियों में प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है। देश में इस बिरादरी की आबादी सवा आठ प्रतिशत है। कुछ महिनों बाद गुजरात में विधानसभा चुनाव होने हैं, जहां यह बिरादरी संख्या की दृष्टि से एक समृद्ध वोट बैंक है। इस बिरादरी का प्रभाव पश्चिम बंगाल, झारखंड , आंध्रप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक और ओडिशा में भी अच्छा खासा है। यही वजह है कि मुर्मू के प्रस्तावक के रूप में इन राज्यों के आदिवासी एनडीए समर्थक विधायकों को मौका दिया गया। इससे पहले देश को अब तक सभी वर्गों से राष्ट्रपति मिल चुका है। दलित बिरादरी के.आर.नारायणन के बाद रामनाथ कोविंद देश के प्रथम नागरिक बन चुके हैं। महिला वर्ग से प्रतिभा पाटील को मौका मिल चुका है। मुस्लिम बिरादरी से डॉ. जाकिर हुसैन, फखरूद्धीन अली अहमद और ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्रपति रहे हैं। अब तक अनुसूचित जनजाति वर्ग से किसी महिला को प्रथम नागरिक बनने का मौका नहीं मिला था। मुर्मू ने वह शून्य भर दिया है।

द्रोपदी मुर्मू का राष्ट्रपति पद पर आसीन होना भाजपा को गुजरात में भारी बहुमत से चुनाव जीतने में कितनी मदद करेगा, यह तो चुनाव के परिणाम ही बताएंगे। लेकिन भाजपा ने इस सर्वोच्च संवैधानिक पद पर मुर्मू को जीताकर गुजरात के बड़ी संख्या में आदिवासी मतदाताओं को प्रभावित जरूर किया है। गुजरात में भाजपा को 2017 के चुनाव में झटका लगा था, उसने जीत जरूर हासिल की थी लेकिन लम्बे समय बाद कांग्रेस से उसे वहां कड़ी टक्कर का सामना भी करना पड़ा था। गुजरात की कुल आबादी में आदिवासियों की करीब 14.8 फ़ीसदी हिस्सेदारी है और 27 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। भगवादल 2017 में आधी सीटों पर भी कमल नहीं खिला पाया था। माना जा रहा है मुर्मू के सहारे भाजपा इस बार अधिकतर सीटों पर कमल खिलने की उम्मीद कर रही है। परम्परागत रूप से गुजरात में आदिवासी वोटरों पर कांग्रेस की भी अच्छी पकड़ रही है, लेकिन पिछले दो दशकों में भाजपा ने उत्तर में अम्बाजी से दक्षिण में अम्बेर गांव तक फैले आदिवासी बेल्ट में सेंध लगा दी थी, लेकिन 2017 से ही कांग्रेस एक बार फिर यहां अपने खोए जनाधार को पाने के लिए पूरा जोर लगा रही है। आम आदमी पार्टी की नज़र भी इस समुदाय पर गड़ी हुई है। कांग्रेस ने राजस्थान से रघु शर्मा को मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिलवा कर गुजरात में चुनाव प्रभारी बनाया है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत वहां हो आए हैं। कांग्रेस को पूरी उम्मीद है कि पूर्व की ही तरह गहलोत के मार्गदर्शन में वह भाजपा को कड़ी टक्कर देगी।

निवर्तमान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की बात करें तो उनके पूरे कार्यकाल में कभी ऐसा मौका नहीं आया। जब उनके किसी फैसले पर कोई ऊंगली उठी हो। द्रोपदी मुर्मू का भी अब तक का राजनैतिक सफर बेदाग रहा है। कोई संदेह नहीं कि वे कोविंद व उनके परवर्ती राष्ट्रपतियों की निष्पक्ष परम्परा को आगे बढ़ाते हुए विश्व में भारतीय लोकतंत्र को गरिमा और गौरव प्रदान करेंगी।

विपक्ष के पराजित उम्मीदवार यशवंत सिन्हा के लिए यह चुनाव एक तरह से वर्षों बाद राजनीति की मुख्य धारा में वापसी माना जा सकता है। अटल युग के बाद से ही सिन्हा अपनी भूमिका तलाश रहे थे। उनकी प्रशासनिक, सांविधानिक योग्यता की केन्द्रीय मंत्री रहते सब तरफ तारीफ हुई लेकिन विपक्ष के राष्ट्रपति प्रत्याशी के रूप में उनके नाम की घोषणा तक विपक्ष में जो एकता नज़र आई, वह द्रोपद्री मुर्मू का नाम सामने आने के बाद लगातार बिखरती रही। हर लड़ाई के अपने समीकरण होते हैं, योद्धा बदलते हैं तो समीकरण भी बदल जाते हैं। भाजपा से 4 साल पहले सम्बंध तोड़ने वाले सिन्हा की हार तय तो थी ही लेकिन मुर्मू के मैदान में आने से उनके समर्थक तेजी से छिटकते रहे और फैसला आशा से भी अधिक मतों से मुर्मू के पक्ष में हुआ। उम्मीद है कि पराजय के बावजूद सिन्हा अपने प्रशासनिक अनुभव और व्यवहार कुशलता से राजनीति के अपने पुराने सफे पर नई इबारत लिखना शुरू कर सकते हैं। नई राष्ट्रपति के सामने आज देश के कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन्हें ज्यादा तवज्जो की दरकार है। देश अनेक स्तरों पर बदलावों के दौर में है। आम समाज और आम चिन्तन में परिवर्तन आ रहा है। देश ने जब नई सदी में कदम रखा था तब राष्ट्रपति के रूप में एक योग्यतम नेतृत्वकर्ता के.आर.नारायण विराजमान थे, जो प्रथम दलित राष्ट्रपति थे और उनके बाद ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने तेज आर्थिक विकास के दौर में देश और युवाओं को बहुत प्रेरित किया। लोग इन्हें आज भी याद करते हैं। अत: देश के 15वें राष्ट्रपति के रूप में द्रोपदी जी से अतिरिक्त आशा रहेगी। वंचित आबादी, युवाओं, महिलाओं को सर्वाधिक अपेक्षा है। शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता बढ़ाने की दिशा में सबको प्रेरित करना है। समग्र समाज की एकजुटता और सद्भाव बढ़ाने में राज्य सरकारों को प्रोत्साहित करना है। सुलझे हुए विचार व मार्गदर्शन से विकास की धारा को तेज गति देनी है।

सर्वोच्च पद पर पहली बार आदिवासी महिला

द्रोपदी मुर्मू नई राष्ट्रपति

एनडीए की मुर्मू ने 2,96,626 वोट वैल्यू के अंतर से विपक्ष के सिन्हा को हराया

नंद किशोर

भाजपा (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) की प्रत्याशी द्रोपदी मुर्मू ने देश की प्रथम नागरिक व 15वें राष्ट्रपति के रूप में 25 जुलाई को राष्ट्रपति भवन में प्रवेश किया। उन्हे एक भव्य समारोह में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एन.वी.रमना ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इससे पूर्व संसद के केन्द्रीय कक्ष में निवृतमान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को भावभीनी विदाई दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने उन्हें स्मृति चिन्ह व सभी सांसदों के सिग्नेचर वाली बुक भेंट की। रामनाथ कोविंद का राष्ट्रपति के रूप में कार्यकाल 24 जुलाई की मध्यरात्रि को समाप्त हुआ। प्रधानमंत्री की ओर से 22 जुलाई को दिल्ली के होटल अशोका में उन्हें विदाई भोज दिया गया। कोविंद ने द्रोपदी मुर्मू को राष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी। शपथ समारोह में निवर्तमान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति वैंकया नायडू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, एन.सी.पी अध्यक्ष शरद पंवार, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे-पी नड्डा ,उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एके शिन्दे, बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, कांग्रेस व अन्य विपक्षी नेताओं सहित विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री व राजनैतिक दलों के वरिष्ठ नेता तथा निर्वाचित राष्ट्रपति की पुत्री इतिश्री व परिवार के लोग भी मौजूद थे। राष्ट्रपति चुनाव में अप्रत्याशित रूप से आदिवासी चेहरे पर दांव खेलकर विपक्षी एकता को ध्वस्त करने की भाजपा की रणनीति सफल रही। विपक्ष के 17 सांसदों और 126 विधायकों ने राजग प्रत्याक्षी मुर्मू को जिताने के लिए पार्टी लाइन से परे जाकर क्रॉस वोटिंग की। यहां तक कि जिस केरल में भाजपा का एक भी विधायक नहीं है, वहां भी मुर्मू को 1 वोट मिला। हालांकि विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा का पलड़ा विपक्ष शासित 7 राज्यों में भारी रहा बावजूद इसके द्रोपदी को कुल वोट का 64.03 प्रतिशत हिस्सा मिला। यशवंत सिन्हा को 35.97 प्रतिशत वोट ही मिल पाए। मुर्मू को हर राज्य से वोट मिले, जबकि सिन्हा का आंध्रप्रदेश, नगालैण्ड और सिक्किम में खाता ही नहीं खुला। लगभग हर राज्य में विपक्ष की दीवार टूट गई। असम में विपक्ष को सर्वाधिक झटका लगा, राज्य के 126 विधायकों में से 124 ने मतदान किया। यहां एनडीए के विधायकों की संख्या 79 हैं, लेकिन मुर्मू के पक्ष में 104 वोट पड़े। गोवा में एनडीए के पास 25 विधायक हैं, लेकिन उसके पक्ष में 28 वोट पड़े।

देश की राजनीति में लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होने के संदर्भ में सबसे ज्यादा इस पक्ष पर विचार किया जाता रहा है कि सत्ता की मुख्य धारा में समाज के अलग-अलग तत्वों को कितना और किस रूप में

रायरंगपुर से रायसीना हिल्स तक

20 जून, 1958 ओडिशा के मयूरभंज जिले के उपरबेड़ा गांव में जन्म।

1979 भुवनेश्वर के रमादेवी महिला कॉलेज से बीए।

1997 भाजपा से जुड़ी। रायरंगपुर नगर पंचायत की पार्षद चुनी गईं।

2000 व 2004 रायरंगपुर विधानसभा सीट से निर्वाचित।

2000 से 2002 ओडिशा की वाणिज्य, परिवहन मंत्री।

2002 से 2004 ओडिशा की मत्स्य पालन, पशु संसाधन विकास मंत्री।

2002–2009 मयूरभंज में भाजपा जिलाध्यक्ष।

2006–2009 भाजपा के अनुसूचित जाति मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष।

2007 सर्वश्रेष्ठ विधायक के नीलकंठ अवॉर्ड से सम्मानित।

18 मई, 2015 झारखंड की पहली महिला राज्यपाल बनीं।

21 जून, 2022 राष्ट्रपति पद के लिए राजग ने उम्मीदवार बनाया।

21 जुलाई, 2022 पहली महिला आदिवासी राष्ट्रपति निर्वाचित।

प्रतिनिधित्व मिल पाता है। खासतौर पर हाशिये के समुदायों को लेकर राजनीतिक तबका कितना संवेदनशील हो पाता है। इस लिहाज़ से देखें तो राष्ट्रपति पद पर ओडिशा की जनजाति पृष्ठभूमि से आने वाली द्रोपदी मुर्मू का चुनाव जीतना एक अहम घटना है। जिसके तहत यह बताने की कोशिश की गई है कि भाजपा और उसके सहयोगी दल आदिवासी समुदाय को उसका वाजिब प्रतिनिधित्व दिलाने के प्रति और दलों से ज्यादा गंभीर हैं। इससे पहले भी राजग ने अनुसूचित जनजातियों के बीच से राष्ट्रपति के रूप में रामनाथ कोविंद का चेहरा आगे लाने में दूरदर्शी सोच दिखाई थी। 15वें राष्ट्रपति के इस चुनाव में जम्मू-कश्मीर विधानसभा हिस्सा नहीं बन पाई। वर्ष 2019 में राज्य को विभाजित कर दो केन्द्रशासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर व लद्दाख की स्थापना की गई है। इससे विधानसभा का अभी गठन नहीं हुआ है, यह दूसरा मौका है, जब केन्द्रशासित प्रदेश की विधानसभा सर्वोच्च संवैधानिक चुनाव में हिस्सा नहीं बन सकी। इससे पहले भी 1992 के राष्ट्रपति चुनाव में जम्मू-कश्मीर विधानसभा भंग होने के कारण हिस्सा नहीं बन सकी थी। आतंकवाद के कारण वहां 1991 के लोकसभा चुनाव भी नहीं हुए थे तब शंकरदयाल शर्मा राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। हालांकि इस बार जम्मू-कश्मीर के पांचो लोकसभा सदस्यों ने राष्ट्रपति चुनाव में मतदान किया। यूं तो विधानसभा के भंग होने के कारण राष्ट्रपति चुनाव का हिस्सा नहीं होने के कई उदाहरण हैं। 1974 में गुजरात विधानसभा राष्ट्रपति चुनाव का हिस्सा नहीं बनी थी। गुजरात 1974 में नवनिर्माण आंदोलन के केन्द्र में था। चिमनभाई पटेल नीत सरकार को भंग कर दिया गया था। द्रोपदी मुर्मू आदिवासी संथाल समाज से आती हैं। उनका जन्म 20 जून 1958 को ओडिशा के मयूरभंज जिले के आदिवासी उपरबेड़ा गांव में बीरंची नारायण टुंडु के घर हुआ। उनका परिवार बहुत गरीब था, लिहाजा उनका शुरूआती मकसद सिर्फ छोटी सी नौकरी करके परिवार पालना था, उनकी नौकरी लग भी गई, लेकिन ससुराल वालों के कहने पर छोड़नी भी पड़ी। जब उनका मन नहीं लगा तो उन्होंने आसपास के बच्चों को मुफ्त पढ़ाना शुरू किया और यहीं से उनका मन समाज सेवा में रम गया। 1997 में उन्होंने पहली बार रायरंगपुर नगर पंचायत के पार्षद का चुनाव लड़ा और जीती। सन् 2000 में उन्हें विधानसभा चुनाव का टिकट मिला और यह चुनाव भी जीता, इसके बाद वे मंत्री बनी। सन् 2009 में चुनाव हारने के बाद गांव आ गई। इसी बीच बेटे की दुर्घटना में मौत हो गई, जिसके बाद डीप्रेशन में चली गई। जैसे-तैसे वे एक बेटे की मौत के सदमे से बाहर आई ही थीं कि 2013 में दूसरे बेटे की भी हादसे में मौत हो गई। फिर 2014 में उन्होंने पति श्यामाचरण मुर्मू को भी खो दिया। इसके बाद वे पूरी तरह टूट गईं पर हिम्मत जुटाकर खुद को समाज सेवा में बनाए रखा।

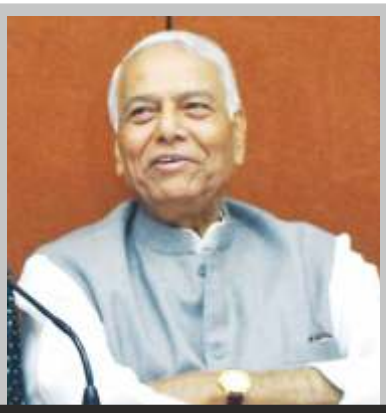

द्रौपदी मुर्मू	यशवंत सिन्हा
कुल इलेक्टोरल वोट	कुल इलेक्टोरल वोट
6,76,803	**3,80,177**
प्रतिशत **64.03%**	प्रतिशत **35.97%**
सांसदों के वोट **540**	सांसदों के वोट **208**
राज्यों के वोट **2284**	राज्यों के वोट **1669**
कुल वोट **2824**	कुल वोट **1877**

भारत ने लिखा इतिहास

भारत ने इतिहास लिखा है। जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, पूर्वी भारत के एक सुदूर हिस्से में पैदा हुई एक आदिवासी समुदाय की बेटी को राष्ट्रपति चुना गया है।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

गैर एनडीए राज्यों में सिन्हा पड़े भारी

राज्य	मुर्मू	सिन्हा
छत्तीसगढ़	21	69
केरल	1	139
पंजाब	8	101
तेलंगाना	3	113
पश्चिम बंगाल	71	216
दिल्ली	8	56
राजस्थान	75	123

भाजपा ने मुस्लिम, दलित और आदिवासी महिला को किया प्रोजेक्ट

भाजपा को केंद्र में तीन बार शासन करने का मौका मिला, लेकिन पार्टी ने अगड़ी जाति के किसी भी शख्स को राष्ट्रपति पद के लिए प्रत्याशी नहीं बनाया। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार ने 2002 में मुस्लिम वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति पद के लिए प्रोजेक्ट किया। वह देश के 11वें राष्ट्रपति बने। 2014 में भाजपा की सत्ता में वापसी हुई। 2017 में राष्ट्रपति चुनाव हुआ। मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में भाजपा ने बिहार के राज्यपाल और दलित समाज से आने वाले रामनाथ कोविंद को राष्ट्रपति प्रोजेक्ट किया। कोविंद 24 जुलाई 2022 तक इस पद पर रहे। भाजपा तीसरी बार 2019 में सत्ता में आई। इस बार भाजपा ने आदिवासी समाज से आने वाली द्रौपदी मुर्मू को प्रोजेक्ट किया, जो कांग्रेस और विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा को वोटों के भारी अन्तर से पराजित कर राष्ट्रपति निर्वाचित हुई हैं।

कांग्रेस शासन में 5 ब्राह्मण, 2 मुस्लिम राष्ट्रपति : केंद्र में जब तक कांग्रेस की सरकार रही, तब तक 5 ब्राह्मण, 2 मुस्लिम और 1-1 कायस्थ, सिख और राजपूत महिला का चुनाव राष्ट्रपति पद के लिए हुआ। आजादी के बाद से लेकर 24 मार्च 1977 तक यानी शुरूआती लगभग तीन दशक के कांग्रेस के शासन में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, जाकिर हुसैन, वीवी गिरी, फखरूद्दीन अली अहमद राष्ट्रपति बने। इसमें कायस्थ, ब्राह्मण और मुस्लिम शामिल रहे। दूसरे टर्म में, 14 जनवरी 1980 से लेकर 2 दिसंबर 1989 तक केंद्र में कांग्रेस की सरकार रही। तब ज्ञानी जैल सिंह और आर. वेंकटरमण को राष्ट्रपति बनाया गया। ज्ञानी जैल सिंह सिख और वेंकटरमण तमिल ब्राह्मण थे। 21 जून 1991 को फिर से कांग्रेस की सत्ता में वापसी हुई। जिसके बाद डॉ. शंकर दयाल शर्मा को राष्ट्रपति बनाया गया। 16 मई 1996 के बाद लगभग 8 साल तक कांग्रेस सत्ता से बाहर रही। 22 मई 2004 को कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूनाइटेड प्रोग्रेसिव अलायंस की सत्ता में वापसी हुई। इस दौरान प्रतिभा पाटिल और प्रणब मुखर्जी राष्ट्रपति बनाए गए। प्रतिभा पाटिल राजपूत समाज से जबकि प्रणब मुखर्जी बंगाली ब्राह्मण थे।

महंगा पड़ा उद्धव को हिन्दुत्व से किनारा

बागियों ने छीनी सत्ता की चाबी भाजपा ने साधे निशाने

सनत जोशी

देश की राजनीति में पार्टी से बगावत करने और नए समीकरण बिठाकर सत्ता हासिल करने का महाराष्ट्र में पिछले दिनों जिस सियासी नाटक का पटाक्षेप हुआ, वह कोई नया उदाहरण नहीं है, लेकिन मौजूदा परिदृश्य में इस घटना ने थोड़ा हैरान इसलिए किया कि राज्य में पिछले करीब ढाई साल से महाविकास अघाड़ी गठबंधन के तहत शिवसेना के नेतृत्व में सरकार बिना किसी बाधा के सहजता से चल रही थी। हालांकि शुरू में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस के साथ शिवसेना के समझौते को लेकर यह आशंका जाहिर की गई थी कि यह बेमेल साथ कितने दिन चलेगा। मगर इन पार्टियों के बीच तालमेल कायम रहा। एकनाथ शिंदे ने शिवसेना के दो तिहाई से ज्यादा विधायकों के साथ इसी मुद्दे को मुख्य सवाल बना कर बगावत का शंख फूंक दिया और जनता के दरबार में इस गठबंधन को अस्वाभाविक करार दे दिया। खुद को हिन्दुत्व और शिवसेना की असली विरासत का दावेदार बताकर एकनाथ शिंदे ने सत्ता की चाबी हासिल करने की राजनीतिक जंग तो जीत ली है, मगर भाजपा के सहयोग से बनी उनकी सरकार के हर कदम पर भी देश की नजर रहेगी। यों इस तालमेल को लेकर आम आकलन यही है कि चूंकि भाजपा और एकनाथ शिंदे का समूह विचारधारा की जमीन पर घोषित तौर पर एक साथ है, इसलिए इस गठबंधन को विधानसभा का बाकी वक्त पूरा कर लेने में कोई बाधा शायद नहीं आए।

महाराष्ट्र में कई दिनों की जद्दोजहद और दांवपेच के बाद 30 जून को एकनाथ शिंदे ने राज्य के मुख्यमंत्री और देवेन्द्र फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। 4 जुलाई को फ्लोर टेस्ट में भी वह पास हो गई। उसके पक्ष में 164 वोट जब कि विरोध में 99 वोट पड़े। इससे पहले 3 जुलाई को स्पीकर के चुनाव में भी उसके उम्मीदवार राहुल नार्वेकर विजयी हुए। हालांकि एक दिन पहले विधानसभा में शक्ति परीक्षण को लेकर सुप्रीम कोर्ट के रूख के बाद उद्धव ठाकरे ने जब मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया, तभी यह तय हो गया था कि वे सत्ता बचाने की जंग से बाहर हो चुके हैं। उसके बाद शिवसेना के बागी विधायकों और उनका समर्थन करने वाली भाजपा के लिए मैदान साफ हो गया था। विधानसभा में शक्ति परीक्षण की नौबत नहीं आई और विधायकों के संख्याबल के आधार पर शिवसेना के बागी गुट और भाजपा की मिली-जुली सरकार बन गई। हालांकि इस बीच उद्धव ठाकरे की ओर से कई स्तर पर दबाव बनाने की कोशिश की गई, मगर उतार-चढ़ाव के बाद आखिर उन्हें अपने कदम पीछे खींचने पड़े।

एकनाथ शिंदे सरकार अब शासन की कसौटी पर है। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली महाविकास अघाड़ी सरकार कामकाज की दृष्टि से बेहतर और संतोषजनक मानी जा रही थी। खासतौर पर कोरोना संक्रमण से जूझने के क्रम में सरकार की योजनाबद्ध कोशिशों की प्रशंसा हुई थी। अब एकनाथ शिंदे के सामने यह चुनौती होगी कि वे भी खुद को एक परिपक्व शासक साबित करें। यह एक जरूरी पक्ष इसलिए भी रहेगा कि उन्होंने जिन सवालों को मुद्दा बनाकर शिवसेना से अलग होने की घोषणा की थी, उनकी भावी गतिविधियों को उसी पैमाने पर देखा जाएगा। महाराष्ट्र की दो नगर निगमें व कई पालिकाएं भी शिंदे वाली शिवसेना से जुड़ चुकी है। अब तैयारी शिवसेना के झंडे व चुनाव चिह्न (तीर कमान) पर कब्जा करने व बृहन्न मुंबई महानगर पालिका का चुनाव जीतने की है।

सियासी सफर

ऑटो चालक से सीएम पद तक

18 साल की उम्र से एकनाथ शिंदे ने बाला साहब के नेतृत्व वाली शिवसेना से अपने राजनीतिक सफर की शुरुआत की थी। तब वे ठाणे में ऑटो रिक्शा चलाया करते थे। जनता से जुड़े मुद्दे को आक्रामकता से उठाने के कारण वे जनप्रिय हैं। हिन्दुत्व पर मुखर रहे हैं।

दिग्गज नेताओं में शुमार

शिंदे का जन्म 9 फरवरी 1964 को सतारा में हुआ था। पढ़ाई के लिए वे ठाणे आए और 11वीं तक की पढ़ाई यहीं की। इसके बाद ऑटो रिक्शा चलाने लगे। इसी दौरान उनकी मुलाकात शिवसेना नेता आनंद दीघे से हुई। यहीं से शिंदे के राजनीतिक सफर की शुरुआत हुई। वे पार्टी के अहम नेता रहे। उनके बेटे श्रीकांत शिंदे कल्याण लोकसभा क्षेत्र से दूसरे सांसद चुने गए है।

यूं बढ़ते रहे कदम

- पार्टी में करीब डेढ़ दशक तक काम करने के बाद 1997 में आनंद दीघे ने शिंदे को ठाणे नगर निगम के चुनाव में पार्षद का टिकट दिया।
- पहली ही कोशिश में शिंदे ने न केवल नगर निगम का चुनाव जीता, बल्कि 2001 में वे निगम में विपक्ष के नेता बनने में भी कामयाब रहे।
- आनंद दीघे की मौत के बाद शिंदे की ठाणे की राजनीति पर पकड़ मजबूत होती गई और 2004 में वे पहली बार विधायक चुने गए।
- 2005 में नारायण राणे और राज ठाकरे ने जब शिवसेना छोड़ी तो एकनाथ शिंदे ठाकरे परिवार के बेहद करीब आ गए।
- इसके बाद 2009, 2014 और 2019 में ठाणे जिले की कोपरी पछपाखडी सीट से जीतकर विधानसभा पहुंचते रहे। देवेन्द्र फडणवीस की 2015 से 2019 तक की सरकार में शिंदे राज्य के लोक निर्माण मंत्री रहे।
- वर्ष 2019 में शिवसेना ने उन्हें विधायक दल का नेता बनाया, हालांकि–अघाड़ी सरकार बनने के दौरान शिंदे का नाम भी दावेदारों में शामिल था।
- उद्धव सरकार में राज्य के शहरी विकास मंत्री होने के साथ ठाणे जिले के प्रभारी मंत्री रहे।
- वर्ष 2006 में शिंदे को कांग्रेस में शामिल होने का प्रस्ताव मिला था, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। शिंदे शिवसेना के उन नेताओं में शामिल हैं, जो कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाने के खिलाफ थे।

भाजपा ने साधे निशाने

भारतीय जनता पार्टी को 2019 में सत्ता की सीढ़ियों पर चढ़ने से एनसीपी व कांग्रेस से हाथ मिलाकर बाला साहब ठाकरे की शिवसेना के उत्तराधिकारी उद्धव ठाकरे ने रोक दिया था। तभी से भाजपा अवसर की तलाश में थी। अवसर भी ऐसा मिला कि उस पर ठाकरे को पटखनी देने का आरोप भी नहीं लग पाया और आसानी से कई निशाने भी साध लिए।

निशाना-1

शिवसेना को खत्म किए बिना भाजपा आगे नहीं बढ़ सकती, लेकिन शिवसेना खत्म हो जाए और उसका ब्लेम भाजपा के सिर पर न आए, इसलिए शिंदे को सीएम बनाया गया। इसके अलावा शिंदे को सीएम बनाकर भाजपा ये संदेश देना चाहती है कि उन्हीं का खेमा असली शिवसेना है।

निशाना-2

शिंदे को सीएम बनाने के पीछे एक बड़ी वजह यह भी है कि भाजपा अभी टेस्ट एंड ट्रायल करना चाहती है। वो परखना चाहती है कि बाला साहिब ठाकरे के बेटे उद्धव ठाकरे की कुर्सी और पार्टी छीनने पर जनता कैसे रिएक्ट करती है। चुनाव में अगर इसका उल्टा असर पड़ा तो नतीजे केवल शिंदे और उनके गुट को भुगतने होंगे। सरकार का चेहरा न होने की वजह से भाजपा काफी हद तक इससे बची रहेगी।

निशाना-3

शिंदे के बागी कैंप की ओर से लगातार यह कहा जाता रहा कि उद्धव ठाकरे हिंदुत्व को भूलकर एनसीपी और कांग्रेस के करीबी हो गए हैं। शिंदे के इस दांव को उद्धव भी भांप चुके थे, इसलिए दो तिहाई पार्टी गंवाने और सुप्रीम कोर्ट में सुनिश्चित हार के बावजूद जाते–जाते औरंगाबाद का नाम संभाजी नगर और उस्मानाबाद का धाराशिव कर दिया। भाजपा भी यही चाहती थी, जो अनायास हो गया और आलोचना से भी बच गई।

निशाना-4

भाजपा राष्ट्रीय पार्टी होने की वजह से मराठी अस्मिता की राजनीति नहीं कर सकती। इससे बाकी हिंदी भाषी बेल्ट में उस पर बुरा असर पड़ेगा। भाजपा को ऐसे में हिन्दुत्व के अलावा एक और फैक्टर की जरूरत थी। उसकी भरपाई के लिए भाजपा ने शिंदे पर दांव खेला है। शिंदे मराठा हैं और इसका फायदा भाजपा को जरूर मिलेगा।

निशाना-5

संपन्न एवं विशाल नगर निगमों सहित नगरपालिकाओं के चुनावों में अपनी ताकत बढ़ाने का भाजपा को पहली बार बैठे बिठाए मौका मिलेगा।

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,

नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),

उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

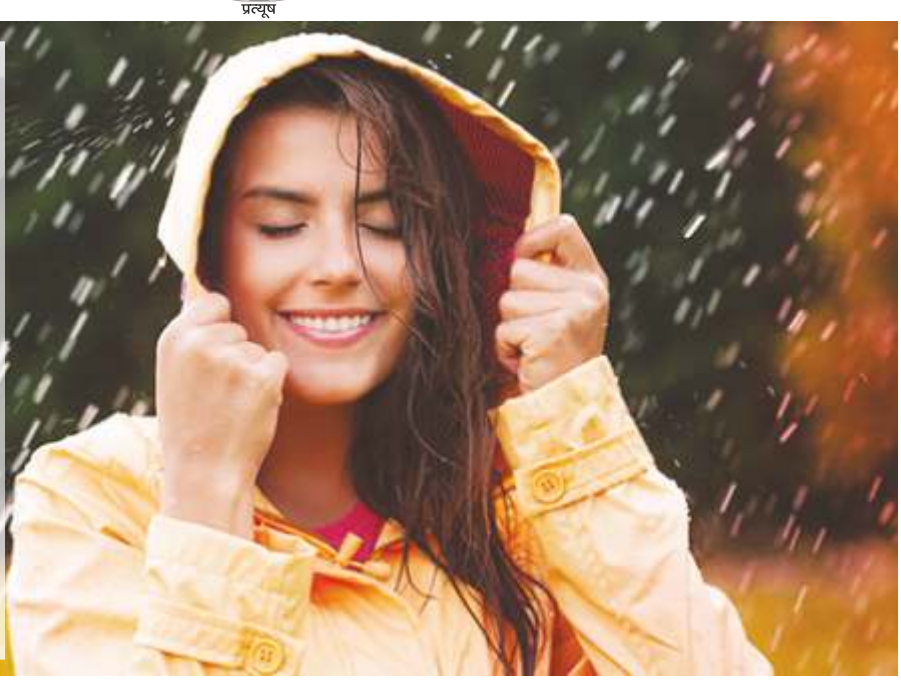

झमाझम बारिश का सुहावना मौसम सभी को अच्छा लगता है। आप भी इसका जी भरकर आनंद लेते होंगे। इसमें भीगने, सैर सपाटा और गरमा-गरम भुट्टे, पकौड़ी, चाट खाने का भी अपना अलग ही मज़ा है। ये मौसम अपने साथ त्वचा सम्बंधी अन्य बीमारियां भी लेकर आता है। त्वचा के संक्रमण से बचे रहना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि मौसम की ह्यूमिडिटी इस संक्रमण को बढ़ाने का काम करती है।

बारिश के पानी से संक्रमित न हो जाए त्वचा

डॉ. सुनील शर्मा

मॉनसून ऐसा मौसम है, जो थोड़ी मुश्किलें तो पैदा करता है, लेकिन रोमांच से भरपूर होता है। इस में कहीं खूब हरियाली होती है, तो कहीं बारिश के यादगार किस्से। कहीं पकौड़ों का स्वाद होता है, तो कहीं पकौड़ों के साथ चाय की चुस्कियां। यही वजह है कि बारिश ज्यादातर लोगों का पसंदीदा मौसम है। लेकिन ऐसा सबके साथ नहीं। खासकर उन लोगों के साथ तो बिल्कुल भी नहीं, जो मॉनसून में होने वाले संक्रमणों का सामना कर रहे होते हैं। दरअसल, मॉनसून में त्वचा से जुड़े संक्रमणों का खतरा काफ़ी बढ़ जाता है। लगातार होती ह्यूमिडिटी इस दिक्कत को बढ़ाती ही जाती है। पर थोड़ी-सी सावधानी बरतकर इनसे बचा भी जा सकता है। जैसे दिनभर में खूब पानी पीना, जीवनशैली में कुछ जरूरी बदलाव लाना आदि।

बैक्टीरियल संक्रमण से बचाव

मॉनसून के दौरान सबसे ज्यादा बैक्टीरियल संक्रमण परेशान करता है। इसकी वजह है, स्टेफ ओरियस नाम के बैक्टीरिया। ये गंदे पानी और ह्यूमिडिटी की वजह से त्वचा पर अपना ठिकाना बनाते हैं। फिर इनकी वजह से त्वचा पर दाने आने लगते हैं, जिनमें खुजली होती है और पस भी पड़ता है। दिक्कत इसलिए भी बढ़ जाती है, क्योंकि मौसम में नमी के चलते पस निकल नहीं

पाता और पोर्स भी ब्लॉक हो जाते हैं। फॉलिक्यूलाइटिस भी ऐसा ही एक बैक्टीरियल संक्रमण है, जो मॉनसून में अपने पैर पसारता है। इसकी वजह से भी दाने होते हैं, जो बिल्कुल मुंहासों जैसे दिखते हैं और लाल होते हैं। ये आमतौर पर शरीर के उन हिस्सों में होते हैं, जो खुले रहते हैं, जैसे चेहरा, हाथ, और पैर। बैक्टीरियल संक्रमण से बचने के लिए जरूरी है कि शरीर पर नमी न रहे और संभव हो तो दिन में दो बार स्नान करें।

एथलीट फुट का रखें ख्याल

एथलीट फुट यानी खिलाड़ी जैसे पैरों की बात हो रही है। ऐसा भी कह सकते हैं कि इसके तहत वे पैर भी आते हैं, जिनमें जूते घंटों तक रहते हैं। फिर मॉनसून के मौसम की नमी और जूतों से मिलने वाली गर्मी पैरों का हाल बुरा कर देती हैं। मॉनसून में घंटों जूते-मोजे पहने रहने वाले व्यक्ति को एथलीट फुट की परेशानी हो सकती है। इसमें सिर्फ पैरों में फंगल संक्रमण होता है। ऐसा होने की वजह सिर्फ नमी नहीं हैं, बल्कि बरसात का पानी भी हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि जूतों में बरसात का पानी बिल्कुल न जाने दें। अगर जूतों में पानी चला भी जाए तो जल्द से जल्द पैरों को जूतों से निकाल कर उन्हें धोएं और सुखाएं।

फंगल संक्रमण भी करेगा परेशान

फंगल संक्रमण भी मॉनसून में होने वाली त्वचा की बड़ी समस्या है। इनको रिंगवॉर्म या दाद भी कहा जाता है। ये आकार में गोल और लाल पैच जैसे लगते हैं। दाद खुजली बहुत होती है और कई दफा इनमें से पानी जैसा भी रिसता रहता है। इसकी वजह मौसम की नमी है, कपड़ों की रगड़ भी इस संक्रमण को बढ़ाती रहती है। ऐसा इसलिए होता है, क्यों कि ये शरीर के उसी हिस्से में होते हैं, जहां नियमित तौर पर रगड़ लगती रहती है। वह जगह शरीर का प्राइवेट पार्ट और जंघों के बीच की जगह, आर्मपिट, स्कैल्प, गर्दन और कंधे के बीच का हिस्सा हो सकती है।

हालांकि इस समस्या को कुछ दवाओं और कुछ सावधानियों से ठीक किया जा सकता है। अगर जरूरत पड़ जाए, तो खुद से इसका इलाज कभी नहीं करें। दरअसल ये फैलता बहुत तेजी से है और ठीक से इलाज न हो तो दाग भी छोड़ जाता है। डॉक्टर की सलाह पर ही इसका इलाज बेहतर तरीके से हो पाता है।

मॉनसून वाला एक्जिमा

एक्जिमा एक तरह का त्वचा का संक्रमण है, जिसका सीधा संबंध मॉनसून से बिल्कुल नहीं है। मतलब ये मॉनसून में ही हो, ये जरूरी नहीं है। लेकिन इसका एक प्रकार होता है, जो मॉनसून से सीधे तौर पर जुड़ा है। नाम है पॉम्फोलिक्स। इसे डिशोड्रोटिक एक्जिमा भी कहा जाता है। मॉनसून में ही खास होने वाले इस एक्जिमा की वजह से हाथों, उंगलियों, हथेलियों, तलवों और पैरों में छोटे-छोटे दाने निकलने लगते हैं। ऐसा होने की वजह त्वचा के पोर का ब्लॉक हो जाना होता है। ये ह्यूमिडिटी की वजह से बढ़ता चला जाता है और इसके बढ़ने के साथ इसमें खुजली की परेशानी भी बढ़ती चली जाती है।

पर्याप्त पानी पीना जरूरी

किसी भी तरह के संक्रमण से बचने का एक सबसे अच्छा तरीका है हाइड्रेशन। मतलब शरीर में पानी भरपूर हो, इसकी कमी बिल्कुल न हो पाए। आप अगर जरूरत भर पानी पी रहे हैं, तो समझिए कि आप इस तरह के संक्रमण की गिरफ्त में आ ही नहीं पाएगें। इसकी वजह यह होती है कि पर्याप्त पानी पीते रहने से शरीर से गंदगी बाहर निकलती रहती है। इसके लिए जरूरी है कि दिनभर में कम से कम तीन लीटर पानी पिया जाए। इस तरह से शरीर से टॉक्सिन निकलते रहेंगे व त्वचा में गंदगी जमा नहीं हो पाएंगी।

खाएं मौसमी फल व घर का खाना

मॉनसून के मौसम में बाहर का खाना खाने से बचना चाहिए। सिर्फघर का खाना खाएं, वो भी कम तेल का। सबसे अच्छा है कि मौसमी फ्लों को डाइट में शामिल करें, ताकि आपकी प्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहे।

ढीले कपड़े पहनें

मॉनसून में संक्रमण से बचे रहने के लिए ढीले कपड़े पहनें और साफ-सफाई का ध्यान रखें। **इन बातों का रखें ध्यान**

- फंगल संक्रमण से बचने के लिए जरूरी है कि दिन में दो से तीन बार चेहरा धोया जाए। इससे चहरे पर मौजूद अतिरिक्त तेल और गंदगी साफ हो जाएगी। इससे संक्रमण का खतरा काफी हद तक कम हो जाएगा।
- कपड़े हमेशा ढीले पहनें, ताकि कहीं भी पसीना न ठहर पाए।
- अंडरवियर टाइट न हों। ध्यान रखें कि ये ढीले और सॉफ्ट मेटीरियल से बने हों। भीग गए हैं, तो घर आकर खुद को ड्राई जरूर करें। गीले कपड़ों में देर तक रहने से त्वचा पर बहुत बुरा असर पड़ता है।
- बाहर से आकर स्नान कर पाएं, तो बहुत अच्छा। इससे त्वचा में किसी भी तरह के संक्रमण की आंशका होगी तो वह भी धुल जाएगी।

मौसमी रोग और उनसे बचाव

डॉ सुशांत जोशी (नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञ)

मौसम बदलने पर आप बहुत ज़्यादा छींकते है? क्या आपकी आंखों, मुंह या त्वचा पर खुजली होती है और आंखों से लगातार पानी आता है? क्या आपकी नाक अक्सर बहती है और बंद रहती है? अगर जवाब हां है तो, आपको मौसमी (सीजनल) एलर्जिक रायनाइटिस हो सकता है, यह नाक को प्रभावित करने वाले लक्षणों का समूह है।

एलर्जिक रायनाइटिस के लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करे, ये बहुत सी दूसरी बीमारियों का कारण बन सकते हैं। जैसे–

- कान का संक्रमण और कम सुनाई देना।
- खर्राटे आना, नींद में रूकावट और दिन मै सुस्ती रहना।
- नाक मै मस्सों का बनना और सॉस लेने मै रूकावट आना।
- एलर्जिक रायनाइटिस के कारण साइनोसाइटिस और अस्थमा जैसी बीमारिया भी विकसित हो जाती हैं।
- नाक की एलर्जी में रोगियों की त्वचा पर चकत्ते पड़ने की सम्भावना भी रहती है।
- लगभग 40 प्रतिशत एलर्जिक रायनाइटिस के रोगियों को या तो पहले से ही अस्थमा होता है या फिर वे इसे विकसित कर लेते हैं।

अपने एलर्जिक रायनाइटिस से निपटने के लिए क्या करें?

- घर को धूल के कणों और गन्दगी से छुटकारा पाने के लिए निरंतर साफ करे।

- किसी भी पालतू जानवर को दुलारने या थपथपाने के तुरंत बाद अपने हाथ धोएं।
- अपने बिस्तर के कपड़ों को गर्म पानी से नियमित रूप से धोएं।
- परदे, सोफा कवर और कालीन को नियमित वैक्यूम क्लीनर से साफ़ करे।
- अपनी आंखों मै परागकण जाने की सम्भावना को कम करने के लिए धूप का चश्मा लगाएं, हैट पहने और मास्क का उपयोग करें।
- बदलते मौसम मै खिड़कियां बंद रखे, कार वह घर मै फिल्टर युक्त ए.सी का उपयोग करें।
- एलर्जी के कारण को पहचान कर उससे बचने की कोशिश करें।
- खिड़की वाले पंखों का उपयोग करने से बचें, वे घर मे परागकणों और धूल को आकर्षित करने का काम करते हैं।
- अपनी आंखों को रगड़ने से बचें, ऐसा करने से उनमें संक्रमण बढ़ने और लक्षण बदतर होने की सम्भावना रहती है।
- धूम्रपान छोड़ दें यह एलर्जिक रायनाइटिस के लिए उत्प्रेरक का काम करता है।

एलर्जिक रायनाइटिस के मेडिकल या संभावित सर्जिकल उपचार के लिए अपने कान, नाक, गला विशेषज्ञ का परामर्श लें।

आत्मा की उपासना का अद्वितीय पर्व : पर्युषण

पर्युषण महापर्व मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है। पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना की जाती है। संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है। जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। यह एकमात्र आत्मशुद्धि का प्रेरक पर्व है। इसीलिए यह पर्व ही नहीं, महापर्व है। जैन लोगों का सर्वमान्य विशिष्टतम पर्व है। पर्युषण पर्व- जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, अनुप्रेक्षा आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठानों का अवसर है। पर्युषण पर्व अंर्तआत्मा की आराधना, आत्मशोधन और निद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निद्रा से उठाकर जागृत अवस्था में ले जाता है। अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है। तो जरूरी है प्रमादरूपी नींद को हटाकर इन आठ दिनों विशेष तप, जप, स्वाध्याय की आराधना करते हुए अपने आपको सुवासित करते हुए अंर्तआत्मा में लीन हो जाएं जिससे हमारा जीवन सार्थक व सफल हो पाएगा। पर्युषण पर्व का शाब्दिक अर्थ है-आत्मा में अवस्थित होना। पर्युषण शब्द परि उपसर्ग व वस् धातु इसमें अन् प्रत्यय लगने से पर्युषण शब्द बनता है। पर्युषण यानि 'परिसमन्तात-समगत्र या उषणं वसनं निवासं करणं''-पर्युषण का एक अर्थ है-कर्मों का नाश करना। कर्मरूपी शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी। अत: पर्युषण-पर्व आत्मा

श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

का आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है। इसका जो केन्द्रीय तत्व है, वह है-आत्मा। आत्मा के निरामय, ज्योतिर्मय स्वरूप को प्रकट करने में पर्युषण महापर्व अहं भूमिका निभाता रहता है। यह पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है। पर्युषण पर्व जैन एकता का प्रतीक पर्व है। जैन लोग इसे सर्वाधिक महत्व देते हैं। संपूर्ण जैन समाज इस पर्व के अवसर पर जागृत एवं साधनारत हो जाता है। दिगंबर परंपरा में इसकी ''दशलक्षण पर्व'' के रूप में पहचान है। उनमें इसका प्रारंभिक दिन भाद्रपद शुक्ला पंचमी और संपन्नता का दिन चर्तुदशी है। दूसरी तरफ श्वेतांबर जैन परंपरा में भाद्रपद शुक्ला पंचमी का दिन आत्मचिंतन का दिन होता है। जिसे संवत्सरी के रूप में पूर्ण त्याग-प्रत्याख्यान, उपवास, पौषध सामायिक, स्वाध्याय और संयम से मनाया जाता है। वर्ष भर में कभी समय नहीं निकाल पाने वाले लोग भी इस दिन जागृत हो जाते हैं। कभी उपवास नहीं करने वाले भी इस दिन धर्मानुष्ठान करते नजर आते हैं। पर्युषण पर्व मनाने के लिए भिन्न-भिन्न मान्यताएं उपलब्ध होती हैं। आगम साहित्य में इसके लिए उल्लेख मिलता है कि संवत्सरी चातुर्मास के 49 या 50 दिन व्यतीत होने पर व 69 या 70 दिन अवशिष्ट रहने पर मनाई जानी चाहिए। दिगम्बर परंपरा में यह पर्व 10 लक्षणों के रूप में मनाया जाता है। यह 10 लक्षण पर्युषण पर्व के समाप्त होने के साथ ही शुरू होते हैं। पर्युषण महापर्व-कषाय शमन का पर्व है। यह पर्व 8 दिन तक मनाया जाता है जिसमें किसी के भीतर में ताप, उत्ताप पैदा हो गया हो, किसी के प्रति द्वेष की भावना पैदा हो गई हो तो उसको शांत करने का पर्व है। धर्म के 10 द्वार बताए हैं उसमें पहला द्वार है-क्षमा। क्षमा यानि समता। क्षमा जीवन के लिए बहुत जरूरी है जब तक जीवन में क्षमा नहीं तब तक व्यक्ति अध्यात्म के पथ पर नहीं बढ़ सकता।

भगवान महावीर ने क्षमा यानि समता का जीवन जीया। वे चाहे कैसी भी परिस्थिति आई हो, सभी परिस्थितियों मौसम रहे। ''क्षमा वीरों का भूषण है''-महान् व्यक्ति ही क्षमा ले व दे सकते हैं। पर्युषण पर्व आदान-प्रदान का पर्व है। इस दिन सभी अपनी मन की उलझी हुई ग्रंथियों को सुलझाते हैं, अपने भीतर की राग-द्वेष की गांठों को खोलते हैं वह एक दूसरे से गले मिलते हैं। पूर्व में हुई भूलों को क्षमा के द्वारा समाप्त करते हैं व जीवन को पवित्र बनाते हैं। पर्युषण महापर्व का समापन मैत्री दिवस के रूप में आयोजित होता है, जिसे क्षमापना दिवस भी कहा जाता है इस तरह से पर्युषण महापर्व एवं क्षमापना दिवस- यह एक दूसरे को निकटता में लाने का पर्व है। यह एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है''आत्मौपम्येन सर्वत्र:, समे पश्यति योर्जुन''-'श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन ! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने

कहा-''मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ''सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, अंतर्राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्व पर्युषण महापर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्व जन-जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन-जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है। मनुष्य धार्मिक कहलाए या नहीं, आत्म-परमात्मा में विश्वास करे या नहीं, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को माने या नहीं, अपनी किसी भी समस्या के समाधान में जहाँ तक संभव हो, अहिंसा का सहारा ले- यही पयुर्षण की साधना का अर्थ है। हिंसा से किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। हिंसा से समाधान चाहने वालों ने समस्या को अधिक उकसाया है। इस तथ्य को सामने रखकर जैन समाज ही नहीं आम-जन भी अहिंसा की शक्ति के प्रति आस्थावान बने और गहरी आस्था के साथ उसका प्रयोग भी करे। नैतिकताविहीन धर्म, चरित्रविहीन उपासना और वर्तमान जीवन की शुद्धि बिना परलोक सुधार की कल्पना एक प्रकार की विडंबना है। धार्मिक वही हो सकता है, जो नैतिक है। उपासना का अधिकार उसी को मिलना चाहिए, जो चरित्रवान है। परलोक सुधारने की भूलभुलैया में प्रवेश करने से पहले इस जीवन की शुद्धि पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए। धर्म की दिशा में प्रस्थान करने के लिए यही रास्ता निरापद है और यही पर्युषण महापर्व की सार्थकता का आधार है। पर्युषण पर्व प्रतिक्रमण का प्रयोग है। पीछे मुड़कर स्वयं को देखने का ईमानदार प्रयत्न है। वर्तमान की आंख से अतीत और भविष्य को देखते हुए कल क्या थे और कल क्या होना है इसका विवेकी निर्णय लेकर एक नये सफर की शुरुआत की जाती है। पर्युषण आत्मा में रमण का पर्व है, आत्मशोधन व आत्मोत्थान का पर्व है। यह पर्व अहंकार और ममकार का विसर्जन करने का पर्व है। यह पर्व अहिंसा की आराधना का पर्व है। आज पूरे विश्व को सबसे ज्यादा जरूरत है अहिंसा की, मैत्री की।

अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, आतंक, आपसी-द्वेष, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए पर्युषण पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक जीवन शैली का प्रयोग है। आज भौतिकता की चकाचौंध में, भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में इस पर्व की प्रासंगिकता बनाये रखना ज्यादा जरूरी है। इसके लिए समाज संवेदनशील बने विशेषत: युवा पीढ़ी पर्युषण पर्व की मूल्यवत्ता से परिचित हो और वे सामायिक, मौन, जप, ध्यान, स्वाध्याय, आहार संयम, इन्द्रिय निग्रह, जीवदया आदि के माध्यम से आत्मचेतना को जगाने वाले इन दुर्लभ क्षणों से स्वयं लाभान्वित हो और जन-जन के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करें।

पूर्णानन्द के प्रतीक भगवान श्रीकृष्ण

श्री श्री रविशंकर

जब आनंद एक बार अपने आप में उत्पन्न होता है तो इसे हम सम्पूर्ण परिवार में बांटकर प्रसन्न होते हैं। विश्व भी आपका-हमारा परिवार ही तो है। आपका आनंद तब और असीम हो जाता है, जब आप और हम ही कृष्ण बन जाते हैं। अपने भीतर के आनंद को जगाना ही श्री कृष्ण बनना अथवा उनके शाश्वत संदेश को ग्रहण करना है। यही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व का संदेश भी।

जन्माष्टमी भगवान कृष्ण का जन्म उत्सव है। श्रीकृष्ण को जगद्गुरु कहा जाता है। वे एक पूर्ण आनंद की प्रतिमूर्ति हैं। इसलिए उनके साथ शरारतों की कुछ घटनाएं भी जुड़ी हुई हैं। शरारत का उदय ही प्रसन्नता से होता है। लोग उनकी शिकायतें करने आते, लेकिन उन्हें देखते ही सभी शिकायतें और गुस्सा गायब हो जाता। शुद्ध प्रसन्नता और आनंद के समक्ष कोई शिकायत और गुस्सा नहीं ठहरता। आपके जीवन में सब कुछ ठीक हो तो आप खुल कर मुस्कुरा सकते हैं, जब बुरे दिनों में आप मुस्करा पाएं तो ही आपने जीवन में कुछ उपलब्धि प्राप्त की है। कृष्ण में यही गुण था। उनकी मुस्कान सबको मोहित करती थी।

उनका मटका तोड़ना, उसमें से मक्खन निकालना...., इस कहानी का गहरा अर्थ है। यहां पर मटके का तात्पर्य है शरीर और मक्खन का अर्थ है सार। जब हम शरीर की सीमा से अपने आप को बाहर पाते हैं तो हमें जीवन का सार पता चलता है। हमारे असीम चैतन्य को खिलने से कौन रोकता है, 'मैं एक शरीर हूं' - यह विचार ही एकमात्र बंधन है। जब हम प्रसन्न होते हैं तो सब कुछ तोड़कर हम हंसते हैं। उसी प्रकार जब हम प्रेम में हों तो प्रेम से खिल उठते हैं। हमारा सार प्रेम के रूप में बाहर निकलता है।

कृष्ण को माखन चोर कहा जाता है, एकमात्र वही चोर हैं, जिनका पूर्ण सम्मान हुआ है। वह माखन चोर हैं, क्योंकि वह उसका मन भी चुरा लेते हैं, जिन्होंने प्रेम को पा लिया है, जिनकी चेतना पूर्ण खिल चुकी है। हम उन्हें चितचोर भी कहते हैं, जिसका अर्थ है मन को चुराना। उनका जन्म देवकी यानी शरीर और वासुदेव यानी श्वास के यहां पर हुआ। जब प्राण का शरीर के साथ समागम होता है तो आनंद का जन्म होता है। इसलिए कृष्ण को नंदलाल कहा जाता है, क्योंकि नंद या आनंद का अर्थ है प्रसन्नता।

जब कृष्ण का जन्म हुआ था सभी पहरेदार सो गए थे। ये पहरेदार और कोई नहीं, हमारी पांच इंद्रियां हैं, जो आंतरिक प्रेम और आनंद को अनुभव नहीं होने देती। कृष्ण का मामा कंस और कोई नहीं, हमारा अहंकार है, जिसने हमारे वासुदेव और देवकी को बंधक बना रखा है, जिसके कारण हमारे प्राण और शरीर कैद में हैं। अहंकार सदैव प्रसन्नता से दूर होता है। इसीलिए यह प्रसन्नता का वध करने के प्रयास में लगा रहता है। बच्चे सदैव प्रसन्नता से भरे होते हैं, क्योंकि उनमें अहंकार नहीं होता। जिस क्षण हम में पृथकता या अलग होने की प्रवृत्ति जन्म लेती है, आनंद समाप्त हो जाता है। इसीलिए कृष्ण को आधी रात को लेकर जाना पड़ा, क्योंकि उस आनंद को कंस समाप्त नहीं कर सकता था। कृष्ण को बचाने के लिए वासुदेव उनको यमुना नदी, जो प्रेम का सूचक है, के पार लेकर गए। पूरे साहस से भरे वासुदेव बाढ़ से उफनती यमुना नदी को पार कर रहे थे और जैसे ही वे डूबने को हुए, तभी कृष्ण ने अपना पैर टोकरी से बाहर निकाल कर यमुना के उफान को रोका। इसका अर्थ है कि जब भी विपत्ति नाक तक आती है तो ईश्वरीय सहायता

सदैव वहां पर रहती है। इससे ऊपर कठिनाई आ नहीं सकती, क्योंकि यह इसके बाद ईश्वर की जिम्मेदारी बन जाती है। कृष्ण ने नियमों को माना, लेकिन फिर भी कुछ घटनाएं ऐसी हैं, जहां कृष्ण ने नियम को अनदेखा किया। ईश्वर रचना के हर हिस्से में मौजूद हैं। दिव्यता शर्तरहित है, लेकिन हमारी धारणाएं हमें दिव्य प्रेम और मासूमियत से दूर ले जाती है। इसीलिए आलोचनात्मक नहीं बनें। जो जैसा है, उसे स्वीकार करें।

एक बार कृष्ण को बुरी तरह प्रताड़ित किया गया। एक मणि के चोरी होने का आरोप उन पर लगाया गया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को यह बताया कि मणि उनके पास नहीं है, लेकिन किसी ने विश्वास नहीं किया। यहां तक कि रूक्मिणी, सत्यभामा, बलराम ने भी नहीं किया। यह देखकर कृष्ण अप्रसन्न हो गए। तब नारद मुनि वहां आए और उन्होंने बताया कि यह आपका मन है, जो उत्तेजित हुआ है, आप स्वयं नहीं। स्व तो सभी प्रकार के मन से परे होता है। मन की खिन्नता को देखने से हम उस खिन्नता से बाहर चले जाते हैं। इस प्रकार जब भी आप खिन्न हों और यदि आप ये सोच रहे हों कि ऐसा आपके साथ नहीं होना चाहिए था, तो उसे तुरंत समर्पण कर दें। यह मन ही है, जो खिन्न होता है, आप स्वयं कभी खिन्न नहीं होते।

कृष्ण एक पांव को धरती पर पूरी तरह जमा कर और दूसरे पांव को धरती पर हल्के से रखकर खड़े होते हैं। इसका तात्पर्य है कि जीवन को एक पूरे संतुलन के साथ जीना चाहिए। जीने की कला का अर्थ है अध्यात्म और भौतिकता में संतुलन बनाना।

19 की उम्र में चूमा फांसी का फंदा

सुरेश नीरव

सरदार करतार सिंह 'सराबा' आजादी की लड़ाई के एक ऐसे योद्धा थे, जिन्होंने उन्नीस वर्ष की उम्र में ही स्वतंत्रता के खातिर फांसी का फंदा चूम कर बलिदान के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में दर्ज करा लिया। पंजाब के लोकगीतों में वे आज भी याद किये जाते हैं और जिनके जाबांज हौसलों ने उन्हें अनेक कविताओं और उपन्यासों का नायक बना दिया। इस शायर दिल क्रांतिकारी के लिए फुटबाल खेलना, हवाई जहाज उड़ाना और लपक कर फांसी का फंदा अपने गले में डाल लेना महज एक नौजवान उम्र का अल्हड़ खेल था, जिसे उन्होंने बड़ी बहादुरी से खेला। शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने ऐसे क्रांतिकारी नौजवान के सम्मान में जो टिप्पणी की हैं, वह अपने आप में क्रांति के इतिहास का एक बहुमूल्य दस्तावेज है- 'कोई भी आदमी उन्नीस वर्ष की उम्र में उनके वीरतापूर्ण कार्यों को देख कर आश्चर्यचकित रह जाता है। कोई मुश्किल से ही इतना साहस, इतना आत्मविश्वास और इतनी अधिक समर्पण भावना पाता है। भारत भूमि ने ही ऐसे लोगों को पैदा किया है, जो राष्ट्र की स्वतंत्रता एकता और अखण्डता के लिए कुर्बान होना जानते हैं। करतार सिंह ऐसे लोगों में सबसे आगे हैं। क्रांति उनके खून में थी। उनका लक्ष्य इच्छा में और आशा क्रांति में निहित थी। वह इसके लिए जीवित रहे और इसी के लिए मरे।

1896 में लुधियाना के सराबा ग्राम में एक प्रतिष्ठित सिख परिवार में जन्मे करतार सिंह जन्मजात क्रांतिकारी थे। पराधीनता और अन्याय जिन्हें किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं था और देश को आजाद देखने के लिए वे हर पल बेचैन रहते थे। यही बेचैनी उन्हें भारत के बाहर सेनफ्रांसिस्को ले गई और फिर वापस भारत भी लौटा लाई। विदेश में क्रांतिकारियों के संपर्क में आना और फिर भारत में आकर 'गदर' की तैयारी करना करतार सिंह की संघर्ष कथा का चरम है।

एक दिन अचानक करतार सिंह ने अपने बाबा के सामने घोषणा की, 'बाबा, लुधियाना के खालसा स्कूल से मैंने हाई स्कूल कर लिया। अब आगे पढ़ने के लिए मैं अमेरिका जाऊंगा।' पिताजी थे नहीं, इसलिए बाबा ने अपने लाड़ले की इच्छा पूर्ति के लिए उसे अमेरिका भेजना मंजूर कर लिया। लाला हरदयाल की अभी करतार सिंह ने सिर्फ चर्चा ही सुनी थी, पर मुलाकात नहीं हुई थी। पहली मुलाकात यहां उनकी डा. खानाखोजे से हुई, जो कि 'इंडिपेंडेस लीग' नाम से संस्था चला रहे थे। यहीं इन्हें मालूम हुआ कि 30 दिसम्बर 1913 को सैक्रामेंटो में क्रांतिकारियों की एक मीटिंग होने वाली है। 'चलो स्वतंत्रता के युद्ध में शामिल हो जाएं। अंतिम आदेश हो चुका है। अब हम लोगों को चलना चाहिए।'

सारे श्रोताओं ने सराबा के गीत की पंक्तियों को एक साथ दुहराया। जब वातावरण देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत था, तभी लाला हरदयाल ने 'गंदर' अखबार निकालने का प्रस्ताव रख दिया। करतार सिंह जो भारत से पढ़ाई के लिए 200 डॉलर लेकर आये थे, उन्होंने सारे डॉलर 'गदर' के प्रकाशन के लिए लाला हरदयाल को सौंप दिए और घोषणा की कि वो अपना सारा समय 'गदर' के प्रकाशन में लगाएंगे और पढ़ाई छोड़ कर देश सेवा करेंगे।

बगावत की तैयारियों में करतार सिंह के हौसले इतने बुलंद थे कि वे रोज़ सुबह साइकिल लेकर चालीस-पचास मील तय कर गांव-गांव जाकर किसानों और मजदूरों को बगावत के लिए संगठित करते तो कभी छावनियों में जाकर सैनिकों को 'गदर' की प्रतियां और क्रांतिकारी साहित्य बांटने निकल जाते। इस बीच शचींद्र सान्याल को पंजाब के क्रांतिकारियों ने लाहौर बुलाया और उन्हें रासबिहारी बोस को पंजाब लाने का जिम्मा सौंपा। अंतत: जनवरी 1915 में रासबिहारी बोस लाहौर पहुंच गए। विप्लव की योजना का संचालन करने। रेल पटरियां उखाड़ने, पुल उड़ाने, टेलीफोन तार काटने से लेकर फौजी छावनियों में बगावत की योजना को अमली जामा पहनाने में सभी क्रांतिकारी प्राणपण से जुटे थे।

आस्तीन के एक सांप भूलसिंह ने अपने फन फैलाए और जब करतार सिंह एक छावनी में भारतीय सैनिकों से संपर्क कर रहे थे, धोखे से उन्हें गिरफ्तार करा दिया। 13 सितंबर 1915 को जो अदालती ड्रामा शुरू हुआ, वो 14 नवंबर 1915 को अभियुक्तों को काले पानी एवं फांसी की सजा के फैसले के साथ खत्म हुआ। और हंसी-खुशी 16 नवंबर 1915 को लाहौर की सेंट्रल जेल में भारत माता की 'विजय-माल' फांसी के फंदे को गले में डाल कर सरदार करतार सिंह सराबा हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गये। नमन।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

महके और महकाएं

राजेश चित्तौड़ा
9414160914

CHITTORA
AGARBATTI INDUSTRIES

Mfg. : Handmade Agarbatti 'N' Perfumers
Glass Bottles etc.

1,2 Central Jail Colony Nr. Central Jail, Tekri Road Udaipur (Raj.)
Email : rajeshchittora27@gmail.com

पावन रिश्ते को समर्पित रक्षाबंधन

रेणु शर्मा

भारतीय परम्परा में विश्वास का बंधन मूल है और रक्षाबंधन इसी विश्वास का बंधन है। भाई और बहन का रिश्ता मिश्री की तरह मीठा और मखमल की तरह मुलायम होता है।श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाए जाने वाले इस त्योहार के प्रति बहन-भाई के मन में काफी उम्मीद और उमंगे होती हैं। बहनें रोली, हल्दी, चावल, दीपक, मिठाई आदि से भाई के लिए पूजा की थाली सजाती हैं और तिलक करके भाई की दाई कलाई पर राखी बांधती हैं। बहन-भाई की लम्बी उम्र की कामना करती है और भाई-बहन को हर सुख-दुख में उसका साथ देने और उसकी रक्षा करने का वचन देता है। रक्षाबंधन पर्व श्रावण मास में मनाए जाने के कारण श्रावणी (सावनी) और सलूनो भी कहते हैं।रक्षाबंधन पर्व पूर्व में बहन-भाई तक ही सीमित नहीं था, बल्कि आपत्ति आने पर अपनी रक्षा के लिए अथवा किसी की आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिए किसी को भी रक्षा-सूत्र (राखी) बांधी या भेजा जाता था। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि- 'मयि सर्वमिंद प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव' - अर्थात 'सूत्र' अविच्छिन्नता का प्रतीक है, क्योंकि सूत्र (धागा) बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के सूत्र की तरह रक्षा-सूत्र (राखी) भी लोगों को जोड़ता है। गीता में ही उल्लेख है कि जब समाज के नैतिक मूल्यों में कमी आने लगती है, तब ज्योतिर्लिंगम भगवान शिव, प्रजापति बह्मा द्वारा धरती पर पवित्र धागे भेजते हैं, जिन्हें बहनें मंगलकामना के साथ भाइयों की कलई पर बांधती हैं और भगवान शिव उन्हें नकारात्मक विचारों से दूर रखते हुए दु:ख और पीड़ा से निजात दिलाते हैं। हिन्दू धर्म के सभी धार्मिक अनुष्ठानों में रक्षासूत्र बांधते समय कर्मकाण्डी पण्डित या आचार्य संस्कृत में एक श्लोक का उच्चारण करते हैं, जिसमें रक्षाबंधन का सम्बंध राजा बलि से स्पष्ट रूप् से दृष्टिगोचर होता है। यह श्लोक रक्षाबंधन का अभीष्ट मंत्र है। जिसका मतलब है-जिस रक्षासूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बांधा गया था, उसी सूत्र से मैं तुझे बांधता हूं, तू अपने संकल्प से कभी भी विचलित न हो।

सामाजिक प्रसंग

आत्मीयता और स्त्रेह के बंधन से रिश्तों को मजबूती प्रदान करने वाला राखी पर्व भाई-बहन के साथ अन्य सम्बंधों में भी आदर-सम्मान व विश्वास लेकर आता है। पहले गुरू, शिष्य को रक्षासूत्र बांधता है तो शिष्य गुरू को। भारत में प्राचीन काल में जब स्नातक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद गुरूकुल से विदा लेता था तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षासूत्र बांधता था जबकि आचार्य अपने विद्यार्थी को इस कामना के साथ रक्षा सूत्र बाँधता था कि उसने जो ज्ञान प्राप्त किया है वह अपने भावी जीवन में उसका समुचित ढंग से प्रयोग करे ताकि वह अपने ज्ञान के साथ-साथ आचार्य की गरिमा की रक्षा करने में भी सफल हो। रक्षाबंधन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक माध्यम रहा है।

ऐतिहासिक प्रसंग

राखी के साथ एक प्रसिद्ध कहानी जुड़ी हुई है। कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली। रानी ने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर सहयोग की प्रार्थना की। हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके रा%य की रक्षा की। महाभारत में भी इस बात का उल्लेख है कि जब त्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से पूछा कि मैं संकटों से कैसे पार पा सकता हूँ, तब भगवान कृष्ण ने उसकी तथा पांडव सेना की रक्षा के लिये राखी का त्योहार मनाने की सलाह दी थी। उनका कहना था कि राखी के इस रेशमी धागे में वह शक्ति है जिससे आप हर आपत्ति से मुक्ति पा सकते हैं। इस समय द्रौपदी द्वारा कृष्ण को तथा कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बाँधनी के कई उल्लेख मिलते हैं। महाभारत में ही रक्षाबंधन से सम्बन्धित कृष्ण और द्रौपदी का एक और वृतान्त भी मिलता है। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उसकी उँगली पर पट्टी बाँध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय द्रौपदी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया। कहते हैं परस्पर एक-दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबंधन के पूर्व में यही से प्रारम्भ हुई।

Happy Independence Day

Darcl Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :
2nd Floor, 26-NB Complex, Ahmedabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

साहित्य, समाज और समय की चुनौतियां

वेदव्यास

साहित्य ही समाज की चेतना का मूल स्वर है जो हजारों साल से मनुष्य के शब्द, दिशा और संभावना तय कर रहा है। आज भी लेखक और पाठक के बीच शब्द ही विचार और व्यवहार को तय करता है। संत तुकाराम ने इसी शब्द और साहित्य के लिए कहा था कि- ' शब्द ही/ एकमात्र रत्न है/जो मेरे पास है/शब्द ही/एकमात्र वस्त्र है/ जिन्हें मैं पहनता हूं/शब्द ही/एकमात्र आहार हैञ्जजो मुझे जीवित रखता है/शब्द ही/एकमात्र धन है/जिसे मैं लोगों में बांटता हूं।' शब्द और समय की यह अंतर्यात्रा हमें बताती है कि संसार के सभी मनुष्य चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, राष्ट्र अथवा भाषा के हों उनके अधिकार समान है और उन सबका एक ही लोकमंगल का उद्देश्य है। क्रांतिकारी भगतसिंह इसीलिए कहते हैं कि- हमें यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि हम सब मनुष्य ही यत्र-तत्र सर्वत्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समानता के लिए ही संघर्ष कर रहे है। क्योंकि समानता और विकास ही न्याय के दो पहलू हैं। हजारों साल की मानव संस्कृति को नई परिभाषा देते हुए ही कथाकार प्रेमचंद ने 9 अप्रैल 1936 को भारत के पहले लेखक संगठन(प्रगतिशील लेखक संघ) के उद्घाटन उद्बोधन में कहा था कि-' साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफ्लि सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है, उनका दरजा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।' अत: अगर तुझे जीवन के रहस्य की खोज है तो वह तुझे संघर्ष के अलावा और कहीं नहीं मिलने का। सागर में जाकर विश्राम करना नदी के लिए लज्जा की बात है। आनंद के लिए मैं(लेखक) घोंसले में भी बैठता नहीं। कभी फूलों की टहनियों पर तो कभी नदी के तट पर होता हूं। सदियों से चली आ रही शब्द और साहित्य की यह कहानी जब हम आज अपनी 21वीं सदी में पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि भले ही युग बदल गए हों लेकिन मनुष्य और साहित्य की यह परम्परा नहीं बदली है। आज भी मनुष्य जहां कहीं मनुष्य है वह साहित्य में ही बोल रहा है और कविता कहानी बनकर परिवर्तन और विकास की नई अवधारणाएं लिख रहा है। भाषा इसकी भिन्नता है लेकिन भाव इसकी एकता है। आदिम कबीलाई समाज, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, समाजवाद और अब लोकतंत्र इस मनुष्य के संघर्ष की ही अनुकृतियां है। विज्ञान, औद्योगिकरण, सूचना-प्रोद्योगिकी तथा बाजारवाद भी सभी इस समाज की प्रतिध्वनियां हैं। सत्य केवल यही है कि साहित्य में अनवरत समाज और समय की हलचल ही बोल रही है। लेकिन ज्ञान-विज्ञान के विस्तार ने आज मनुष्य को नई चुनौतियों और सपने बदल दिए हैं और ऐसे में साहित्य की धाराएं विचार और विवेक के नए क्षितिज तलाश कर रही हैं। समाज और समय के इस बदलते हुए चेहरे को पढ़कर अब हमें जरूरी लगता है कि ' अतुल्य' साहित्य में ही जीवित है। मेरा ऐसा अनुभव है कि जिस तरह देश और समाज के बुनियादी आधार संविधान से हटाए नहीं जा सकते उसी प्रकार साहित्य के मूल उद्देश्यों को भी मनुष्य को आकांक्षाओं से अलग नहीं किया जा सकता। वाद और विचारधाराएं भी सभी बदलती रही हैं लेकिन मनुष्य की मोक्ष और शांति केवल प्रकृति में ही निहित है। समाज और व्यवस्थाएं सभी इसके आवरण हैं तथा गरीबी-अमीरी, जाति, धर्म, लोकतंत्र और तानाशाही भी सब मनुष्य की चेतना के ही रंग हैं। इसलिए साहित्य में कालजयी शब्दों का वर्चस्व आज भी हमें मार्गदर्शन देता है। हम सब शब्द के उपासक लगातार इस विकल्प पर विचार करते रहते हैं कि शब्द की चेतना का अंतिम लक्ष्य क्या है और समय से मुठभेड़ करने में साहित्यकार की क्या भूमिका हो सकती है। मुझे ऐसा लगता है कि साहित्य में यदि कोई अनहदनाद है तो वह मनुष्य के लिए जगत कल्याण का ही है और युद्ध और शांति से लेकर समता और न्याय की खोज सभी संघर्ष पक्ष आखिरकार कलम के प्रत्येक सिपाही को एक प्रगतिशील चेतना से ही जोड़ते हैं और साहित्य को आत्मरंजन की अंधेरी सुरंग से बाहर निकाल कर समाज के व्यापक ' बहुजन हिताय, बहुतन सुखाय:' के सरोकार तक ले जाते हैं। आपको याद होगा कि भारत के पहले मुक्ति संग्राम(1857) की सम्पूर्ण आधारभूत चेतना का निर्माण साहित्य के विचार और सामूहिक उद्घोष ने ही किया था। फिर 1947 की स्वंतत्रता का अभ्युदय भी साहित्य से ही अभिप्रेरित था तो 1961 के

विदेशी आक्रमणों का प्रतिरोध भी साहित्य से ही निकला था। वंदेमातरम और जन-गण-मन जैसे गान साहित्य की देन हैं क्योंकि समय का इतिहास साहित्य में भी मनुष्य को ही दोहराता है। लेकिन हमारे नए भारत में लोकतंत्र की आकांक्षाओं का जो विप्लन अब आया है और ज्ञान-विज्ञान की खोज ने जिस बिखराव और भटकाव का तूफ़ान मचाया है उससे यह भी तय होता जा रहा है कि साहित्य में समय के सभी भ्रम और यथार्थ टूट रहे हैं और विचारधराएं और उपभोक्ता बाजार की नई राजनीति हमारे समय में संघर्ष को बदल रही है। अब न कोई कबीर, न कोई कार्लमार्क्स, न कोई एडम स्मिथ और न कोई महात्मा गांधी हमारे बीच में है। हमारे पास केवल इतिहास में इनके शब्द हैं। मेरा मानना है कि मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति का सच यदि आज भी कहीं सुरक्षित है तो वह अपने समय और समाज की साहित्य चेतना में ही किलकारियां मार रहा है। आज चेतना का यही प्रगतिशील स्वर, समाज की अंतर्धारा है और हम इसे अपने-अपने दायरे में अपने-अपने आग्रह और सीमाओं में लड़ रहे हैं। कोई सगुण-निर्गुण होकर तो कोई कलावादी-यथार्थवादी बनकर तो कोई नास्तिक-आस्तिक रहकर तो कोई संकीर्णतावादी, उदारवादी दर्शन-परम्पराओं में बंटकर समय, राष्ट्र और पूंजीवाद -समाजवाद के झंडे उठाकर चल रहे है। लेकिन साहित्यकार अपनी नियति को जानते हुए भी शब्द और समय की दिशा को बदलने की महाभारत जारी रखता है। लेकिन आज के समय में साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती बाजार से और विज्ञान के प्रयोग से आ रही है। पूरी शताब्दी सिद्धांतविहीन राजनीति, श्रमविहीन सम्पत्ति, विवेकहीन भोग-विलास, चरित्र विहीन शिक्षा, नैतिकता विहीन व्यापार, मानवीयता विहीन विज्ञान और त्याग विहीन पूजा के सात पापों में बदल गई है। अधकचरे लोग विचारधारा के अंत की और कविता के मृत्यु की घोषणाएं कर रहे हैं। किंतु एक सच्चा साहित्यकार सदैव इस ध्येय वाक्य को याद रखता है कि शब्द कभी मरते नहीं हैं और विचार कभी डरते नहीं हैं।

सूचना-प्रौद्योगिकि कभी स्थाई नहीं रहती, लेकिन शब्द और कला संगीत की संस्कृति का अंतनार्द शाश्वत रहता है। मनुष्य पिट जाता है किंतु साहित्य में मनुष्य और समय की परम्परा निर्बाध चलती रहती है। वाचिक परम्परा से ही लिखित परम्परा का विकास होता है हम सब रचनाकार अपनी-अपनी व्याख्या के साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दुनिया को बदलना सिखाते रहते हैं। अत: हमारा मानना है कि साहित्य में बोलता हुआ समाज उसकी अर्न्तध्वनि ही है और शब्द तथा विचार इसका रूपांतरण कोई राष्ट्र और राज्य साहित्य से अपने को खोजता है तथा आज भी सत्य के प्रयोग एकमात्र साधारण से साधारण लेखक ही करता है। शब्द ही व्यष्टि से समाष्टि बन जाता है और एक से अनेक और वर्तमान से भविष्य का पथ प्रदर्शक हो जाता है। भारत में भी समस्त भाषाओं की यह प्रगतिशील साहित्य परपंरा आज भी हमें यही कहती है कि आत्महीनता और आत्ममुग्धता साहित्य में चेतना की पहली शत्रु है क्योंकि शब्द(लेखक) को एक संत की तरह जीना पड़ता है और सुकरात से लेकर मीरांबाई तक विष का प्याला ही पीना पड़ता है।

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

GRACE

Grace Marble & Granite P. Ltd.

Grace Exports

N.H. 8, Amberi, Udaipur - 313 016 (Raj.) India
Tel. : 91-294-2440474, 2440475 Fax : +91-294-2440135
E-mail : grace_export@yahoo.co.in, Info@graceexport.com
Website : www.graceexport.com

ज़हरीली सोच को बदलें, कहीं देर न हो जाए

भगवान प्रसाद गौड़

कन्हैयालाल साहू

उदयपुर और अमरावती की बर्बरतापूर्ण घटनाएं ऐसी हैं, जिनकी निंदा में भी शब्द अपर्याप्त लगने लगते हैं। अपने धर्म की सेवा से कोई कानून नहीं रोकता और न यह कहता है कि किसी को रूला दो, उजाड़ दो, खून बहा दो। जो धर्मांध भारत में गला रेतने का विधान चलाना चाहते हैं, उनकी रूह तक डर पहुंचना चाहिए। यह तभी होगा जब केन्द्र और राज्य सरकारें सद्भाव व संविधान के हत्यारों को उनके माकूल अंजाम तक पहुंचाएंगी। हिंदू-मुस्लिम की बहस को गरमाने वाले अब समाज में शांति और सद्भाव को पलीता लगाने से बाज आएं। एक-दूसरे के धर्म, मान्यता और परम्पराओं का सम्मान करें।

उमेश प्रहलाद राव कोल्हे

उदयपुर (राज.) में नूपुर शर्मा के अवांछित बयान के समर्थन में पोस्ट करने वाले कन्हैयालाल साहू की जिस निर्मर्मता से गला काटकर हत्या की गई, उसकी देशभर में एक स्वर में कड़ी निंदा करते हुए हत्यारों को जल्द से फांसी पर लटकाने की मांग की गई है। यह घटना हैवानियत की पराकाष्ठा है। व्यस्ततम हाथीपोल बाजार की मालदास स्ट्रीट में सिलाई की दुकान करने वाले कन्हैयालाल को विभत्स तरीके से मारने वालों का दुस्साहस इससे समझ में आता है कि उन्होंने न केवल अपने पैशाचिक कृत्य का वीडियों बनाया, बल्कि बाद में एक और वीडियो जारी कर अपनी कायराना करतूत को सही ठहराते हुए प्रधानमंत्री तक को धमकी दे डाली। ऐसा काम मजहबी उन्माद से लबरेज कोई खूंखार आतंकी ही कर सकता है। केन्द्र व राज्य सरकारों को इस प्रकार की घटनाओं के पीछे मकसद को समझते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वहशी हत्यारों को जल्दी से जल्दी कठोरतम सजा मिले। यह सजा ऐसी हो, जो उन्माद से भरे उन सब तत्वों के लिए सबके बनें, जो सिर तन से जुदा करने को अपना मजहबी कृत्य समझने लगे हैं। सिर तन से जुदा करने की यह घिनौनी घटना महज एक नारा भर नहीं, बल्कि कबीलाई युग वाली मानसिकता है। आज के सभ्य समाज में ऐसी बर्बर मानसिकता के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। नूपुर शर्मा अपने विवादित व भावनाओं को आहत करने वाले बयान को लेकर स्पष्टीकरण देने के साथ माफी मांग चुकी थी और उन्हें भाजपा ने निलंबित भी कर दिया था। इसके अलावा पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर उनके खिलाफ कार्रवाई भी शुरू कर दी थी। उसके बाद इस तरह की घटना का होना यह साफ इशारा करता है कि मजहबी जिहादियों के साथ सख्ती से निबटने का समय आ गया है। कोई भी मजहब इस तरह की घृणित एवं विभत्स घटना को बर्दाश्त नहीं कर सकता। धर्म कभी भी इस हिंसक प्रवृत्ति का समर्थन नहीं कर सकता। मुस्लिम समाज के मजहबी-सियासी नेतृत्व को भी चेतना होगा। उसे सभ्य समाज को शर्मिंदा करने व देश के भाईचारे पर गहरी चोट करने वाली इस घटना की निंदा-भर्त्सना

करने के साथ समाज के बीच पनप रहे विषैले तत्वों को सही राह पर लाने की सार्थक पहल करनी होगी। उन्हें समझना होगा कि इस घटना के मायने क्या हैं और परिणाम क्या हो सकते हैं? इस घटना में राज्य सरकार ने त्वरित कार्रवाई शुरू की और राज्य में कानून व्यवस्था व शांति-सद्भाव कायम रखने के प्रभावी प्रयास किए हैं। जयपुर से वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के दल को भेजा गया। जिनमें दिनेश एम.एन. व श्रीनिवास राव जंगा जैसे अनुभवी अफसर थे। स्वयं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने शहर की स्थिति पर विचार विर्मश किया व कन्हैयालाल के घर जाकर परिवार को सांत्वना व सहयोग का आश्वासन दिया। इसके साथ ही केन्द्रीय जांच एजेंसी ने भी मोर्चा संभाला। इससे पूर्व जून के महीने में ही 21 तारीख को महाराष्ट्र के अमरावती नगर में एक दवा विक्रेता उमेश प्रहलाद राव कोल्हे (54) की गला रेत कर हत्या कर दी गई थी। हालांकि तब इस मामले को नफरती हत्या के नजरिए से नहीं देखा गया था और स्थानीय मीडिया और पुलिस ने इसे लूटपाट जैसी घटना बता डाला था। लेकिन उदयपुर में कन्हैयालाल की हत्या के बाद छानबीन की गई तो सामने आया कि इस दवा विक्रेता ने भी नूपुर शर्मा के विवादित बयान के समर्थन में सोशल मीडिया पर टिप्पणी की थी। इसी से उनकी हत्या की साजिश रची गई और हत्यारों ने इक्कीस जून की रात उन पर उस वक्त हमला कर दिया जब वे दुकान बंद कर घर लौट रहे थे। उदयपुर की घटना से संबंधित अब तक आठ लोग गिरफ्तार किए गए हैं, जबकि राज्य में मजहबी उन्माद फैलाने वालों को अजमेर दरगाह सहित अन्य स्थानों से दबोचा गया है। अमरावती की घटना में भी पांच लोग गिरफ्तार हुए हैं।

मामले की गंभीरता को देखते हुए केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने अमरावती घटना की जांच भी एनआइए को सौंप दी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि नफरती हत्याओं की इन घटनाओं ने देश को हिला दिया है। देखा जाए तो दोनों घटनाओं में कई समानताएं हैं। जैसे हत्या का कारण एक ही मसले पर उठा विवाद रहा। हत्यारों ने मारने का तरीका भी एक जैसा अपनाया। मारे गए दोनों लोगों ने निलंबित भाजपा प्रवक्ता के बयान का समर्थन किया था। जाहिर है, इसे लेकर समुदाय विशेष के लोगों में प्रतिक्रिया पनप रही होगी और योजनाबद्ध तरीके से लोगों को निशाना बनाने की तैयारी की गई होगी। उदयपुर की घटना में सामने आया कि दोनों हत्यारे पाकिस्तान के इशारे पर काम कर रहे थे। इनमें एक हत्यारा कई बार पाकिस्तान होकर भी आया। दोनों लोग लंबे समय से राजस्थान के कई जिलों में सक्रिय रूप से युवाओं को अपने नफरती अभियान में जोड़ने के काम में लगे थे। हैरानी की बात तो यह है कि पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी। हर जिले में पुलिस की स्थानीय खुफिया इकाई भी होती है। जैसा कि बताया गया है कि उदयपुर की घटना में लिप्त हत्यारे कई सालों से राष्ट्र और समाज विरोधी गतिविधियों में शामिल थे। इसलिए सवाल तो उठता ही है कि इतने समय तक पुलिस इससे अनजान कैसे रही? इन घटनाओं ने एक बार फिर पुलिस और खुफिया तंत्र की नाकामियों को रेखांकित किया है। अगर ये महकमे चुस्त-दुरुस्त रहें, जैसा की सरकारें दावा करती भी रहती हैं, तो ऐसी घटनाओं से बचा जा सकता है। राजनैतिक दलों और उनके नेताओं, प्रवक्ताओं-कार्यकर्ताओं व मीडिया को भी पूरी जिम्मेदारी से चलना होगा। हर उस बयान, टिप्पणी और स्थिति से दूरी रखनी होगी जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की भावनाओं को चोट पहुंचाती हो। अब भी समय है कि जिहादी और जहरीली सोच को रोकें। प्रशासनिक तंत्र लापरवाही त्यागे और बेखौफ आपराधिक मानसिकता पर कड़े प्रहार करे।

जिम्मेदार बने मुस्लिम समुदाय

उदयपुर में जिस तरह की बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय घटना हुई है, वह बहुत चिंताजनक है। समाज में लोगों को संवेदनशीलता रखनी चाहिए और धर्मांध होकर जो लोग ऐसी वारदातें कर रहे हैं, उनकी भर्त्सना की जानी चाहिए। उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि दूसरों को भी सबक मिले, लेकिन हर घटना के बाद केवल निंदा कर और दोषियों को सजा देकर ही इतिश्री नहीं होनी चाहिए। आज पूरे देश और समुदाय के लिए यह सोचने का समय है कि बढ़ती धर्मांधता को रोकने के क्या उपाय हो सकते हैं? अगर कोई कहे कि ऐसी घटनाएं प्रतिक्रियास्वरूप हो रही हैं, तो उससे पूछा जाना चाहिए कि बाकी देशों में फिर ऐसा क्यों हो रहा है? इस तरह की बातों की आड़ लेने का समय निकल गया है। *मुस्लिम व हिंदू समाज को समस्या को ठीक से समझने और अमल करने की जरूरत है, अन्यथा हालात और ज्यादा खराब होंगे। पूरे देश में माहौल मुस्लिम समाज के विरुद्ध होता जाएगा और इसके लिए समुदाय नहीं, बल्कि समुदाय के भीतर के कट्टरपंथी और दिशाहीन तत्व जिम्मेदार होंगे। इस कारण ऐसा हुआ, उस कारण वैसा जैसे बहाने निकालने की प्रवृत्ति उचित नहीं है। कोई ऐसी बातों को सुनना भी नहीं चाहता है।*

डॉ. एम.जे. खान *अध्यक्ष, इंडियन मुस्लिम्स फॉर प्रोग्रेस एण्ड रिफॉर्म्स*

Happy Independence Day

Dilip Galundia
Director

NPL

NANO POLYPLAST
PRIVATE LIMITED

A-104, 1st Floor, GLG Complex, Dr. Shurveer Singh Marg,
Fatehpura, Udaipur - 313004 (Rajasthan)) India
Ph.: +91 294 2452626/27, Mobile: +91 98290 95489
Fax: +91 294 2452005 Website: www.galundiagroup.com
E-mail: sales@galundiagroup.com, nanoplast@yahoo.co.in

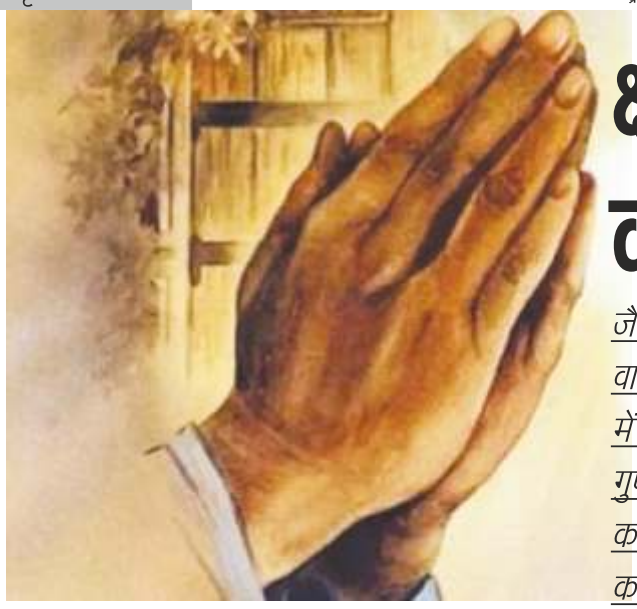

क्षमा की आराधना का महापर्व : संवत्सरी

जैन धर्म में पर्युषण का खास महत्व है। आठ दिन चलने वाले इस पर्व के अंतिम दिवस को संवत्सरी पर्व के रूप में मनाया जाता है। अहिंसा और समता, आत्मा के सहज गुण हैं। आत्मा के समीप बैठकर आत्मिक गुणों की साधना करने व आत्मा की चैतन्य ऊर्जा के प्रकटीकरण का माध्यम है – संवत्सरी।

क्षमा का पर्व, मैत्री का पर्व, दिल से वैर-विरोध मिटाकर प्रेम, प्यार भाईचारा बढ़ाने का पर्व है, संवत्सरी। इसका सीधा सा अर्थ है साल, जिसे आम भाषा में संवत कहते हैं। संवत् ही संवत्सरी है। संवत का सबसे पवित्र दिन, सबसे महत्वपूर्ण दिन संवत्सरी महापर्व है। आत्मशुद्धि की जो प्रक्रिया पर्युषण में अपनाई जाती है, उसे इस दिन पूर्णता प्राप्त होती है।

ग्रंथों में उल्लेख है कि संवत्सरी के दिन यानी भाद्रपद शुक्ल पंचमी के दिन प्रकृति में अहिंसा का और मनुष्य जीवन में करुणा का प्रवेश हुआ था। सभ्य-संस्कृति के प्रारंभ का दिन है यह। इस पर्व को साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएं समस्त जैन लोग ज्ञान, ध्यान, त्याग और तप के साथ मनाते हैं। साल भर में की हुई गलतियों और भूलों की आलोचना करते हैं। संवत्सरी तो साल में एक बार मनाई जाती है, पर क्षमा का भाव जीवन में हर पल रहना जरूरी है। संवत्सरी पर्व तो जैन लोग ही मनाते हैं, पर क्षमा प्राणी मात्र का धर्म है। क्षमा के बिना मन में शांति, परिवार में प्रेम, समाज में आपसी भाईचारा रह नहीं सकता। किसी के प्रति गलती हो गई है तो कब तक उसे अपने साथ बांधे रहेंगे। मुक्त होने का एक ही तरीका है, क्षमा। जब तक क्षमा का साथ नहीं होगा, मन अवसाद में और शरीर अस्पताल में रहेगा। पर्युषण पर्व आत्मा को निर्मलता और उत्कृष्टता की ओर ले जाने वाली यात्रा है। कर्मों को

संवत्सरी पर्व पर विशेष

साध्वी प्रेक्षा

आत्मा तक आने से रोकना और पहले आ चुके कर्मों की निर्जरा करना इस यात्रा को संभव बनाने वाले दो कदम हैं। कहा जाता है कि दो चीजें जितनी जल्दी हो सके, भूल जानी चाहिए। एक जो हमने दूसरों के साथ भलाई की है, किसी की मदद की है, किसी का सहयोग किया है। नहीं भूलोगे तो अहंकार आएगा। मदद करने के बदले में मदद पाने की इच्छा का जन्म होगा। फिर मदद नहीं मिली तो क्रोध आएगा। अच्छाई से विश्वास हटेगा। संबंध खराब होंगे और जीवन दुखमय लगने लगेगा और इसी कड़ी में दूसरी बात है कि किसी ने हमारे साथ बुराई की है, तो उसे भी भूल जाएं। जितना उस बात को याद रखेंगे, गांठ बढ़ती जाएगी। घाव बढ़ते जाएंगे, जितने बढ़ेंगे, उतनी ही पीड़ा बढ़ेगी। दूसरों के अवगुणों को क्षमा करेंगे तो उनमें पश्चाताप की भावना स्वयं भीतर से उत्पन्न होगी। जैसे मां बच्चे की हजार गलतियां सह कर भी बच्चे को प्यार करती है, ऐसे ही क्षमावान व्यक्ति दूसरे को अपनी सहनशक्ति व क्षमा से जीत लेता है। हिंसा का बदला हिंसा से पशु भी ले लेते हैं, पर हिंसा के बदले अहिंसा के रास्ते पर चलने के लिए आत्मबल की जरूरत होती है। असली ताकत क्षमा करने में लगती है। मन, घर, परिवार, समाज सब बदला लेने के लिए प्रेरित करेंगे, पर आप कहें कि 'मैं क्षमा भाव रखूंगा' अपनी गलती पर क्षमा मांगने से भी मुश्किल है क्षमा कर देना। अंतर्मन से क्षमा करना, सच्चे भाव से क्षमा करना। 'क्षमा वीरस्य भूषणं' क्षमा मांगना और क्षमा करना, दोनों ही वीरों के काम हैं।

जिस तरह प्रतिदिन घर की सफाई की जाती है, उसी तरह आत्मा की सफाई भी जरूरी है। बेहतर है कि हम दिनभर की गलतियों और भूलों की क्षमा आलोचना उसी दिन कर लें। जिस तरह त्योहार पर खास सफाई की जाती है, उसी तरह संवत्सरी के दिन आत्मा की खास शुद्धि करें। जाने-अनजाने हुई समस्त भूलों, पिछले समय से चले आ रहे वैर-भाव को कम करने की कोशिश करें। अपने अंतरतम की गहराई से न सिर्फ कुछ ही लोगों से, बल्कि प्राणी मात्र से क्षमा याचना करें।

क्षमा ही मन की शांति का मूल है। दान, पुण्य, सेवा, परोपकार, व्रत-उपवास सब कुछ क्षमा से ही सार्थक होता है। हम सभी में अपने जीवन को निर्मल और सुख-शांति से परिपूर्ण करने की शक्ति है। इसी आत्म शक्ति का उपयोग करें, क्षमा की आराधना करते हुए संवत्सरी महापर्व मनाएं।

UCWL UDAIPUR CEMENT WORKS LIMITED
PLATINUM SUPREMO CEMENT
PLATINUM HEAVY DUTY CEMENT
घर बनाएं
प्लैटिनम स्ट्रॉन्ग
मज़बूत निर्माण को चाहिए चैम्पियन की ताकत। निर्माण कार्यों की स्ट्रेंथ बढ़ाने के लिए, उदयपुर सीमेंट वर्क्स लिमिटेड पेश करते हैं प्लैटिनम हैवी ड्यूटी सीमेंट और प्लैटिनम सुप्रीमो सीमेंट। जो बने हैं आधुनिक तकनीक से और एक चैम्पियन की तरह हैवी ड्यूटी निर्माण करके, हर घर को बनाते हैं ज़बरदस्त स्ट्रॉन्ग।
PLATINUM HEAVY DUTY CEMENT
PORTLAND POZZOLANA CEMENT
PLATINUM SUPREMO CEMENT
PORTLAND POZZOLANA CEMENT
हेल्पलाइन न.: 1800 102 2407 www.udaipurcement.com facebook.com/platinumhdcement instagram.com/platinumhdcement

करेंगे या मरेंगे

स्वतंत्रता आंदोलन में त्याग और बलिदान की लंबी परंपरा और महात्मा गांधी ने आम जनता के साथ समरस होकर विश्वास और सामूहिक प्रयास का जो उदाहरण प्रस्तुत किया वह हमें आज भी विनम्रता और विश्वास से आगे बढ़ने की प्रेरणा तो दे ही सकता है। अगस्त क्रांति के बहाने यह समझ बना पाना उचित होगा कि जन आंदोलन जनता के इस्तेमाल करने से नहीं, बल्कि समाज की वैचारिक और नैतिक शक्ति से एकाकार और अनुप्राणित होकर ही लोकशक्ति खड़ी की जा सकती है। और यह संभव है।

वागीश कुमार झा

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन का जिक्र आते ही इसका प्रसिद्ध नारा 'करो या मरो' बरबस याद आता है। हमें मालूम है कि अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के बंबई अधिवेशन के दौरान भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव पारित हुआ था और उसी रात गांधी जी ने अपने भाषण में 'करो या मरो' का नारा दिया था। हम यह भी जानते हैं कि 9 अगस्त की सुबह-सुबह गांधी जी समेत सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे और बंबई के गोवलिया टैंक मैदान (अगस्त क्रांति मैदान) से आजादी का बिगुल बजा और 'करो या मरो' का नारा पूरे देश में क्रांतिकारी आंदोलन का नारा बन गया। गांधीजी को सरकार के दमन और नेताओं को गिरफ्तार किए जाने का पूर्वानुमान था और इसीलिए उन्होंने यह भी कहा था कि भारत छोड़ो आंदोलन में हर व्यक्ति सेनानी भी होगा और सेनापति भी। इतिहास की किताबों में यह विस्तार से बताया जाता है कि किस तरह देश के कोने-कोने में छात्रों -किसानों के स्वत: स्फूर्त आंदोलनों का एक अभूतपूर्व सिलसिला शुरू हुआ। लेकिन यह बात कहीं नहीं बताई जाती कि उस समय जब न अहर्निश टीवी चैनल थे, न दूसरे संचार माध्यम फिर गांधी का 'करो या मरो' का नारा जंगल की आग की तरह फैला कैसे? लेकिन इससे भी बड़ा आश्चर्य तब होता है जब यह पता चले कि गांधी ने 'करो या मरो' तो कभी कहा ही नहीं। यह कोई सनसनी खेज खबर नहीं है कि टीवी चैनल इसे ब्रेकिंग न्यूज की तरह उन्मत्त होकर प्रसारित करें। यह इतिहास का तथ्य है कि गांधी जी ने अपने भाषण में 'करो या मरो' नहीं बल्कि 'करेंगे या मरेंगे' कहा था।

'यह एक छोटा-सा मंत्र मै आपको देता हूं। आप इसे अपने हृदय-पटल पर अंकित कर लीजिए और हर श्वांस के साथ उसका जाप किया किजिए। यह मंत्र है 'करेंगे या मरेंगे। या तो हम भारत को आजाद करेंगे या आजादी की कोशिश में प्राण दे देंगे।' कुछ लोगों की यह सहज प्रतिक्रिया ह ो सकती है कि 'करो या मरो' और 'करेंगे या मरेंगे' एक ही बात है। पर वास्तव में इन दोनों में एक पूरी विश्व दृष्टि का फर्क है। इसे स्पष्ट करने के लिए ऊपर उद्भूत वक्तव्य की अंतिम पंक्ति को बदल कर देखें तो शायद समझ में आए। 'या तो भारत को आजाद करो या आजादी की कोशिश में प्राण दे दो'। जहां 'करेंगे या मरेंगे' में एक आत्मीय आह्वान है वहीं 'करो या मरो' में एक अधिनायक का आदेश। 'करेंगे या मरेंगे' में गांधी स्वय शामिल हैं। यह व्यक्तिगत प्रण है, एक सुंदर विश्वास जो सामूहिक मुक्ति की कामना का स्वप्न गढ़ता है। सबका अपना स्वप्न। 'करेंगे या मरेंगे' को 'करो या मरो' में बदलने के पीछे एक बड़ा सहज-सा कारण है जो एक बड़ी त्रासदी की ओर इंगित करता है। 'करेंगे या मरेंगे' का 'करो या मरो' में बदलने के पीछे के कारणों पर गांधी के इस ऐतिहासिक भाषण को फिर से छापते हुए 'गांधी मार्ग' जुलाई-अगस्त 2008 में इशारा किया गया है। इसके मुताबिक 8 अगस्त का यह भाषण पहले गांधी ने हिंदी से शुरू किया लेकिन सम्मेलन में अहिंदी भाषी सदस्यों की उपस्थिति को देखकर वे अंग्रेजी में बोलने लगे थे। आश्चर्य यह है कि इस भाषण की मूल प्रति उपलब्ध नहीं है। इसके अंग्रेजी अनुवाद में 'करेंगे या मरेंगे' स्वाभाविक रूप से 'डू ऑर डाई' हुआ। फिर जब इस अंग्रेजी का हिंदी में अनुवाद किया गया तो यह 'करो या मरो' हो गया जो आज तक प्रचलित है। लेकिन जब मूल भाषण है ही नहीं तो यह पता कैसे चला कि गांधी जी ने 'करेंगे या मरेंगे' कहा था-'गांधी मार्ग' लिखता है कि 9 अगस्त की सुबह पांच बजे अपनी गिरफ्तारी के ठीक पहले देश के नाम दिए गए संदेश के नीचे गांधी जी ने हाथ से हिंदी में लिख दिया था। 'करेंगे या मरेंगे'। इस प्रसंग में एक और रोचक तथ्य की ओर ध्यान दिलाना उचित होगा। भारत छोड़ो आंदोलन के शुरू होने के दस दिनों के अन्दर, 19 अगस्त 1942 को अमेरिका में एक कविता अंग्रेजी में प्रकाशित हुई थी। प्रसिद्ध अफ्रिकी-अमेरिकी कवि काउंटी कलन की इस का शीर्षक था, 'करेंगे या मरेंगे','डू ऑर डाई' नहीं, 'करेंगे या मरेंगे' (अनुवाद संलग्न) सोचने की बात यह है कि आखिर अंग्रेजी में लिख रहे इस अश्वेत संघर्ष के कवि ने 'करेंगे या मरेंगे' या अंग्रेजी अनुवाद न करके अपनी अंग्रेजी कविता का शीर्षक गांधी के शब्दों को %यों का त्यों रखा, जबकि हमारे देश के अनुवादक और इतिहासकार 'करो या मरो' क्यों लिखने लगें?

क्या यह केवल शब्दों के प्रति उदासीन, अनैतिहासिक रवैए का प्रश्न है, एक सहज, साधारण मानवीय भूल या यह किसी गंभीर वैचारिक विसंगति का परिणाम है? इतना तो तय है कि सदियों से प्रचलित इस गलती, या झूठ कहें-के पीछे गांधी के प्रति गहरे अविश्वास को अभिव्यक्ति है। भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगांठ पर गांधी के इसी ऐतिहासिक भाषण के प्ररिप्रेक्ष्य में गांधी की आंदोलन की समझ को स्पष्टता से देखा जा सकता है। 'जो बात मेरी आत्मा को कचोट रही थी, उसे जिन लोगों की सेवा का सौभाग्य मुझे अभी मिला था, उनके सम्मुख रखने में मैने बहुत समय ले लिया है। मुझे उन लोगों का नेता या सेना की भाषा में कहें तो, सेनापति कहा जाता है। लेकिन मैं अपनी स्थिति को उस नजर से नहीं देखता। किसी पर हुक्म चलाने के लिए मेरे पास प्रेम के अलावा और कोई अस्त्र नहीं है। आप उसमें मेरा हाथ केवल तभी बंटा सकते हैं जब मैं आपके सामने आपके सेनापति के रूप में नहीं बल्कि एक विनम्र सेवक के रूप में आऊं। और जो सबसे अ%छी सेवा करता है वही बराबर की हैसियत वालों में प्रमुख हो जाता है।' जिस वक्तव्य में इतनी स्पष्टता से अपने को सेनापति नहीं बल्कि एक विनम्र सेवक के तौर पर देखने की वकालत की गई हो, उसके बारे में करो या मरो जैसा एक सेनापतिनुमा आदेशात्मक अभिव्यक्ति स्वीकार कर लेना न केवल एक विकृत इतिहास दृष्टि का द्योतक है बल्कि गांधी की आंदोलन के प्रति जो अपनी एक विशिष्ट समझ है उसको भी नकार देने का अनायास प्रयास भी है। लेकिन बड़ा खतरा है। 'जीत की हार' का। आज देश में तथाकथित जन-आंदोलन की बाढ़ आई लगती है और गांधी बन जाने की व्यग्रता विभिन्न विकृतियों के साथ हमारे सामने प्रस्तुत है। स्वाभाविक रूप से इन प्रयासों को सम्मान का चोला पहनाने के लिए इनके पास जन-आकांक्षाओं से जुड़ने का कोई नया, ठोस या सृजनात्मक कार्यक्रम तो है नहीं, तो उन गरिमामयी शब्दों को ओढ़न-बिछाने का कार्यक्रम जारी है। तो, यह प्रयास 'जन-आंदोलन' के साथ-साथ 'क्रांतिकारी' कार्यक्रम और 'सत्याग्रह' से लेकर शुरू होने से पहले ही ऐतिहासिक कदम के रूप में महिमामंडित किए जाने लगते हैं। एक तरफइस बांझ व्यग्रता का मतलब और डिजाइन जनता को भी देर-सवेर समझ में आ ही जाता है। जन-आंदोलन के जिन तरीकों को गांधी ने एकनिष्ठ प्रतिबद्धता के साथ, आम लोगों के साथ एकाकार होकर, उनके सुख-दुख में शामिल होकर, उन्हें अपने सहयोगी के रूप में लेकर किया और इन शब्दों और मुहावरों में एतिहासिक प्रयासों से एक खास अर्थवत्ता प्रदान की, आज उन्हें लेकर हर संदेहास्पद व्यक्ति एक ब्रांडेड टी-शर्ट की तरह, गांधी की टोपी पर तरह-तरह की भोंडी इबारतें लिख कर पहन रहा है। उनके तथाकथित आंदोलनों का जो हस्त्र होना है वह तो हम देख ही रहे हैं, खतरा यह है कि आज जो सचमुच, ईमानदारी से ऐसे प्रयास करने में लगे हैं, उन्हें भी संदेह की नजर से देखा जाने लगेगा। लेकिन फिर गांधी का यही भाषण जैसे हिम्मत और विश्वास दे जाता है। 'पिछले वर्षों में हम यही सीखने की कोशिश करते आए हैं कि हमारे समर्थकों की संख्या बहुत कम हो और लोग हमारी हंसी उड़ाएं, तब भी हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।.... यह उचित ही है कि हम अपने विश्वास के अनुसार काम करने का साहस पैदा करें, क्योंकि ऐसा करने से आदमी का चरित्र ऊंचा होता है और उसका नैतिक स्तर ऊंचा होता है।'

यह जानकर आश्चर्य होता है कि गांधी ने 8 अगस्त को अपने भाषण की शुरूआत इन वाक्यों से की थी जिसे पढ़ कर लगता है कि वे शायद अधिवेशन में कम लोगों की उपस्थिति से विचलित हैं। वास्तविकता इसके ठीक विपरीत थी, और इस अधिवेशन में लोगों का हुजूम हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन में त्याग और बलिदान की लंबी परंपरा और महात्मा गांधी ने आम जनता के साथ समरस होकर विश्वास और सामूहिक प्रयास का जो उदाहरण प्रस्तुत किया वह हमें आज भी विनम्रता से और विश्वास से आगे बढ़ने की प्रेरणा तो दे ही सकता है। अगस्त क्रांति के बहाने यह समझ बना पाना उचित होगा कि जन आंदोलन जनता के इस्तेमाल करने से नहीं, बल्कि समाज की वैचारिक और नैतिक शक्ति से एकाकार और अनुप्राणित होकर ही लोकशक्ति खड़ी की जा सकती है। और यह संभव है।

अग्रवाल व खेतान ने दी ड्रेगन बोट

उदयपुर। उदयपुर में मेवाड़ बोट फेस्टिवल जल्दी ही शुरू होगा। यह बात राजस्थान ड्रेगन बोट चेयरपर्सन अजय अग्रवाल ने दी। उन्होंने कैनोइंग संघ की ओर से भी 5 लाख रू की लागत वाली दो ड्रेगन बोट प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि लेकसिटी में वाटर स्पोर्ट्स् को बढ़ावा देने के लिए खेलप्रेमी शशिकांत खेतान ने भी राजस्थान ड्रेगन बोट संघ को दो ड्रेगन बोट और 1 रेस्क्यू बोट उपलब्ध कराई है। अब संघ के पास 5 ड्रेगन बोट हो गई है।

समाजसेवी व खेल प्रेमी शशिकांत खेतान और ड्रेगन बोर्ट चेयरपर्सन अजय अग्रवाल।

आईएनसी उपाध्यक्ष डॉ. शर्मा का स्वागत

उदयपुर। इन्डियन नर्सिंग कौंसिल के उपाध्यक्ष बनने के बाद डॉ. जोगेन्द्र शर्मा के उदयपुर आगमन पर नर्सिंग फेडरेशन ऑफ उदयपुर के सदस्यों ने उनका 51 किलों फूलों की माला से स्वागत किया। इस अवसर पर हरीश राजानी, कमल पाहुजा, डॉ. आनंद गुप्ता व सदस्यों ने उनकी नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की। डॉ. शर्मा वर्तमान में राजकीय नर्सिंग कॉलेज जयपुर के प्राचार्य हैं। शर्मा का राजसमंद में श्रीनाथ कॉलेज ऑफनर्सिंग में भी स्वागत किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. राजकमल जैन, सुनील दाधीच, दिलीप गर्ग, सेवाराम सैनी, जोगेन्द्र सिंह आदि उपस्थित थे। श्रीनाथ जी की छवि प्रदान कर उनका उपरना व पाग पहना कर सम्मान किया गया। उल्लेखनीय है कि उत्तर भारत से कौंसिल के उपाध्यक्ष पर जोगेन्द्र शर्मा के रूप में कोई पहली बार नियुक्त हुआ।

छाबड़ा अध्यक्ष, त्रिवेदी सचिव

उदयपुर। रोटरी क्लब मेवाड़ उदयपुर की सत्र 2022-23 की वार्षिक कार्यकारिणी में महेंद्र छाबड़ा अध्यक्ष एवं नरेश त्रिवेदी को सचिव मनोनीत किया गया। नव नियुक्त अध्यक्ष एवं सचिव ने हंसराज चौधरी, योगेश पगारिया, चेतन जैन एवं मुकेश चौधरी के परामर्श से कार्यकारिणी का गठन किया।

बामणिया ने संभाला कार्य भार

उदयपुर। गत दिनों उदयपुर में जयपुर से स्थानान्तरित होकर आए पी.एल. बामणिया ने प्रादेशिक परिवहन अधिकारी का पदभार संभाल लिया। उन्होंने कहा कि परिवहन कार्यालय का काम पूरी पारदर्शिता और समय पर हो, इसका भरपूर प्रयास करेंगे।

वत्स अकेडमी की डूंगरपुर शाखा रिलांच

डूंगरपुर/ वत्स अकेडमी की स्थानीय शाखा की गत माह रीलॉन्चिंग की गई। इस मौके पर मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी अमृत लाल कलाल, कलाल समाज अध्यक्ष चिमन लाल कलाल, उप जिला शिक्षा अधिकारी प्रकाश चंद्र शर्मा एवं वत्स अकेडमी ग्रुप के चेयरमैन डीएल पाटीदार ने कार्यालय का शुभारंभ किया। उल्लेखनीय है कि वत्स के डायरेक्टर भूपेन्द्र कलाल ने बताया कि अकेडमी पिछले 15 वर्ष से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही है। हजारों विद्यार्थियों को सभी प्रकार के कंपीटीशन कोर्स में प्रवेश दिया जाता है।

आर के जैन ने लिया सीसीएफ का चार्ज

उदयपुर। भारतीय वन सेवा के वरिष्ठ अधिकारी सीएफ आरके जैन ने गत दिनों सीसीएफ(मुख्य वन संरक्षक) का अतिरिक्त चार्ज लिया। जैन ने बताया कि वर्षा ऋतु में वृक्षारोपण कार्य समय पर कराने, वन सुरक्षा पर्यावरण संरक्षण आदि कामों पर विशेष फोकस किया जाएगा। इस दौरान डीएफओ संजय गुप्ता डीएफओ चंद्रपाल सिंह सहित विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे। हाल में भारतीय वन सेवा में हुए तबादलों में सीसीएफआरके सिंह को भरतपुर भेज दिया गया था। इसके बाद से सीसीएफका पद रिक्त था।

विवि के नाम 'वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकार्ड' भी

प्रो. सारंगदेवोत को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एसएस सारंगदेवोत को यूनिवर्सिटी मलेशिया केलंतन, मलेशिया और डीएचएस फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान शिक्षा में नवीन पद्धतियों और नवाचारों का अन्वेषण कर उनके संवर्धन में अनुपम अवदान हेतु प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि इसके साथ ही विश्वविद्यालय ने एक ओर ख्याति अर्जित की है। विश्वविद्यालय का नाम वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकार्ड में भी दर्ज हुआ है। यह उपलब्धि

कोरोनाकाल की लॉकडाउन अवधि में ऑनलाइन क्विज करवाकर सर्वाधिक प्रतिभागियों को जोड़ने पर मिला है। प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि इस अवधि में दो क्विज का आयोजन करवाकर 4481 प्रतिभागियों को जोड़ा गया था। इस क्विज को वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकार्ड्स ने असाधारण रिकॉर्ड्स में सूचिबद्ध और सत्यापित किया है। साथ ही रिकार्ड को मान्यता प्रदान कर रिकार्ड्स के अधिनिर्णायक के. कौशिक द्वारा गोल्ड मेडल व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। क्विज दो भागों में हुई। पहले भाग में विद्यालयों के पांचवी से आठवीं कक्षा तथा दूसरे में उ%च कक्षाओं, महाविद्यालय एवं विद्यालयों के शिक्षकों व सामान्यजन हेतु था। इस अवसर पर डॉ. पारस जैन, नासिर, डॉ. मनीष श्रीमाली, डॉ तरूण श्रीमाली, डॉ. मुनेश त्रिवेदी, डॉ. प्रकाश शर्मा, कृष्णकांत कुमावत, डॉ. नजमुद्दीन, मुर्तजा, रोशन गर्ग व विकास डांगी उपस्थित थे।

लॉकडाउन की हर शाम

डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव'

अपनी टूटी हड्डियों की
कलम बनाकर
खून के अक्षरों से
एक चिट्ठी लिखता हूँ..... ।
लॉकडाउन की हर शाम
कुछ देनें का झूठा वादा कर
डाकिये से मिलकर
उसे अपने ही हाथ से
डाक की थैली में
डाल आता हूँ..... ।
लॉकडाउन की हर शाम
भविष्य के ख्यालों को
फटी हुई चप्पल से कुचलकर
डाकखाने में
दाखिल हो जाता हूँ..... ।
लॉकडाउन की हर शाम
उन सभी सजे हुए सपनों को
मरे हुए सांपों की तरह
प्रतीक्षा के लम्बे बाँसों से
कुचल देता हूँ..... ।
लॉकडाउन की हर शाम
यंत्रों सा रेंगता बन्द किवाड़ों
की तरह बहरे
कानों तक पहुँच जाता हूँ..... ।
लॉकडाउन की हर शाम
मन के गुब्बारे को
किसी महफ्ल में
नाचते हुए देखता हूँ-
जहां से वह गुम हो जाता है..... ।
लॉकडाउन की हर शाम
पूरे दिन की दास्ताँ, हर शाम
कहने बैठता हूँ, जब-
आसमान के टिमटिमाते सितारे
डूबकर अँधेरे में बिखर जाते हैं!!
(दजब शहरों में लॉकडाउन और जिन्दगी घरों में
बंद थी। तबकी मन: स्थिति)

रणजीतसिंह सरूपरिया
प्रवीन सरूपरिया
दिव्य सरूपरिया

94140 59898
76656 61567
77422 88355

KKS

कन्हैयालाल खुबीलाल सरूपरिया (ज्वेलर्स)

An Exclusive Showroom of Gold Diamond & Silver Ornaments

मालदास स्ट्रीट कॉर्नर, बड़ा बाजार
उदयपुर (राज.) 313 001

समर शंख

प्रत्यूष

उपराष्ट्रपति चुनाव

पक्ष के धनकड़, विपक्ष की अल्वा आमने-सामने

उमेश शर्मा

वैंकया नायडू का 11 अगस्त को कार्यकाल पूरा होने के बाद उपराष्ट्रपति पद के लिए 6 अगस्त को चुनाव होने हैं। इसके लिए सत्तापक्ष व विपक्ष के उम्मीदवारों के रूप में क्रमशः प. बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनकड़ (70) व राजस्थान की पूर्व राज्यपाल मार्गरेट अल्वा (82) ने नामांकन दाखिल किए हैं। सत्तापक्ष (एनडीए गठबंधन) के प्रत्याशी धनकड़ के नाम की घोषणा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने 16 जुलाई को दिल्ली के पार्टी मुख्यालय में हुई संसदीय बोर्ड की बैठक के बाद की जब कि मार्गरेट अल्वा को विपक्ष ने अपना उम्मीदवार बनाया है। इसकी घोषणा अपने आवास पर 17 विपक्षी दलों की बैठक के बाद 17 जुलाई को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद् पंवार ने की। उपराष्ट्रपति चुनाव में अपने उम्मीदवार को जिताने के लिए भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए (राजग) के पास पर्याप्त संख्या बल है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति चुनाव की तरह भाजपा प्रत्याशी को कुछ गैर कांग्रेसी विपक्षी दलों का समर्थन मिलने के साथ ही क्रास वोटिंग की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

धनकड़ का जन्म 18 मई 1953 को झुंझुनू जिले के गांव किठाना (चिड़ावा) में गोकुलराम जाट के घर हुआ। धनकड़ ने अपने गांव के चौक के पास ही स्थित सरकारी स्कूल से पांचवी तक पढ़ाई की । इसके बाद नजदीकी गांव घरड़ाना से आठवीं पास की। उनके पुराने दोस्त बताते हैं कि घरड़ाना स्कूल तक साधन नहीं जाता था। इस कारण पैदल ही स्कूल जाते थे।

राजस्थान विवि में पढ़ाई: सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठ अधिवक्ता रहे धनकड़ ने उच्च शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पूरी की। एलएलबी करने के बाद वे वकालत करने लगे। राजस्थान हाईकोर्ट में वर्षों तक वकालत की तथा 1986 में राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे। वे केंद्रीय मंत्री भी रह चुके हैं।

समाज सेवा से सम्बंद्ध: धनकड़ सदैव समाजसेवा से जुड़े रहे। उन्होंने विभिन्न सामाजिक संगठनों और ट्रस्टों से जुड़कर समाज सेवा की। राजस्थान ओलम्पिक एसोसिएशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। जाटों को ओबीसी दर्जा दिलाने के लिए इन्होंने काफी प्रयास किए।

दूसरे नंबर पर धनखड़: धनकड़ तीन भाइयों में दूसरे नंबर पर आते हैं। उनके बड़े भाई कुलदीप धनकड़ कंस्ट्रक्शन कंपनी चलाते हैं। दूसरे नंबर पर स्वयं जगदीप तथा सबसे छोटे भाई रणदीप धनकड़ हैं जो आरटीडीसी चेयरमैन भी रह चुके हैं।

भैरोंसिंह भी शेखावाटी से ही थे: शेखावाटी से भैरोंसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति रह चुके हैं। धनकड़ उपराष्ट्रपति पद के दूसरे ऐसे प्रबल दावेदार हैं, जो शेखावाटी से हैं। उपराष्ट्रपति पद के लिए विपक्षी दलों ने भी राजस्थान में राज्यपाल रही मार्गरेट अल्वा को ही उम्मीदवार घोषित किया है।

सुखद संयोग

'देश की आज़ादी के बाद यह पहली बार ऐसा सुखद संयोग है कि लोकसभा और राज्यसभा दोनों के अध्यक्ष राजस्थान से होंगे।' यह बात राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पिछले दिनों जयपुर में कही। उनके इस बयान से साफ है कि उन्होंने उपराष्ट्रपति पद पर जगदीप धनकड़ की जीत तय मान ली है। उल्लेखनीय है कि लोकसभा अध्यक्ष पद पर कोटा से निर्वाचित ओम बिरला आसीन हैं, तो झुंझुनू के किठाना गांव के रहने वाले धनकड़ राज्यसभा के अध्यक्ष के रूप में अगस्त के दूसरे सप्ताह में कार्यभार ग्रहण कर लेंगे। गहलोत ने कहा कि लड़ाई उम्मीदवार को लेकर नहीं होकर विचार धारा की भी है।

अल्वा का सफ़र

मार्गरेट अल्वा राजीव गांधी और पीवी नरसिम्हा राव की सरकार में कैबिनेट मंत्री रह चुकी हैं। राजीव कैबिनेट में अल्वा संसदीय कार्य और युवा विभाग की मंत्री रहीं, जबकि राव की सरकार में पब्लिक और पेंशन विभाग की मंत्री रही हैं। वे कर्नाटक के मैंगलूर शहर की मूल निवासी हैं।

2008 में कांग्रेस ने उन्हें पार्टी विरोधी बयान के कारण महासचिव पद से हटा दिया था। अल्वा उस वक्त महाराष्ट्र, मिजोरम और पंजाब-हरियाणा की प्रभारी थीं। हालांकि गांधी परिवार से नजदीकी रिश्ते होने की वजह से बाद में उन्हें उत्तराखंड में राज्यपाल बनाकर भेजा गया।

चार राज्यों की राज्यपाल रही : अल्वा गुजरात, राजस्थान, गोवा और उत्तराखंड की राज्यपाल रह चुकी हैं। वे उत्तराखंड की पहली महिला राज्यपाल रही हैं। 2009 से 2012 तक उत्तराखंड के राज्यपाल के रूप में काम कर चुकी हैं। इसके अलावा राजस्थान में 2012 से 2014 तक राज्यपाल रही। इसी दौरान उन्हें गुजरात और गोवा का प्रभार भी मिला था।

मीठे पानी की सबसे बड़ी मछली की खोज

दुनिया की सबसे बड़ी साफपानी की मछली की खोज में लगे जीव विज्ञानी जेब होगन को सफ्लता मिल गई है। उनकी यह खोज अब पूरी हो गई है। हाल ही में उनकी टीम ने एक विशालकाय स्टिंगरे मछली की खोज की, जो साफपानी में मौजूद अब तक की सबसे बड़ी मछली है। दरअसल, यह मछली कंबोडिया के मेकांग नदी के मटमैले पानी से निकाली गई है। मछली की लंबाई 13 फीट है और इसका वजन 300 किग्रा है। यह मछली 2005 में थाईलैंड में पकड़ी गई विशाल कैटफिश से 6.8 किग्रा %यादा वजनी है। डॉ. होगन ने कहा कि यह मीठे पानी की अब तक की सबसे बड़ी मछली है। इस प्रजाति की स्टिंगरे मछली बेहद खतरनाक होती है। इनकी पूंछ बेहद विषैली होती है जो लगभग एक फुट की लंबाई तक पहुंच सकती है। हालांकि ये मछली मनुष्यों के लिए खतरनाक नहीं होती। आम तौर पर यह मछली एक सस्ते प्रोटीन स्त्रोत के रूप में बाजार में मिलती है। डॉ. होगन दक्षिण एशिया में नदी की जलीय विविधता की रक्षा के लिए काम करने वाले वंडर्स ऑफ द मेकांग प्रोजेक्ट के सदस्य हैं। मछुआरों ने जब इस मछली को पकड़ा तो उन्होंने सबसे पहले डॉ. होगन को सूचना दी। उन्होंने बताया कि उनके जाल में एक बड़ी स्टिंगरे मछली फंसी है। आज तक किसी ने इससे पहले इतनी बड़ी मछली नहीं देखी। इस मछली के मिलने से एक महीने पहले ही एक और बड़ी स्टिंगरे मछली मिली थी, जिसका वजन 181 किग्रा था।

विद्या वारिधि बुद्धि विधाता

विघ्न चाहे धन का हो, परिवार में कलह-क्लेश का या कोई और, गणेशजी तत्काल बुद्धि देकर समस्या का निवारण करते हैं। वे विघ्नहर्ता, सुखकारी, समृद्धिदायक होने के साथ ही हर पूजा में प्रथम पूज्य हैं। प्रस्तुत है, गणेश चतुर्थी पर ***डॉ. आशुतोष झा*** *का विशेष आलेख*

'ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म' श्रुतियों में ॐ को ब्रह्म रूप माना है और ब्रह्म के स्वरूप में ॐ स्वयं श्री गणेश है। ॐ का चन्द्र बिंदु मोदक (लड्डू) है। मात्रा सूंड है। ऊपर वाला भाग श्री गणेश का मस्तक और नीचे का भाग उदर है। श्री गणेश परब्रह्म हैं, और ॐ इन्हीं का द्योतक है। श्री गणेश में अच्युत (ब्रह्मा), विष्णु और महेश तीनों को शक्ति समन्वित है। अत: शक्तित्रयी की प्राप्ति में श्रीगणेश परम सहायक हैं।

21 स्वरूप और 21 दूर्वा

पुराणों में गणेश के कर्मों और गुणों के आधार पर उनके 21 स्वरूप में 21 नामों की गणना होती है, जिसके आधार पर 21-21 प्रकार के पत्ते, मोदक, दूर्वा व अक्षत आदि पूजा में चढ़ाएं जाते हैं। 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो में भक्त्या प्रयच्छते' के अनुसार अत्यंत निर्धन व्यक्ति हो, प्रतिमा क्रय करने का सामर्थ्य न हो तो स्वस्तिक बनाकर, एक चुटकी चावल रखकर उस पर मौली लपेटी हुई सुपारी रख कर 'सुपारी गणपति' की पूजा करे। इससे पुराने रोगों का नाश और सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। नारियल का बड़ा हिस्सा अपनी ओर तथा पूंछ वाला भाग भगवान की ओर करके चढ़ाना चाहिए। कहा भी गया है कि यथोत्पन्नं तथा देयम।

सूंड का महत्व

छह भुजाओं वाले पीत वर्ण के श्रीगणेश जहां समृद्धि के प्रतीक हैं, वहीं चार भुजाओं वाले रक्तवर्ण श्री गणेश विघ्न विनायक, श्वेत वर्ण युक्त ज्ञान, नीलवर्ण युक्त उच्च पद, प्रतिष्ठा, तंत्र-मंत्र सिद्धि के कारक है। श्री गणेश की दाहिनी और मुड़ी हुई सूंड पिंगला नामक नाड़ी स्वर की द्योतक है जो कि सूर्य विषयक दुष्प्रभावों को कम करती है। जबकि बायीं और मुड़ी हुई सूंड चन्द्र के दुष्प्रभावों, जलीय रोग आदि का ह्रास करने में सहायक तथा इड़ा नामक नाड़ी स्वर की प्रतीक है। घर में स्थापना के लिए बांयी ओर की सूंड वाले गणपति समस्त कामनाओं के सिद्धि प्रदाता होने के कारण सिद्धि विनायक कहे जाते हैं। विभिन्न कामना परक भेद से वामावर्तित सूंड वाले गणेश घर में पूजित किए जाते हैं।

छोटी मूर्ति का हो वास

वास्तुदोष शमन, सुख-शांति और समृद्धि के लिए घर में हथेली भर के श्रीगणेश की स्थापना उत्तम है। व्यापार स्थान को छोड़ अन्य स्थानों पर बैठी हुई प्रतिमा की स्थापना की जानी चाहिए। रक्तगंधानुलिप्त रक्तपुष्पै: सुपूजितम (गणपति अथर्वशीर्ष) के अनुसार श्रीगणेश की स्थापना हेतु चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर, उस पर चावल रख श्रीगणेश की स्थापना करनी चाहिए तथा लाल, चंदन, पुष्प, दूर्वा, मोदक आदि अवश्य समर्पित करने चाहिए। श्रीगणेश ने जब अनलासुर को निगल लिया तब श्रीकश्यप जी ने उनके पेट की जलन को शांत करने के लिए इक्कीस गांठों वाली दूब श्री गणेश को खिलाई थी। तब से उन्हें 21 गाठों वाली दूब चढ़ाई जाने लगी।

गूढ अर्थ लिए है मोदक

मोदक व श्रीफल इन्हें अत्यंत प्रिय है। इन दोनों की समान विशिष्टता है कि ये बाहर से कठोर किंतु अंदर से नर्म व मधुर होते हैं। श्रीगणेश गणों के मुखिया हैं। वे इन दोनों वस्तुओं को सदैव अपने साथ रखकर यही बताना चाहते हैं कि मुखिया को बाहर से सख्त और भीतर से नर्म व मधुर होना चाहिए। मोद का अर्थ है आनंद तथा क का अर्थ है कर्ता, श्रीगणेश आनंदकर्ता हैं, इसलिए वे मोदक धारण करते हैं।

HAPPY INDEPENDENCE DAY

Parmeshwar Agarwal
Director

PREM
MARBLES PVT. LTD.

ELEGANCE ENGRAVED ETERNAL

Marine Black Cherry Gold Marine Beige

NH 8, Amberi, Udaipur - 313004 Rajasthan, India
M : +91 8890473333 / 8003834567
Email : stone@premmarbles.com
Website : www.premmarbles.com

महिला क्रिकेट में मिताली का अहम योगदान

उर्वशी शर्मा

महिला क्रिकेट की महानतम खिलाड़ियों में से एक मिताली राज (39) ने इस वर्ष 8 जून को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के सभी प्रारूपों से सन्यास ले लिया। इस दिग्गज भारतीय बल्लेबाज ने 23 साल लम्बे अपने करियर के दौरान महिला क्रिकेट को लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने 333 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और 10,868 रन उनके खाते में है। मिताली द्वारा क्रिकेट से सन्यास लेने के साथ ही इस खेल विधा का एक सशक्त दौर इतिहास में दर्ज हो गया।

26 जून 1999 को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाली मिताली ने 23 वर्ष क्रिकेट की बेहतरीन सेवा कर देश को गौरवान्वित किया। उन्हें कभी किसी विवाद में पड़ते नहीं देखा गया। दूसरे तमाम चमकदार क्षेत्रों से ध्यान हटाकर उन्होंने अपना सर्वस्व क्रिकेट को ही दिया। अगर हम कहें कि भारतीय क्रिकेट उनका ऋणी है, तो गलत नहीं होगा।

पुरुष क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर ने 24 साल तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेला तो महिला क्रिकेट में मिताली ने भी लगभग इतना ही समय गुजारा। तेंदुलकर की ही तरह मिताली ने भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाई और भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। मिताली के पिता दुरई राज वायुसेना में कार्यरत थे। तमिल परिवार में जन्मी मिताली तीसरी कक्षा में भरतनाट्यम सीखने लगी थीं। सिकंदराबाद की जोंस क्रिकेट अकादमी में अपने भाई और पिता के साथ जाकर मिताली बाउंड्री के पास अपना होमवर्क करती रहतीं और कभी मन करता तो बल्ला उठाकर खेल भी लेती थीं।

अकादमी के कोच की पारखी नजर उन पर पड़ी और मिताली ने क्रिकेट के पैड पहनकर हाथ में बल्ला थाम लिया।

अक्सर उनकी परिपक्व तकनीक, क्लासिक (शास्त्रीय) शाट्स और कमाल के फुटवर्क की चर्चा होती है। सुबह पांच बजे मैदान पर अभ्यास के लिए पहुंचने वाली मिताली आठ बजे तक क्रिकेट खेलती और साढ़े आठ बजे स्कूल जाती थी। स्कूल के बाद फिर अभ्यास और घंटों अभ्यास। स्कूल में कभी उनके ग्रेड नहीं गिरे और ना ही कभी होमवर्क अधूरा रहा। उस उम्र में जब साथी लड़के-लड़कियां पढ़ाई, पार्टी, घूमने-फिरने में मसरूफ रहते, मिताली मैदान पर पसीना बहा रही होती थी। उनके बचपन और लड़कपन की यादों में मैदान, धूल, बल्ला, पसीना और पिच की यादें ही शुमार हैं।

यह उस कठिन अभ्यास की ही देन है कि बल्लबाजी का शायद ही कोई रेकॉर्ड होगा, जिसे उन्होंने नहीं छुआ। एक दिवसीय क्रिकेट में 50 से अधिक रन के औसत से रेकॉर्ड 7,805 रन से लेकर लगातार सात

अर्धशतक तक, महिला क्रिकेट में ऐसे कई कीर्तिमान मिताली के नाम दर्ज है। यह इसलिए भी खास हो जाता है कि उन्होंने महिला क्रिकेट में तब पदार्पण किया था, जब पुरुष क्रिकेट के दीवाने इस देश में किसी लड़की के क्रिकेट खेलने को हास्यास्पद माना जाता था। रेलवे के दूसरे दर्जे से लेकर हवाई जहाज की बिजनेस क्लास तक के अनुभव को मिताली ने जीया है और यह उनका जीवट था कि उन्होंने हालात के बदलने का इंतजार किया और डटी रहीं। फिर बीसीसीआई ने 2006 में महिला क्रिकेट को अपने प्रबंधन में लिया, लेकिन केन्द्रीय अनुबंध 2016 में मिले। मिताली की कप्तानी में भारतीय टीम 2017 के विश्वकप फाइनल में पहुंची, लेकिन लार्ड्स पर इंग्लैंड से नौ रन से हार गई और विश्वकप जीतने की मिताली की ख्वाहिश अधूरी ही रह गई। उनका खेल अपने आप में संदेश है कि कभी हार मत मानो और खुद को हमेशा बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार रखो। विशेष रूप से उनकी फिटनेस की तुलना कपिल देव की फिटनेस से हो सकती है। पुरुष क्रिकेटरों से अगर तुलना करें, तो मिताली से एक साल बाद युवराजसिंह और जहीर खान ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में

'इंडिया की नीली जर्सी पहनने की यात्रा पर एक छोटी लड़की के रूप में निकली थी। देश का प्रतिनिधित्व करना ही अपने आप में सर्वोच्च सम्मान है। प्रत्येक घटना ने मुझे कुछ अनोखा सिखाया और पिछले 23 वर्ष मेरे जीवन के सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण और आनंददायक रहे हैं।...तिरंगे का प्रतिनिधित्व करने के लिए मुझे जो अवसर मिला है, मैं उसे हमेशा संजोकर रखूंगी। मैं क्रिकेट से जुड़ी रहूंगी और इसकी बेहतरी के लिए योगदान करती रहूंगी। आप सभी के प्यार और समर्थन के लिए धन्यवाद।'

मिताली राज

पदार्पण किया था, जहीर 2015 में ही रिटायर हो गए और युवराज साल 2019 में। एक लड़की के लिए इतना लंबा खेल जीवन भारत जैसे देश में विरल ही है और इसे अपनी सेहत पर ज्यादा ध्यान, निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प से ही पाया जा सकता है।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

Harish Arya
Director
Mob.: 94141-66102

Suresh Arya
Director
Mob.: 76659-45223

Sudhanshu Arya
Director
Mob.: 97728-85254

ARYAS PUBLISHERS DISTRIBUTORS (P) LTD.

SINCE 1973

APDPL

2-D, Hazareshwar Colony, Near Court Choraha
Udaipur (Raj.) - 313 001 Tel.: 0294-2421087, 93516-85460
E-mail: apdpl.2012@gmail.com
www.facebook.com/APDPL

सखियों ने किया पार्वती का हरण

कल्पना नागदा

हरितालिका भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाने वाला एक खास पर्व है, इसके तहत महिलाएं खासकर विवाहिताएं एवं कुंवारी कन्याएं भगवान भोलेनाथ यानी शंकर की उपासना करती हैं और इसके बदले उन्हें मन वांछित फल मिलता है। गंगा के तट पर निर्मित दर्जनों घाट पर तीज की पूजा के लिए गौरी मंदिर हैं। जहां गौरी मंदिर नहीं है वहां तीज की पूजा यह मानकर शिवलिंग के पास ही होती है कि भगवान शिव की अर्द्धांगिनी 'गौरी' उनके आसपास ही रहती हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव के भाल पर सुशोभित बालेंदु (शुक्ल पक्ष का शशि चंद्रमा) पश्चिमी आकाश में उदित होता है। इसी शुभ एवं मंगलमयी बेला में शिव की पूजा करने पर मनोकामना की पूर्ति होती है। इस त्यौहार को हरितालिका भी कहा गया है। हरितालिका नाम पड़ने के पीछे किवंदती यह है कि एक बार पार्वती को उनकी सहेलियों ने ही हर लिया था। हरितालिका को लेकर हिंदू ग्रंथों में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। उनमें से सबसे ज्यादा प्रचलित कथा के अनुसार पर्वतराज हिमालय के यहां जन्म लेने वाली गिरिजा यानी पार्वती जब कुंवारी थी तभी से वह पति के रूप में भगवान शंकर को चाहती थी। पार्वती ही पूर्व जन्म में सती थी। शंकर द्वारा कुपित होकर अपनी तीसरी आंख खोल देने से कामदेव के साथ भस्म हुई सती ने हिमालय के यहां जन्म लिया। सती दूसरे जन्म में भी भगवान शिव की जीवनसंगिनी बनना चाहती थी लेकिन महर्षि नारद ने हिमालय को भ्रमित कर दिया और बेटी का विवाह भगवान विष्णु से करने की सलाह दी। गिरिराज इसके लिए तैयार भी हो गए। इस कारण पार्वती बहुत दुखी: रहने लगी थी।

एक दिन सखियां ही परिवार से दूर कर पार्वती को हरण करके बहुत दूर जंगल में ले गई। वहीं एक नदी के किनारे पार्वती ने बालुका का शिवलिंग बनाया और बिल्वपत्रादि से उसकी पूजा की और रात्रि जागरण किया। पार्वती की पूजा से शंकर जी बहुत प्रसन्न हुए और प्रकट होकर उन्हें उनके मांगने पर मन माफिक पति पाने का वरदान दे दिया। जब शिव को यह पता चला कि पार्वती तो उन्हीं को पतिरूप में चाहती हैं तो अपने वरदान की पूर्णता के लिए उन्हें पार्वती से ब्याह करना पड़ा। हिंदू मान्यताओं के अनुसार तीज मनाने की पौराणिक परंपरा तभी से चली आ रही है। काशी में यह व्रत एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। यहां मिट्टी के शंकर और पार्वती का संयुक्त विग्रह निर्मित कर पूजा जाता है।

***भाद्रपद** की शुक्ल तृतीया को हस्त नक्षत्र होता है। इस दिन भगवान शिव और पार्वती (गौरी शंकर) का विशेष पूजन किया जाता है। इस व्रत को कुमारी तथा सौभाग्यवती स्त्रियां करती हैं। लेकिन शास्त्रों में इसके लिए संधवा-विधवा सबको आज्ञा है। इस दिन स्त्रियों को चाहिए कि वे व्रत का संकल्प करके घर में कदली पुष्प-पल्लव आदि से मण्डप सुशोभित कर पूजा सामग्री एकत्रित करें। इस व्रत को करने वाली स्त्रियां पार्वती के समान सुखपूर्वक पतिरमण करके शिवलोक को जाती हैं। इस दिन स्त्रियों को निराहार रहना होता है। संध्या समय स्नान करके, शुद्ध व उज्जवल वस्त्र धारण कर मिट्टी से पार्वती तथा शिव की प्रतिमाएं बनाकर उनकी संपूर्ण सामग्री से पूजा करनी चाहिए। शिव-पार्वती मंदिर अथवा घर में ही प्रात:, दोपहर और सांय पूर्ण मनोयोग से पूजा की जाय। सांयकाल स्नान करके विशेष पूजा करने के पश्चात व्रत खोला जाता है। सुहाग की सारी वस्तुएं पार्वती को चढ़ाने का विधान इस व्रत का प्रमुख लक्ष्य है। शिवजी को धोती तथा गमछा चढ़ाया जाता है। सुहाग सामग्री किसी ब्राह्मणी तथा धोती और अंगोछा किसी ब्राह्मण को देकर तेरह प्रकार के मीठे व्यंजन सजाकर रूपए सहित सास अथवा परिवार की वरिष्ठ सदस्या से को देकर उनका चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लिया जाता है। पूजन-आराधना के उपरान्त कथा सुननी चाहिए। यह व्रत करने से स्त्रियों को सौभाग्य प्राप्त होता है। पूजनोपरान्त ब्राह्मणों को मधुर भोजन कराकर इस व्रत का पारण करना होता है।*

Happy Independence Day

Mayank Kothari
Director
Cell: 9214436647

ARIHANT
Mahila Teachers Training College

- To serve the objective of excellence, coupled with equity and social justice, in the field of Teacher Education.
- To prepare Teachers who serve as catalyst of a nation wide programme of school improvement.
- To provide good quality modern education including a strong component of culture inculcation of values, awareness of the environment, adventure activities and physical education to the would-be teachers.
- To serve as focal point for improvement in quality of school education in general through sharing of experiences and facilities.

Aanand Pura, B/H Old Alcobacs Factory, Airport Road, Po. Dabok, Udaipur - 312022 (Raj),
Ph.: 0294-6454399, Visit us: www.arihantcollege.org Email- arihant.mttc.udr@gmail.com

ARIHANT

ARIHANT+
NURSING INSTITUTE

17 B-C, Saheli Marg, Near IDBI Bank, Udaipur (Raj.) Ph.: 0294-2414718

कहीं विलुप्त न हो जाए देवपुष्प...

हिमालय में फूलों की घाटी ब्रह्मकमल से गुलजार होने लगी है। हालांकि यह पुष्प विलुप्ति के कगार पर भी है। इसे बचाने के प्रयास और अधिक तेजी से किए जाने की जरूरत है।

हर्षिता नागदा

जुलाई से सितम्बर के मध्य में कई जगहों पर ब्रह्मकमल खिलने की खबरें आती हैं। जिस घर के बगीचे में ब्रह्मकमल खिलता है, उसे बड़ा भाग्यशाली माना जाता है। इन्हीं दिनों हिमालय पर फूलों की घाटी और हेमकुण्ड साहिब (चमोली, उत्तराखंड) में भी ब्रह्मकमल के फूल खिलते हैं। हालांकि अब जलवायु परिवर्तन की वजह से जून के अंतिम हफ्ते में ही ब्रह्मकमल खिलने लगे हैं। प्रकृति में ब्रह्मकमल के महत्व को देखते हुए इसे संरक्षित पौधे का दर्जा भी दिया गया है। केदारनाथ से करीब 22 किमी की दूरी पर वासुकि ताल है, जिसमें खिले ब्रह्मकमल दर्शनार्थियों का मन मोह लेते हैं।

पहले घरों के बगीचों में खिलने वाले तथाकथित ब्रह्मकमल की बात कर लेते हैं। इसे विज्ञान की भाषा में एपीफिलम ऑक्सी पटेलम कहते हैं। यह मूलत: मध्य और उत्तरी दक्षिणी अमेरिका का एक प्रकार का कैक्टस है अर्थात ऐसा पौधा जो दूसरे पौधों के ऊपर सहारा लेकर उगता है। यानी कि न जमीन पर, न पानी में बल्कि हवा में। इसके पौधे 6 मीटर तक ऊंचे हो जाते हैं। कहीं-कहीं इसे स्वर्ग का फूल भी कहते हैं। इसे आजकल घरों में गमलों में भी लगाया जाता है। इसके फूल रात में खिलते हैं और जबरदस्त खुशबू लिए होते हैं। इसकी बेमिसाल खुशबू का कारण इसमें पाया जाने वाला एक विशेष पदार्थ बेजाइल सेलीसाइलेट है। फूल चांदनी रात में सूर्यास्त के बाद सात बजे खिलना शुरू होते हैं और पूरे फूल को खिलने में करीब दो घंटे का समय लगता है। पूरी रात फिर फूल खिला रहता है और सुबह होते-होते मुरझाने लगता है।

असली ब्रह्मकमल का वैज्ञानिक नाम सासुरिया आबवैलेटा है जो सूरजमुखी कुल का सदस्य है। मूल रूप से हिमालय में पाया जाने वाला पौधा म्यांमार व दक्षिणी चीन में भी मिलता है। करीब 13000 से 15000 फीट की ऊंचाई पर ही इसके पौधे पाए जाते हैं। इसमें बहार जुलाई-अगस्त में आती है। लेकिन फूलों की घाटी और हेमकुंड साहिब के आसपास जून के अंतिम सप्ताह में ये अपने आगमन की दस्तक देने लगते हैं। इन फूलों के शीर्ष जामुनी रंग के होते हैं, जो हरी-पीली कागजों जैसी रचनाओं से घिरे होते है। ये सहपत्र कहलाते हैं और बर्फीले मौसम में अंदर स्थित छोटे-छोटे फूलों की रक्षा करते हैं। ये फूल अक्सर तीन-तीन के समूह में ही नजर आते हैं।

ब्रह्मकमल उत्तराखंड का राज्य पुष्प भी है। यह पारंपरिक रूप से बद्रीनाथ और केदारनाथ के मंदिरों में चढ़ाए जाते हैं। इसलिए इन्हें देवपुष्प भी कहा जाता है। कुछ समय से ये विलुप्ति के कगार पर हैं। इन्हें बचाने की पहल भी की जाने लगी है। इसके औषधीय और धार्मिक महत्व को देखते हुए ही इसे संरक्षित पौधे का दर्जा दिया गया है।

लैक्मे व फेमिना मॉडल्स के रैंप पर जलवे

टेलीविजन एवं रियलिटी शो सेलेब्रिटी प्रिंस नरूला एवं एक्ट्रेस युविका चौधरी ने 'डिजाइन मंथन शों' में की शिरकत

झीलों की नगरी में 17 जुलाई का दिन युवाओं के लिए यादगार रहा। वीसीडी कॉलेज एवं माही क्लीनिक द्वारा आयोजित 'डिजाइन मंथन' शो में लैक्मे व फेमिना की जाने मानी मॉडल्स ने जब रैंप पर बिखेरे जलवे। देश में पहली बार ऐसा यूनिक शो हुआ, जिसमें इंटीरियर डिजाइनर स्टूडेंट ने वेस्टेज कंस्टरेशन मटेरियल से आकर्षक ड्रेस डिजाइन की।

साथ ही फैशन डिजाइनर द्वारा इंडोवेस्टर्न, ट्रेडिशनल आउटफिट्स डिजाइन भी की गई। जिसे मॉडल्स ने पहनकर आकर्षक अंदाज में रैंप वॉक किया। कॉलेज की हेड ज्योति बंसल के अनुसार शो के लिए स्टूडेंट पिछले तीन माह से लगातार मेहनत कर रहे थे। कार्यक्रम की शुरूआत कॉलेज चेयरमैन सुभाष चंद्र मेहता, डायरेक्टर अंकुर मेहता, सुलभा मेहता एवं माही क्लीनिक के डायरेक्टर स्वाति त्रिपाठी एवं डॉ-आशीष सिंघल ने दीप प्रज्वलित करके की। इसके बाद शो में नृत्यों की धमाकेदार प्रस्तुति हुई। शो में अलग-अलग डिजाइनर आउटफिट्स में 8 राउंड हुए। जिसमें इंडोवेस्टर्न, ट्रेडिशनल,

वैस्टर्न आउटफिट्स पहने मॉडल्स ने रैंप पर अपनी स्टाइल में जलवे दिखाए।

शो में सेलिब्रिटी गेस्ट के रूप में टेलीविजन एवं रियलिटी शो की जानी मानी हस्तियां बिग बॉस, नचबलिए, रोडीज, जैसे शो की विनर प्रिंस नरूला एवं एक्ट्रेस युविका चौधरी ने शिरकत की। सेलिब्रिटी एंड पीआर मीडिया मैनेजर रोहित कोठारी ने बताया कि दोनों ही सेलिब्रिटी कपल का युवाओं में एक अलग ही क्रेज है। प्रिंस नरूला एवं युविका चौधरी के शो में एंट्री करते ही युवाओं में एक अलग ही उत्साह दिखाई दिया। दोनों कलाकारों का मेवाड़ी परम्परा से स्वागत किया गया। इस शो में गेस्ट के रूप मे मेवाड़ की प्रतिभाशाली यूट्यूबर जिगिषा जोशी भी उपस्थित थीं। प्रिंस नरूला एवं युविका चौधरी ने डिजाइन मंथन शो एवं कॉलेज के स्टूडेंट द्वारा डिजाइन ड्रेस की खूब तारीफ की। उन्होंने प्राकृतिक सुषमा से भरपूर उदयपुर की खूबसूरती की भी तारीफ करते हुए कहा कि उन्हें जब भी उदयपुर आने का मौका मिलेगा, वे पुन: जरूर आना चाहेंगे।

- रोहित कोठारी

बरसात में मनहर पकौड़े

बरसात का मौसम है। माहौल ने हरितमा की चादर ओढ़ ली है। खिड+कियों से ठंडी हवा के झोंके आ रहे हों, ऐसे मौसम में कभी-कभी कुछ अलग खाने का मन हो जाता है। खासकर चाय के साथ गरमा-गरम चटपटे पकौड़े। पारम्परिक ढंग से बनने वाले पकौड़ों का तो आनंद ही कुछ और है। यों तो प्याज के पकौड़े सदाबहार होते हैं, पर बरसात में उन्हें खट्टी-मीठी चटनी के साथ खाने का मजा ही अलग है। भुट्टे के पकौड़े भी रिमझिम मौसम में परिवार की खास पसंद हैं। पनीर-ब्रेड, कमल ककड़ी, मेगी, पालक के पकौड़े की विधि भी यहां दी जा रही है। रिमझिम मौसम में इन्हे बनाएं और चटखारे लें।

पुष्पा शर्मा

प्याज के पकौड़े

प्याज के पकौड़े अलग-अलग तरीके से बनते हैं। कुछ लोग बेसन का घोल तैयार करते हैं और फिर प्याज को गोल आकार में काट कर उसमें डुबाते और तेल में तल लेते हैं। कुछ लोग प्याज के गोल-गोल छल्ले निकालते हैं और उनके पकौड़े बनाते हैं। पर पारंपरिक तरीके से बने प्याज के पकौड़े बरसात में खाएं, तो उसका मजा अलग होगा।

विधि

प्याज के पकौड़े बनाने के लिए थोड़ा मोटा या मध्यम पिसा हुआ बेसन लें। प्याज के छिलके उतार कर लंबा-लंबा काट लें। उसमें हरी मिर्चें भी बीच से फ़ड़ कर और लंबा-लंबा काट कर डालें। इसके अलावा थोड़ा धनिया पत्ता काट कर डाल लें। अब थोड़ा-सा बेसन डालें। बेसन उतना ही डालें, जिससे प्याज के टुकड़े उसमें लिपट जाएं। ज्यादा बेसन डालने से पकौड़े कुरकुरे नहीं बनेंगे। कम होने पर प्याज के जलने का खतरा रहेगा। अब इसमें लाल मिर्च पाउडर, नमक, थोड़ी अजवायन और थोड़ा मंगरैल यानी कलौंजी डालें। कलौंजी से पकौड़ों का स्वाद बढ़ जाता है। चुटकी भर हींग भी डाल लें। अब थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए इन सारी चीजों को हाथ मे मलते हुए मिला लें। ध्यान रखें कि बेसन पतला न पड़े, नहीं तो तलते समय वह प्याज को छोड़ने लगेगा। अब एक कड़ाही में सरसों का तेल गरम करें। प्याज के पकौड़े सरसों तेल में ही स्वादिष्ट बनते हैं। तेल गरम हो जाए तो चम्मच से या हाथ से थोड़ा-थोड़ा करके मिश्रण डालते जाएं। शुरू में आंच को तेल रखें। जब पकौड़े थोड़े सख्त हो जाएं, तो उन्हें बाहर निकाल लें। पहली बार तलते हुए ध्यान रखें कि पकौड़े आधे ही पके हों। फिर थोड़ी देर बाद जब वे कुछ ठंडे हो जाएं, तो उन्हें दुबारा तलने के लिए डालें और मद्धिम आंच पर सुनहरा होने तक तल लें। इस तरह पकौड़े कुरकुरा बनेंगे। शिमला मिर्च और नारियल की चटनी या फिर टमाटर सॉस के साथ गरमा-गरम खाने को परोसें।

भुट्टा पकौड़ा

सामग्री: 4-5 ताजे नर्म भुट्टे, एक कप बेसन, 1 शिमला मिर्च, 1 प्याज, आधा कप पत्ता गोभी; सब बारीक कटे हुए, 1 चम्मच चिली सॉस, 2 चम्मच सोया सॉस, स्वादानुसार नमक और तलने के लिए तेल।

विधि

सबसे पहले भुट्टे कद्दूकस कर लें। फिर इसमें बारीक कटी सब्जियां, दोनों तरह के सॉस, नमक, अदरक व हरी मिर्च पेस्ट डालकर अच्छे से मिला लें और थोड़ा गाढ़ा घोल तैयार कर लें। अब एक कड़ाही में तेल गर्म करें। इसमें भुट्टे के मिश्रण के पकोड़े मध्यम आंच पर सुनहरे होने तक तल लें। टीशू पेपर पर अतिरिक्त तेल निकालने के लिए रखें। मनभावन भुट्टा पकौड़ी को टोमॅटो सॉस या हरी चटनी के साथ गरमा-गरम परोसें।

मैगी पकौड़े

सामग्री: 300 मिली पानी, 2 पैकेट मैगी, 2 पैकेट मैगी मसाला, 70 ग्राम पत्तागोभी, 70 ग्राम प्याज, 70 ग्राम शिमला मिर्च, 25 ग्राम धनिया, 1 चम्मच नमक, 2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 45 ग्राम सूजी, 35 ग्राम बेसन, 2 चम्मच पानी।

विधि:

एक पैन में पानी डालकर उबालें। अब इसमें मैगी और मैगी मसाला डालकर अच्छे से मिक्स करें और पकाएं। बाद में बाउल में निकाल लें। अब इसमें पत्तागोभी, प्याज, शिमला मिर्च, धनिया, नमक, लाल मिर्च पाउडर, सूजी, बेसन और पानी डालमृकर अच्छे से मिक्स कर लें। थोड़ा-सा मिक्सर लेकर छोटी-छोटी बॉल्स बना लें और साइड पर रख दें। एक पैन में तेल गर्म करके इन्हें अच्छे से फ्राई करें। इन्हें तब तक फ्राई करें जब तक इनका रंग हल्का गोल्डन ब्राउन न हो जाएं। मैगी पकौड़े तैयार हैं। इन्हें गर्मा-गरम सर्व करें।

टेस्टी पालक पकौड़े

सामग्री: 15 से 20 पालक के पत्ते, 1 कप बेसन, 2 चम्मच चावल का आटा, स्वादानुसार नमक, 1 बारीक कटी हरी मिर्च, 1/4 छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1/4 छोटी चम्मच अजवायन, तेल तलने के लिये।

विधि

सबसे पहले पालक के पत्तों को पानी से अच्छे से धो लें और पानी सुखाकर रख लीजिए। अब बेसन को चलनी से किसी बर्तन में छान लीजिये। अब इसमें पानी डाल कर गाढ़ा घोल बनाइये। याद रहे इसमें गुठलियां न रहें। इसमें चावल का आटा भी मिला लें और बहुत अच्छे से घोल बना लें। बेसन के इस घोल में अजवाइन, लाल मिर्च पाउडर, नमक, हरी मिर्च डाल दीजिए। इस घोल को 3 से 4 मिनिट तक फेंट लीजिए। अब इसे 10 मिनिट के लिये रख दीजिये। ध्यान रहे घोल एकदम पकौड़ी के घोल की तरह ही गाढ़ा हो। अब गैस पर एक तरफ कढ़ाई में तेल गर्म होने को रख दीजिये। जब तक तेल गर्म हो तब तक एक-एक साबूत पालक की पत्ती को बेसन के घोल में डूबों कर कढ़ाई में डाल कर तलें। जब एक साइड पकौड़े तल जाएं तो दूसरी तरफ भी गोल्डन ब्राउन होने तक तल लीजिये। इन स्वादिष्ट पकौड़ों को टोमेटो केचप या धनिया, पुदीना की हरी चटनी के साथ खाएं।

पनीर ब्रेड पकौड़ा

सामग्री: 4 स्लाइस ब्रेड, 1/5 कप बेसन, 150 ग्राम पनीर, थोड़ा बारीक कटा हरा धनिया, 2 बारीक कटी हरी मिर्च, 1 छोटी चम्मच अजवायन, 1 छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 छोटी चम्मच धनिया पाउडर, 1 पिंच बेकिंग सोडा, 1 छोटी चम्मच चाट मसाला, स्वादानुसार नमक और तलने के लिए तेल।

विधि

एक बड़े प्याले में बेसन लेकर थोड़ा सा पानी डालकर पतला घोल बना लीजिए। इस घोल में अजवायन, लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और थोड़ा सा नमक डाल दीजिए। अब बैटर में बेकिंग सोडा डालकर अच्छे से मिक्स कर लीजिए। एक प्लेट में पनीर को कद्दूकस कर लीजिए। इसमें थोड़ा सा नमक, हरी मिर्च और बारीक कटा हुआ धनिया डाल दीजिए। पनीर में मसाले अच्छे से मिक्स कर लीजिए। एक ब्रेड प्लेट में रखिए और इस पर स्टफिंग रखिए और अच्छे से फैलाकर लगा दीजिए। इस पर दूसरी ब्रेड रखिए और अच्छे से दबा दीजिए। इसके बाद ब्रेड को चाकू से बीच में से आधा करते हुए तिकोनाकार काट दीजिए। इसी तरह से सारी ब्रेड को स्टफिंग भरकर व काटकर तैयार कर लीजिए। कड़ाही में तेल डालकर गरम कर एक–एक कर पकौड़े तल लें। आपके पनीर ब्रेड पकौड़े तैयार हैं। पकौड़ों को हरे धनिये की चटनी या टमैटो सॉस के साथ खाइए।

कमल ककड़ी के पकौड़े

कमल ककड़ी हर मौसम में मिल जाती है। आमतौर पर इसकी तरकारी और कोफ्ते बनाते हैं, पर इसके पकौड़े भी लाजवाब बनते हैं। कमल ककड़ी सेहत के लिए कई दृष्टि से फ़ायदेमंद है। बरसात में इसमे पकौड़े खाकर देखें, इसका स्वाद कभी नहीं भूलेंगे।

विधि: कमल ककड़ी के पकौड़े बनाने के लिए भी आमतौर पर लोग इसे गोलाकार काट कर प्याज के पकौड़ों की तरह बेसन के घोल में डूबों कर तल लेते हैं। पर इसे आप थोड़ा अलग ढंग से बनाएं। बेसन के बजाय मैदा या फिर मक्के का आटा यानी कार्न फ्लोर लें। कमल ककड़ी को धोकर ठीक से कपड़े से रगड़ कर साफ करें और इसे गोलाकार काटने के बजाय लंबे–लंबे पतले टुकड़ों में काट लें। इसी में हरी मिर्चें भी बीच से फाड़ कर लंबे आकार में काट कर डाल दें। अब मैदा या फिर मक्के के आटे में कटी हुई कमल ककड़ी डालें ऊपर से नमक, लाल मिर्च पाउडर, थोड़ी अजवायन और कलौंजी डालें। थोड़ा–थोड़ा पानी डालते हुए इन सबको हाथ से मलते हुए ठीक से मिला लें। ध्यान रहे कि आटा न तो ज्यादा पतला हो और न अधिक गाढ़ा। बस ऐसा हो कि कमल ककड़ी के टुकड़ों पर चिपटा रह सके। एक कड़ाही में तेल गरम करें। इसके लिए आप चाहें तो सरसों तेल के अलावा तिल, मूंगफली आदि का तेल भी इस्तेमाल कर सकते हैं। तेल गरम हो जाए तो छोटे–छोटे आकार में पकौड़े डालते जाएं। आंच मद्धिम रखें। पकौड़ों को पलटते रहें। जब वे तल कर सुनहरें रंग के हो जाएं, तो बाहर निकाल लें और तेल निथर जाने के बाद गरमा–गरम परोसें। शिमला मिर्च और नारियल की चटनी इनका स्वाद बढ़ा देगी।

शिमला मिर्च–नारियल की चटनी

इडली–डोसे के साथ खाने के लिए तो आप घर में नारियल की चटनी बनाते ही हैं। इस बार नारियल की चटनी पकौड़ों के लिए बनाएं। इडली–डोसा के साथ खाने के लिए जब कच्चे नारियल की चटनी बनाते हैं तो उसमें मूंगफली और भुने हुए चने की जरूरत पड़ती है, मगर पकौड़ों के लिए चटनी बनाते समय इनका इस्तेमाल न करें। शिमला मिर्च और कच्चे नारियल की चटनी बनाने के लिए दोनों बराबर–बराबर मात्रा में लें। इसमें कुछ लहसुन की कलियां, कुछ हरी मिर्च, पुदीने की कुछ पत्तियां और एक चम्मच साबुत जीरा और एक चम्मच साबुत सूखा धनिया लें। नमक स्वाद के मुताबिक डालें और इन सबको मिक्सर में डाल कर हल्के पानी के साथ पीस लें। चटनी बनाते समय चाहें, तो सादा पानी की जगह नारियल से निकला पानी उपयोग कर सकते हैं।

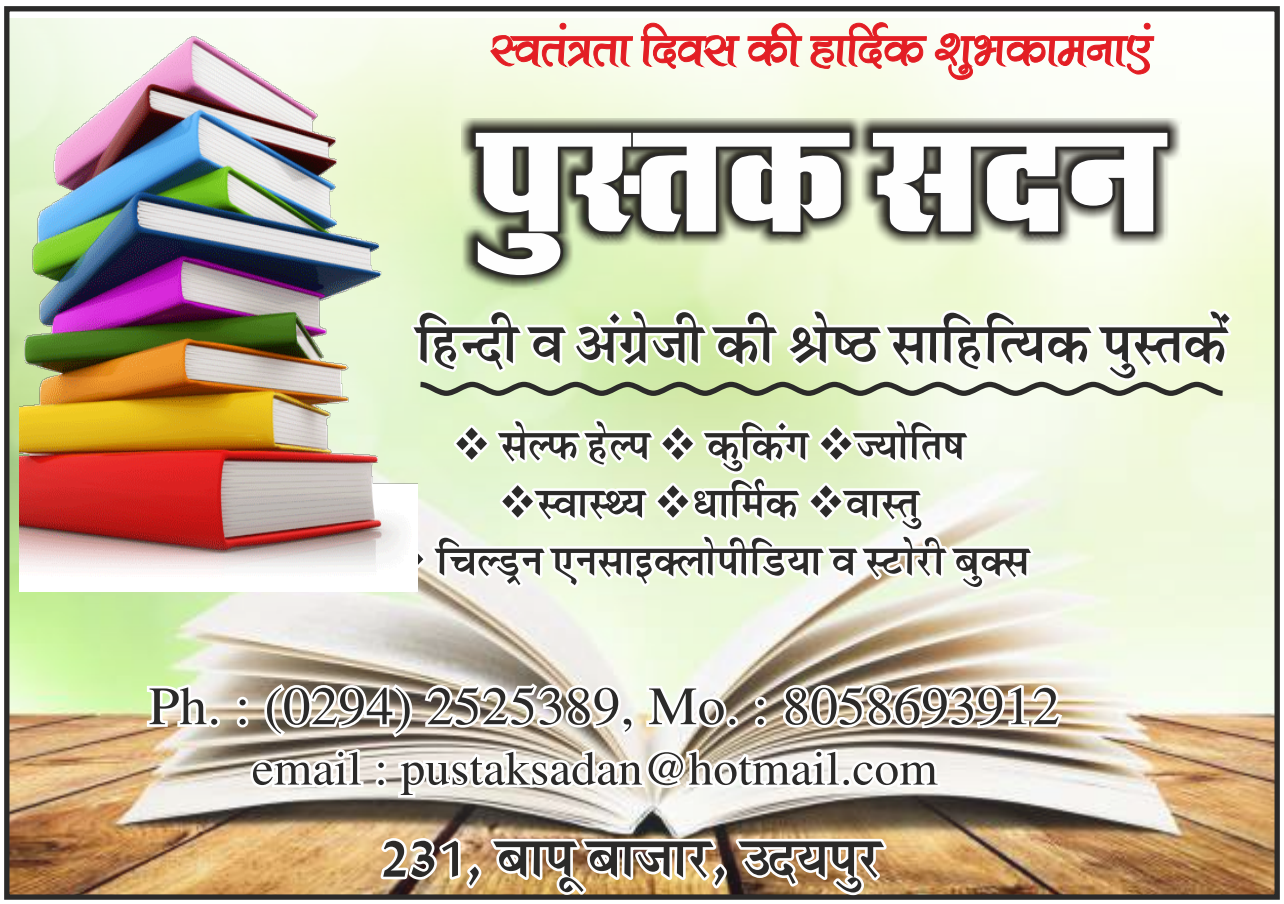

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

माह का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ परिणाम देगा, व्यापार क्षेत्र में नए समझौते होंगे, नौकरी पेशा जातकों को भी लाभ मिलेगा। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे परिणाम मिलेंगे, अत्यधिक कार्य की वजह से मानसिक विकास पैदा हो सकता है। मौसम जनित बीमारियां परेशान कर सकती है, संतान पक्ष से पूर्ण संतुष्टि रहेगी।

वृषभ

आर्थिक समस्याओं से जुझना पड़ेगा, परिवार के सदस्यों की चिंता बढ़ेगी, परिवार के सदस्यों की स्वास्थ्य संबंधित समस्या परेशान करेगी। माह के अंत में परिवार में धार्मिक आयोजन की संभावना, रिश्तेदारी में मतभेद उभर सकता है, आपके काम बनते–बनते अटक सकते हैं, सरकारी कर्मचारियों में आपाधापी रहेगी।

मिथुन

माह का उत्तरार्द्ध शुभता प्रदान करेगा, स्वास्थ्य उत्तम बना रहेगा। अपनी माताजी से वैचारिक मतभेद उभर सकते है, घर में तनाव का वातावरण रहेगा, भाइ–बहिन कार्यक्षेत्र में मदद करेंगे, जिससे लाभ प्राप्त होगा। नौकरी पेशा जातक भी कुछ अच्छा कर पाएंगे। श्वास संबंधित समस्या उभर सकती है।

कर्क

स्वभाव में उग्रता के कारण रिश्तों में दरार आ सकती है। कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले गुणीजनों से चर्चा करें। आर्थिक पक्ष मिश्रित परिणाम वाला रहेगा। परंतु अपने विवेक से परिणाम श्रेष्ठ प्राप्त कर लेंगे। अपने जीवन में एक लक्ष्य को निर्धारित कर पाएंगे, शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेगे। संतान पक्ष से असंतोष रहेगा।

सिंह

माह का उत्तरार्द्ध आत्मविश्वास से पूर्णता लिए रहेगा। परिवार वालों पर व्यर्थ का संशय हो सकता है। गलतफहमी पर खुलकर बात करें, संतान के प्रति स्नेह में वृद्धि होगी। उनके भविष्य के लिए कोई निर्णय लेंगे। राजनीति में कार्यरत जातकों को शुभ संकेत मिलेंगे। अपने अधिकारी वर्ग एवं वरिष्ठजनों से संतुष्ट रहेंगे।

कन्या

परिवारजन एवं सगे संबंधियों का आपस में मेलजोल बढ़ेगा। आपका अधिकतर समय व्यर्थ कार्यों में लगने से व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में हानि की संभावना रहेगी। नौकरी में अपने सहकर्मियों से मतभेद रहेगा। व्यक्तिगत राजनीति से दूर रहें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। संतान पक्ष से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे।

तुला

परिवार में खुशियों का वातावरण, कुछ नया करने की सोचेंगे, परिवारवालों का पूर्ण सहयोग मिलेगा, मातुल पक्ष का आपकी ओर झुकाव रहेगा। भूमि एवं शेयर में निवेश किया है, लाभ मिलेगा। राजनीति से जुड़े जातकों को उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं है। चोट लगने की संभावना।

इस माह के पर्व/त्योहार

2 अगस्त	श्रावण शुक्ल पंचमी	नाग पंचमी
4 अगस्त	श्रावण शुक्ल सप्तमी	गो. तुलसीदास जयन्ती
7 अगस्त	श्रावण शुक्ल दशमी	वीर पूजनी
9 अगस्त	श्रावण शुक्ल द्वादशी	मोहर्रम
12 अगस्त	श्रावण पूर्णिमा	रक्षा बंधन
14 अगस्त	भाद्रपद कृष्णा तृतीया	कजली तीज
16 अगस्त	भाद्रपद कृष्णा पंचमी	पुण्यतिथि अटल बिहारी वाजपेयी
15 अगस्त	भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी	स्वतंत्रता दिवस
19 अगस्त	भाद्रपद कृष्णा अष्टमी	श्री कृष्ण जन्माष्टमी
20 अगस्त	भाद्रपद कृष्णा नवमी	गोकुलोत्सव/गोगा नवमी
23 अगस्त	भाद्रपद कृष्णा द्वादशी	वत्स द्वादशी/ पर्यूषण प्रारंभ
29 अगस्त	भाद्रपद शुक्ला द्वितीया	बाबा रामदेव मेला
30 अगस्त	भाद्रपद शुक्ला तृतीया	हरतालिका तीज
31 अगस्त	भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी	गणेश चतुर्थी/संवत्सरी महापर्व

वृश्चिक

किसी के साथ पुराना मतभेद या विवाद हो तो सुलझ जाएगा। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। मेहमान नवाजी करनी पड़ेगी। अपने व्यापार को विस्तार देने से खर्चों में बढ़ोत्तरी होगी। धन संबंधी निर्णय अपने से श्रेष्ठीजनों से विचार करके ही लेवें। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे जातकों को पूर्ण सफलता मिलेगी।

धनु

आपको खर्चों पर नियंत्रण रखना होगा, आय पक्ष में वृद्धि नहीं हो पाएगी। जिससे मानसिक तनाव रहेगा। परिवार के सदस्यों के बीच रिश्तों में मजबूती आएगी, अपनी माता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखे। व्यापारिक मित्रों से तालमेल रखे। सरकारी नौकरी में समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

मकर

अधूरे पड़े कार्य पूरे होंगे व अन्य क्षेत्रों से भी लाभ मिलेगा। अपने व्यापार के लिए नई योजनाएं बनाएंगे एवं महत्वपूर्ण व्यक्तियों से भेंट होगी। जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेवे। शब्दों का सही प्रयोग करते हुए उग्र स्वभाव पर नियंत्रण रखे। स्वास्थ्य उत्तम रहे। संतान पक्ष आपको आत्मबल प्रदान करेगा।

कुम्भ

माता–पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रख। घर में सुख शांति का माहौल रहेगा। भाई–बहिनों के संबंधों में मजबूती आएगी। आर्थिक दृष्टि से यह माह खर्चीला रहेगा। वित्तीय नुकसान संभव है। नौकरी पेशा जातक भी संतुष्ट रहेंगे। गंभीर बीमारी से ग्रस्त जातक विशेष सावधानी बरते। सिरदर्द सता सकता है।

मीन

अटका हुआ धन मिल सकता है। आर्थिक लाभ मिलेगा। सरकारी कर्मचारियों का अपने वरिष्ठ या कनिष्ठ सहकर्मियों से विवाद उभर सकता है। रक्तचाप एवं मधुमेह रोगी विशेष सतर्कता बरतें। गलत मित्रों की संगति के कारण आपके परिवारजनों से तीखी नोक–झोंक हो सकती है और मनमुटाव बढ़ सकता है।

श्री सीमेंट को श्रेष्ठ नियोक्ता संस्थान पदक

ब्यावर। ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टीट्यूट इंडिया ने 14 जून 2022 को बेस्ट प्लेस टू वर्क पुरस्कार प्रदान किए। इनमें देश की विख्यात सीमेंट निर्माता कंपनी श्री सीमेंट को निर्माण साम्रगी क्षेत्र की कंपनियों में श्रेष्ठ कंपनी के खिताब से नवाजा गया। साथ ही देश के उद्योग जगत में श्रेष्ठ 50 कंपनियों में श्री सीमेंट ने 42 वां स्थान अर्जित किया। उल्लेखनीय है कि इसी वर्ष श्री सीमेंट ने निर्माण क्षेत्र में 30 श्रेष्ठ कार्यस्थलों में अपना स्थान अर्जित किया। यह एक ऐसा सम्मान है जिसे अर्जित करना हर संस्थान की आकांक्षा होती है। कार्यक्षेत्रों के संबंध में इसे विश्वभर में कर्मचारियों एवं नियोजकों द्वारा गोल्ड स्टेंडर्ड की भांति स्वीकारा जाता है। प्रति वर्ष विश्व के लगभग 60 देशों के 10 हजार से अधिक संस्थान इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। भारतवर्ष से इस वर्ष 24 से अधिक औद्योगिक क्षेत्रों के लगभग 24 लाख

कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करने वाली 1200 से अधिक कंपनियों ने भाग लिया। इन कंपनियों में से 100 श्रेष्ठ कंपनियों का चयन किया गया। इन पुरस्कारों के लिए चयन कर्मचारियों की संस्थान के प्रति गौरवभावना, नेतृत्व के प्रति विश्वास, सम्मान, पारदर्शिता, समूह भावना आदि के आधार पर किया जाता है। श्री सीमेंट कंपनी इन मानकों में साल-दर-साल उन्नति कर रही है और इसी का परिणाम है कि वर्ष 2018, 2020, 2021 एवं 2022 में कंपनी को यह सम्मान प्राप्त हुआ। यह भी उल्लेखनीय है कि 2022 में देश में सीमेंट एवं भवन निर्माण क्षेत्र में इस पुरस्कार सें पुरस्कृत होने वाली श्री सीमेंट ही एक मात्र कंपनी है।

आरएएस एकेडमी का शुभारंभ

उदयपुर। शहर के हिरणमगरी स्थित जीकेएस एकेडमी पर आरएएस एकेडमी का शुभारंभ हुआ। इस मौके पर संस्थान में दो दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान के तहत सुंदरकांड पाठ हुआ व विद्यार्थियों ने भक्ति गीतों पर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उदयपुर संभाग क्षेत्र के 4 हजार से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। संस्था निदेशक भवानी सिंह शेखावत ने बताया कि यह एकेडमी आरएएस मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखते हुए छात्र-छात्राओं को तैयारी करवाते हुए उन्हें मंजिल तक पहुंचाएगी।

गुरू पूर्णिमा पर सम्मान

उदयपुर। मेवाड़ सगसजी लोकसेवा संस्थान की ओर से गुरू पूर्णिमा पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए विभूतियों को सम्मानित किया गया। संस्थान संचालक विजय सिंह कच्छवाह ने बताया कि मुख्य अतिथि शिवसिंह कच्छवाह थे। विशिष्ट अतिथि डॉ. ओ.पी महात्मा व वरिष्ठ पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी थे। इस अवसर पर त्रिभुवन सिंह चौहान, गोविंद सिंह कुमावत, उदयलाल गर्ग, उमेश शर्मा, मंजू राजपूत, खूबीलाल दवे, निशा राजपूत व भटनागर को सम्मानित किया गया। संचालन संस्थान सचिव शूरवीर सिंह कच्छवाह ने किया।

यूसीसीआई: बीएच बापना संरक्षक, गलूंडिया महासचिव

बीएच बापना

मनीष गलूंडिया

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की नई कार्यकारिणी की पहली बैठक संजय सिंघल की अध्यक्षता में यूसीसीआई भवन में हुई। इसमें सर्वसम्मति से वरिष्ठ पूर्वाध्यक्ष बीएच बापना को 2022-23 के लिए संरक्षक निर्वाचित किया गया। महासचिव मनीष गलूंडिया और कोषाध्यक्ष संदीप बापना को मनोनीत किया गया।

राजे को भेंट की बरैव रामायण

उदयपुर। आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत ने बरैव रामायण (तुलसीदास जी की मूल कृति का अनुवाद) का काव्यात्मक रूपांतरण पुस्तक राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे को भेंट की।

'हैप्पी क्लासरूम' कार्यशाला का आयोजन

उदयपुर(सेंट मैथ्यूस मिशन स्कूल, उदयपुर में गत दिनों सी.बी.एस.ई. 'सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस' के तत्वावधान में 'हैप्पी क्लासरूम' कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें उदयपुर तथा अन्य जिलों के लगभग 59 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता सर जॉर्ज थॉमस तथा डॉ पुनीत शर्मा थे। विद्यालय निदेशिका ग्लोरी फिलिप, प्रिंसिपल नितिन नाथ तथा वाइस प्रिंसिपल श्रीमती भामा जोज़फ उपस्थित थे।

रॉयल के भाकर ने हासिल की प्रथम रैंक

उदयपुर। कालका माता रोड़ स्थित रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ कंपीटीशन के विद्यार्थियों ने जेट-2022 के टॉप 10 में 12 विद्यार्थियों ने बाजी मारी। नागौर निवासी किशन भाकर ने 415.251 अंक अर्जित करते हुए सामान्य वर्ग में संपूर्ण राजस्थान में प्रथम रैंक अर्जित की। सामान्य वर्ग में कनिका राठौड़ ने चतुर्थ, अभिषेक सेवालिया ने 7वीं और दिलीप धाकड़ ने 10वीं रैंक हासिल की।

एशियन स्केट्स डांस, विजेताओं का स्वागत

उदयपुर। न्यू भूपालपुरा क्षेत्र स्थित सेंट्रल पब्लिक सी-सैै स्कूल की तीन छात्राओं ने एशियन स्केट्स डांस प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व कर विभिन्न श्रेणियों में पदक जीतकर देश और स्कूल का नाम रोशन किया। वर्ल्ड डांस स्केट्स स्पोर्ट्स फैडरेशन द्वारा नेपाल में 30 मई से 2 जून तक एशियाई स्केट्स नृत्य श्रेणी का आयोजन किया गया था। सेंट्रल पब्लिक स्कूल की मुक्ता कराडिया ने 2 स्वर्ण पदक जीते। पारंपरिक और पश्चिमी नृत्य श्रेणी में कृष्णा कंवर (पूर्व सीपियन) ने संगीत योग और आधुनिक नृत्य में 2 स्वर्ण पदक जीते। कक्षा दसवीं की पाखी कंवर गहलोत को भी 18 से 20 जून तक चूरू में आयोजित राज्य स्तरीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप में चयनित होने पर सम्मानित किया गया। विद्यालय की चेयरपर्सन अलका शर्मा तथा प्राचार्य पूनम राठौड़ ने छात्राओं के साथ कोच मनजीत सिंह गहलोत को सम्मानित किया।

फिल्म उद्योग एवं व्यापार संघ के चेयरमैन का जयपुर दौरा

उदयपुर। फिल्म उद्योग एवं व्यापार संघ राजस्थान के चेयरमैन प्रवीण सुथार के जयपुर दौरे पर स्थानीय अर्टिस्टों ने स्वागत किया। सचिव मुकेश सागर ने बताया कि इस दौरान सुथार की अध्यक्षता में गोष्ठी भी हुई। सुथार ने राजस्थान के कलाकारों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करते हुए लगातार मुम्बई पलायन के बारे मे बताया। कार्यक्रम में गायिका सीमा मिश्रा ने संघ और सरकार से अपील की कि स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बॉलीवुड मुंबई के कलाकारों से पहले राज्य के स्थानीय कलाकारों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

जीबीएच ने मनाया डॉक्टर्स डे

उदयपुर। जीबीएच अमरीकन हॉस्पीटल और जीबीएच जनरल एवं मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल में डॉक्टर्स डे मनाया गया। ओपीडी समाप्ति के बाद सभी प्राचार्य डॉ. विनय जोशी के कार्यालय में एकत्रित हुए। प्राचार्य का ग्रुप डायरेक्टर डॉ. आनंद झा और डायरेक्टर डॉ. सुरभि पोरवाल ने स्वागत किया। इस मौके पर जीबीएच अमरीकन हॉस्पीटल में यूनिट हैड दुष्यंत शुक्ला और डिप्टी मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. उद्धव सिंह मौजूद रहे।

पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह मनाया

निम्बाहेड़ा। भारतीय खान ब्यूरो के तत्वावधान में 32 वें खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह का आयोजन जे.के.सीमेन्ट की मालियाखेड़ा खदान में इकाई प्रमुख आर.बी.एम त्रिपाठी व खदान प्रमुख मनीष तोषनीवाल के मार्गदर्शन में किया गया। गालियाखेड़ा खदान के वरिष्ठ महाप्रबन्धक डी.के. धाकड़ तथा उपस्थित पदाधिकारियों ने विशिष्ट अतिथि जयंत मल्होत्रा (टेक्नीकल हेड), निरीक्षण दल के सदस्य डी.आर. चौधरी, अमित राज, कुलदीप शर्मा, हर्षवर्धन, दिलीप दशानी व द्वारका राम, यूनियन प्रतिनिधि नाहर सिंह देवड़ा, सत्यनारायण मेनारिया, भेरू सिंह, शंकर गुर्जर,

अभिषेक मेहता तथा जनप्रतिनिधि गब्बर सिंह अहीर, रतन भील, गोपाल जाट एवं पायरी स्कूल की प्रधानाचार्य कविता चौधरी का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इसके पश्चात् कमलेश बैरागी ने उपस्थित जन को पर्यावरण संरक्षण व स्वच्छता की शपथ दिलाई। संचालन आशीष डाभी ने व धन्यवाद कारूण्डा खदान के उपमहाप्रबन्धक पी.के आमेटा ने ज्ञापित किया।

अरविंदर को कॉस्मेटोलॉजी में अमरीकन बोर्ड की योग्यता

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह अमरीकन एसोसिएशन ऑफ एस्थेटिक

मेडिसिन के लेवल 1 व 2 को क्लियर कर भारत के चुनिंदा क्लिनिकल कॉस्मेटोलॉजिस्ट व एस्थेटिक्स में शामिल हो गए हैं। इससे पहले भी डॉ. सिंह कनाडा से कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी की योग्यता हासिल कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि चेहरे के पिगमेंट, मेलस्मा, मुहांसे, मुहांसो के दाग, लेजर ट्रीटमेंट, चेहरे को सुंदर व एंटी एजिंग के लिए बोटॉक्स, डर्माफिलर, फेस लिफ्ट इत्यादि का इलाज इंटरनेशनल स्टैंडर्ड्स के अनुसार अब राजस्थान में उपलब्ध हो सकेगा।

लीड शिक्षा तकनीक का उद्घाटन

उदयपुर। फतहपुरा स्थित द यूनिवर्सल सीनियर सैकंडरी स्कूल में अंतरराष्ट्रीय स्तर की लीड शिक्षा तकनीक का मुख्य अतिथि संस्था संरक्षक संदीप सिंघटवाड़िया व मुख्य अतिथि मोनिका सिंघटवाड़िया ने शुभारंभ किया। डायरेक्टर शुभभ सिंघटवाड़िया ने बताया कि यूनिवर्सल स्कूल उदयपुर का ऐसा पहला स्कूल है जो अब पूरी तरह शिक्षा को तकनीक के साथ लेकर आया है। इस वर्ष से विद्यालय में पॉवर्ड बाय लीड शिक्षा द्वारा बच्चों को स्मार्ट टीवी व ऑडियो विजुअल से अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा प्रदान की जाएगी।

डॉ. लुहाड़िया को इंस्पायरिंग अवार्ड

उदयपुर। इकोनोमिक टाइम्स की ओर से आयोजित समारोह में उदयपुर के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एसके लुहाडिया, विभागाध्यक्ष, रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग गीतांजलि मेडिकल कॉलेज को इंस्पायरिंग पलमोनोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया-2022 अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ. लुहाड़िया को ये सम्मान नई दिल्ली में आयोजित समारोह में बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय द्वारा प्रदान किया गया।

बुजुर्ग एथलीट ने 1 गोल्ड और 2 ब्रॉन्ज पदक जीते

नई दिल्ली। भारत के लिए गोल्ड और सिल्वर मेडल जीतने वाली 94 साल की भगवानी देवी ने फिनलैंड से भारत पहुंचने पर एयरपोर्ट पर ही नाचते हुएअपनी जीत का जश्न मनाया। ढोल-नगाड़ों से उनका जोरदार स्वागत किया गया। इस उम्र में जहां लोग बिस्तर पकड़ लेते हैं, वहीं इस दादी ने साबित कर दिया कि जोश और जुनून हो तो उम्र कोई मायने नहीं रखती। भगवानी देवी डागर ने 10 जुलाई 2022 को फिनलैंड के टाम्परे में वर्ल्ड मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2022 में भारत के लिए 1 गोल्ड और 2 ब्रॉन्ज पदक जीते। भगवानी देवी ने वर्ल्ड मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2022 में 100 मीटर स्प्रिंट इवेंट में 24.74 सेकेंड का समय लेते हुए स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। उन्होंने शॉटपुट में भी कांस्य पदक जीता था। वे रोजाना 10 किमी की सैर करती हैं, पौष्टिक खुराक लेती हैं, जिससे उनके शरीर में किसी प्रकार की बीमारी नहीं है। उन्होंने बताया कि उन्हें, उनके पोते ने देश-दुनिया में नाम रोशन करने की प्रेरणा दी। पोता उन्हें रोजाना खेल की दुनिया की बातें बताता है।

सरस डेयरी का निरीक्षण

उदयपुर। उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के प्रशासक जिला कलक्टर ताराचंद मीणा ने गत दिनों उदयपुर सरस डेयरी का निरीक्षण किया । उन्होंने दूध एवं दुग्ध उत्पादों की प्रोसेसिंग, पैकिंग एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी ली। प्रबंध संचालक नटवरसिंह ने संकलित होने वाले दूध और इससे उत्पादों को तैयार करने की प्रक्रिया तथा वितरण आदि के बारे में अवगत कराया। कलक्टर ने निर्देश दिए कि जिले के सभी गांवों को डेयरी सहकारिता से जोड़ें तथा जिन-जिन ग्राम पंचायतों में डेयरी गतिविधियां नहीं है, उनके सरपंचों को पत्र जारी कर ग्राम पंचायत के 15-15 दुग्ध उत्पादकों को सदस्य बनाकर दुग्ध संकलन केन्द्र प्रारंभ किए जाएं।

कवि बच्चन पर पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। 'डॉ. हरिवंशराय बच्चन अपनी कविताओं का विषय स्वयं ही थे। जिनमें उनके मनोभावों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। वे जीवन की आशाओं और निराशाओं से पूर्ण सन्तुष्ट थे।' यह बात प्रबुद्ध लेखक - साहित्यकार डॉ. के.के.शर्मा ने डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव' की आठवीं पुस्तक '**बच्चन का काव्य: अभिव्यंजना और शिल्प**' का गत दिनों विमोचन करते हुए कही। उन्होंने कहा कि बच्चन जी ने हालावाद का प्रवर्तन कर हिन्दी साहित्य को नया मोड़ दिया। जिसमें प्रेम और सौन्दर्य का अनूठा संगम है। पुस्तक के लेखक ने बच्चन के साहित्य की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन्हीं विशेषताओं से प्रेरित उनकी बच्चन पर यह तीसरी पुस्तक है। डॉ. मलय पानेरी ने कहा कि परिस्थितियां भी कविता की भावभूमि बनाती हैं। बच्चन जी ने अपनी निजी अनुभूतियों को लेकर भी समाज के सुख-दु:ख का कविताओं में सजीव चित्रण किया है। डॉ. नवीन नंदवाना ने बच्चन जी का गीत '**दिन जल्दी-जल्दी ढलता है**' का उल्लेख करते हुए कहा कि कवि सांसारिक कठिनाईयों से जूझ रहा है, फिर भी जीवन से उसका गहरा लगाव है। डॉ. गिरीशनाथ माथुर ने कहा कि बच्चन कवि से पहले कहानीकार भी थे। राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. लक्ष्मी नारायण नन्दवाना ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि बच्चन पर कलम चलाना गहरी समझ का कार्य है। संयोजक विष्णु शर्मा हितैषी ने बच्चन जी के अनछुए परिदृश्यों के परिप्रेक्ष्य में अपनी बात रखी। धन्यवाद ज्ञापन प्रकाशक हरीश आर्य ने किया। कार्यक्रम में डॉ. लक्ष्मीलाल वर्मा, डॉ. अंजना गुर्जरगौड़, प्रेमलता नागदा, दुर्गाशंकर गर्ग सहित अन्य साहित्य प्रेमी मौजूद थे।

पांच दिन के शिशु का पहला उपचार

उदयपुर। राजकीय सेटेलाइट हिरणमगरी हॉस्पिटल में पिछले 40 वर्षों में पहली बार पांच दिन के नवजात शिशु का न्यू बोर्न स्टेबलाइजेशन यूनिट में (एनबीएसयू) में अत्यधिक पीलिया सीरम बिलिरूबीन की बीमारी से पीड़ित का उपचार किया गया। शिशु के शरीर का पूरा खून बदलकर ये उपचार किया गया। अधीक्षक डॉ राहुल जैन ने बताया कि नवजात शिशु में अक्सर पीलिया पाया जाता है, स्तनपान नहीं होने व बच्चे व मां का ब्लड ग्रुप अलग-अलग होने से यह कभी-कभी अत्यधिक बढ़ जाता है। उपचार डॉ राजेश जैन के निर्देशन में डॉ सरोज कोठारी, डॉ सुनिता आचार्य व नर्सिंग आफिसर धर्मवीर बैरवा द्वारा किया गया। पीलिया बढ़ जाने पर इसे एक्सचेंज ट्रांसफ्युजन किया जाता है। ये उपचार समय पर नहीं होने पर बच्चा मंदबुद्धि हो सकता है।

'आज़ादी रा भागीरथ महात्मा गांधी' पुस्तक मुख्यमंत्री को भेंट

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष वेदव्यास के निवास पर पहुंचकर मुलाकात की। गहलोत ने उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। गहलोत को व्यास ने 75 वर्षों में राजस्थानी भाषा में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर लिखी गई कविताओं के संग्रह 'आजादी रा भागीरथ महात्मा गांधी', निबंध संग्रह' अंधेरे में रोशनी की तलाश' तथा कविता संग्रह' एक देश मेरे सपनों का' पुस्तक भेंट की। इस मौके पर व्यास के पुत्र विचार व्यास भी मौजूद थे।

खेल प्रेमी उठाएंगे पिकल बॉल खेल का लुत्फ

उदयपुर। लेकसिटी टेनिस एकेडमी द्वारा पिकलबॉल को उदयपुर में भी शुरू किया गया है। एकेडमी परिसर में पिकलबॉल कोर्ट की शुरूआत राजसमंद विधायक दीप्ति माहेश्वरी, उदयपुर चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के संरक्षक अरविंद सिंघल ने की। उद्घाटन के अवसर पर एकेडमी संस्थापक एवं नगर परिषद के पूर्व उप सभापति हीरालाल कटारिया व शरद कटारिया ने विचार व्यक्त किए।

'द सक्सेस पॉइंट' का श्रेष्ठ प्रदर्शन

उदयपुर। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग बोर्ड 10 वीं ओर 12वीं कक्षा के घोषित परीक्षा परिणाम में ''द सक्सेस पॉइंट'' उदयपुर के छात्र-छात्राओं ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। संस्थान के 20 छात्र-छात्राओं ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। 75-85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों की संख्या 180 से अधिक रही। कुल 340 विद्यार्थियों ने उक्त परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। संस्थान के प्रबंध निदेशक दिलीपसिंह यादव व शैक्षणिक निदेशक महेन्द्र सिंह यादव ने बताया कि संस्थान में अध्ययनरत बच्चों ने प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी उत्कृष्ट परिणाम दिये हैं। संस्थान में आयोजित सम्मान समारोह में इन विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

उदयपुर में पाइप से रसोई गैस कनेक्शन

उदयपुर। उदयपुर शहर में अडाणी गैस ने पाइप नेचुरल रसोई गैस के कनेक्शन का काम शुरू कर दिया है। मल्होत्रा एंटरप्राइज ने अडाणी गैस से अनुबंध कर कार्यालय का

शुभारंभ माया मिष्ठान वाली गली अशोक नगर में जिला न्यायाधीश कुलदीप शर्मा के हाथों करवाया। अडाणी गैस के अधिकारी ने बताया कि राजस्थान के भीलवाड़ा, चित्तौड़ व उदयपुर क्षेत्र में अडानी गैस कनेक्शन देगा। इसमें भीलवाड़ा क्षेत्र के कुछ घरों में गैस सप्लाई की शुरूआत कर दी गई है। उदयपुर के कुछ क्षेत्रों में आने वाले महीनों में गैस सप्लाई शुरू कर दी जाएगी। ग्राहकों को गैस कनेक्शन उपलब्ध करवाने के लिए डोर टू डोर सर्वे कराया जाएगा। इस मौके पर कंपनी के मार्केटिंग अधिकारी करण पालीवाल, प्रोजेक्ट अधिकारी पीयूष सिंघल व मल्होत्रा एंटरप्राइजेज के अधिकारी मोहित मल्होत्रा उपस्थित थे।

सेमिनार में बच्चों को कॅरियर मार्गदर्शन

उदयपुर। जैकबाबाद सिंधी पंचायत और सिंधी साहिती पंचायत के संयुक्त तत्वावधान में शक्तिनगर झूलेलाल भवन में बच्चों के कॅरियर से संबंधित सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉक्टर गौरव छाबड़ा, मीनाक्षी भेरवानी, अविनाश प्रताप सिंह, मोहित धनकानी, डॉ मुकुल चोटरानी, डॉ. पवन मेहरिया आदि ने कॅरियर ऑप्शंस के बारे में बताते हुए उन्हे सदा मेहनत करने व आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। जेकामाबाद पंचायत अध्यक्ष प्रताप राय चुघ एवं साहिती पंचायत अध्यक्ष ओम प्रकाश आहूजा ने धन्यवाद दिया। संचालन रामचंद्र चोटरानी व राजस्थान सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी ने किया।

रामजी स्वीट्स का शुभारंभ

उदयपुर। विश्व विद्यालय मार्ग स्थित जय जिनेन्द्र कॉम्पलेक्स में पिछले दिनों 'रामजी स्वीट्स' का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि महंत अमर गिरी महाराज थे। प्रतिष्ठान के जगदीश साहू, कन्हैया लाल साहू व जितेन्द्र ने मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर भावेश, विनीत व विवेक साहू भी मौजूद थे।

महिंद्रा की ऑल न्यू स्कॉर्पियो लॉन्च

उदयपुर/ महिंद्रा एंड महिंद्रा के नए एवं बहुप्रतीक्षित न्यू स्कॉर्पियो एन मॉडल को केएस ऑटोमोबाइल्स प्राइवेट लिमिटेड पर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी उदयपुर पीएल बामणिया ने लॉन्च किया। इस दौरान केएस ऑटोमोबाइल्स प्रा. लि. के निदेशक सुनील कुमार परिहार, आकाश परिहार एवं महिंद्रा के एरिया सेल्स मैनेजर सौरभ पांडे उपस्थित थे। निदेशक सुनील कुमार परिहार ने बताया कि ऑल न्यू स्कॉर्पियो एन को नए जमाने की प्रामाणिक एसयूव की तलाश करने वालों के लिए बनाया है।

वेदान्ता निदेशक ने देखी नारायण सेवा

उदयपुर। वेदान्ता ग्रुप के निदेशक अखिलेश जोशी ने नारायण सेवा संस्थान के मानव मंदिर हॉस्पीटल में 101 दिव्यांगजन शल्य चिकित्सा शिविर का उद्घाटन किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उन्हें संस्थान की देशभर में संचालित सेवा गतिविधियों की जानकारी दी। विभिन्न प्रदेशों से चिकित्सा कराने आये हुए रोगियों और उनके परिजनों से जोशी ने भेंट करते हुए उनके अनुभव जाने तथा संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि समाज के लिए इनके भागीरथी प्रयास अनुकरणीय है। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने वेदान्ता ग्रुप का आभार व्यक्त किया।

खत्री अध्यक्ष, वाधवानी महासचिव

उदयपुर। शहीद हेमू कालानी युवा मंच के अध्यक्ष पद पर तीसरी बार राजेश खुत्री चुने गए। वहीं, महासचिव पद पर विनोद वाधवानी चुने गए।

आदिवासी महासभा के सोमेश्वर अध्यक्ष

उदयपुर। राजस्थान आदिवासी महासभा की साधारण सभा की बैठक संस्था के निवर्तमान अध्यक्ष समरथलाल परमार, पर्यवेक्षक शंकरलाल तावड़ की उपस्थिति में हुई। बैठक में राजस्थान आदिवासी महासभा की नवीन कार्यकारिणी विस्तार किया गया। संरक्षक समरथलाल परमार, अध्यक्ष सोमेश्वर मीणा को बनाया। कार्यकारिणी में वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश हिरात, उपाध्यक्ष भीमसिंह मीणा, शंकरलाल तावड़, डॉ. महेन्द्र परमार, महामंत्री चम्पालाल परमार को नियुक्त किया।

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

शोक समाचार

श्री भंवर लाल जी शर्मा सिन्दु वाले निवासी कालाजी गोराजी-उदयपुर का 17 जून को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त धर्म पत्नी श्रीमती ख्याली बाई, पुत्र मनराज शर्मा, पुत्रियां सुमित्रा देवी, राजकुमारी व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र -दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

श्री भेरूलाल जी मालीवाल (82) बामनिया कलां (राजसमंद) वाले निवासी हिरण मगरी सेक्टर-3, विवेक नगर का 22 जून को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र देवेन्द्र कुमार, संजय कुमार व पुत्री लीला काबरा सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती मीठु बाई चपलोत धर्म पत्नी स्व. भंवर लाल जी चपलोत निवासी छीपों का आकोला का मुम्बई में 28 जून को निधन हो गया। वे अपने व्यथित पुत्र पारस, रोशन, शंकर, सुरेश, प्रकाश व दिनेश चपलोत, पुत्री प्रेमलता बडोला सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं। वे अत्यन्त धर्म परायण व गुरूभक्त थीं।

श्रीमती टीपु बाई धर्मपत्नी स्व. रंगलाल जी माण्डोत ताल वाले का, उदयपुर स्थित आदर्श नगर आवास पर 30 जून को संथारा पूर्वक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र विनोद, दिलीप, अशोक व अरूण माण्डोत तथा पुत्र श्रीमती लीला भंडारी, सीता पोरवाड़ व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

श्री धर्म नारायण जी दीक्षित पुत्र स्व. पं. मोहन लाल जी का 1 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रकांता, पुत्र सुनील, अनिल व विनोद, पुत्रियां श्रीमती कुसुम व निशा सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

मेवाड़ ग्रुप ऑफ हॉस्पीटल्स के संस्थापक व प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. मनीष जी छापरवाल का आकस्मिक स्वर्गवास 4 जुलाई को हो गया। उनके निधन पर विभिन्न सामाजिक व राजनैतिक दलों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी डॉ. देवश्री, पुत्र कबीर व रोहान, पुत्रियां प्रार्थना व पलक सहित भाई-बहिनों का सम्पन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती पुष्पलता जी श्रीमाली धर्म पत्नी स्व. हरीशचन्द्र जी श्रीमाली निवासी बड़गांव का 6 जुलाई को अकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र विवेक, पुत्री यशा दवे समेत भाई-भतीजों, जेठ-जेठानियों, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

श्री कृष्णदत जी आमेटा, पूर्व प्राध्यापक आरएनटी मेडिकल कॉलेज का 10 जुलाई को देहावसान हो गया। वे 82 वर्ष के थे। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त धर्म पत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी, पुत्र कपिल व दिलीप, पुत्री डॉ. निधि शर्मा व पौत्र, दोहित्र-दोहित्री का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री नवनीत लाल जी अजारिया का 11 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्म पत्नी श्रीमती हेमलता देवी, पुत्र दीपेश व जयप्रकाश, पुत्रियां श्रीमती कीर्ति व मुनमुन सहित पौत्र- दोहित्र सहित भाई-बहिनों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उघोगपति ठा. शांति सिंह जी चौहान (सोनगरा) का 10 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र हिम्मत सिंह व नरेन्द्र सिंह सहित भाई-बहिनों, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री सतीश कुमार जी मट्ठा का 27 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त धर्म पत्नी श्रीमती आशा मट्ठा, पुत्र वैभव व भावेश मट्ठा, भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों व बहिनों का भरापूरा छोड़ गए हैं।

हस्तरेखाविद् पं. शंकर वल्लभजी दवे उदयपुर का 25 जून को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र डॉ. पंकज दवे, विनीत दवे, भाई-भतीजों व पौत्रों का सम्पन्न-समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

Happy Independence Day

SAH POLYMERS LIMITED

(Manufacturer of HDPE/PP Laminated & Unlaminated Woven Fabric, Sacks and F.I.B.C.)

E-260-261, M.I.A., Madri, Udaipur - 313003
Ph. : 0294-2490242, 2493889, TeleFax : 0294-2490534
E-Mail : info@sahpolymers.com, Website : www.sahpolymers.com

दक्षिणी राजस्थान का एकमात्र
सुपर स्पेश्यिलिटी आई हॉस्पिटल

अलख

अलख नयन

आई हॉस्पिटल
उदयपुर

NABH

दक्षिणी राजस्थान का पहला
NABH Accredited
(मान्यता प्राप्त)

अत्याधुनिक मशीनों द्वारा ऑपरेशन की सुविधा

● मोतियाबिंद ● ग्लूकोमा ● रिफ्रेक्टिव सर्विसेज ● रेटिना ● कॉर्निया
● ओकुलोप्लास्टिक्स ● चाइल्ड आई केयर ● लो विज़न सर्विसेज

उत्तम दृष्टि सबके लिए

24/7 Emergency Services

Quality Vision to all

State-of-the-Art Eye Care Institute

'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

PRAN

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

दी उदयपुर अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड
THE UDAIPUR URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.

Regd. Office : 9C-A, Madhuban, 1st Floor, Udaipur, Rajasthan –313 004 Ph.: 0294-2560783
E-mail : headoffice@uucbudaipur.com Website : www.uucbudaipur.com

50 Golden Jubilee Year

Bank is Celebrating its
Golden Jubilee Year

Facilities Available

- RTGS/NEFT Through **Our Own IFSC**
- NACH Facility
- RuPay Debit Card
- ATMs Debit Card
- SMS Facility
- Aadhar Based Payment Facility
- PM Jeevan Jyoti Beema Yojna
- PM Jeevan Suraksha Beema Yojna
- Mobile Banking
- IMPS

CASH DEPOSIT & PASSBOOK PRINTING KIOSK FACILITY AT SELECTED BRANCHES

Our Branches

Pannadhay Marg	0294 - 2421237	Krishi Upaj Mandi	0294-2481490
Dhanmandi	0294 - 2422276	Sukher Ind. Area	0294-2442708
Bada Bazar	0294 - 2420429	Ambamata Scheme	0294-2430053
Fatehpura	0294 - 2452780	Pratapnagar	0294-2490127
Hiranmagri	0294 - 2460893	Fatehnagar	02955-220316
Madhuban	0294 - 2423542	Salumber	02906-233250
		Rajasamand	02952-224022

Qutbuddin Shaikh
Chief Executive Officer

Fida Hussain Safy
Chairman

Since 1947

अर्चना®

अगरबत्ती

विश्वास पवित्रता का

Scan and get in touch

Clean and green city

Not tested on animals

Save Nature

Charcoal Free

Udaipur | Mumbai | Bangalore

www.archanaagarbatti.com

sales@archanaagarbatti.com

archanaagarbatti

Manufactured and marketed by:
ARCHANA AGARBATTI | NAVBHARAT INDUSTRIES

Registered Office
N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Chauraha,
Khempura, Sunderwas, Udaipur, Rajasthan, India. 313001

अर्चना ग्रुप

डिस्ट्रीब्यूटरशिप हेतु संपर्क करें।
कॉल या Whatsapp करे
+91 9887032555